कहानी संग्रह

बींदणी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

महेन्द्र नैनसिंह

कहानी संग्रह

बींदणी

महेन्द्र नैनसिंह

हरियाणा साहित्य अकादमी के
सौजन्य से प्रकाशित

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

© महेन्द्र नैनसिंह

प्रकाशन वर्ष 2009

प्रकाशक :

स्तुति प्रकाशन, फरीदाबाद

आवरण : महेन्द्र नैनसिंह

शब्द संयोजन : किशोर शर्मा

(पी-74, एसजीएम नगर,

एनआईटी फरीदाबाद)

मुद्रक : आस्था प्रिंट प्रौसेस

3214/ए, सैक्टर-3, फरीदाबाद

मूल्य : एक सौ पचास रुपये केवल

(सभी कहानियाँ काल्पनिक हैं। किसी भी सच्ची घटना एवं पात्रों के नामों का किसी से कोई लेना-देना नहीं है।)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

समर्पित

परम आदरणीय

पिता तुल्य

श्री केवल कृष्ण बहल को

(फरीदाबाद में अदबी माहौल शुरू
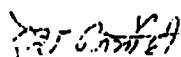
करने वाले प्रमुख समाजसेवी व साहित्य प्रेमी)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्राक्कथन

राज्य में साहित्यिक परिवेश का निर्माण करने तथा नवोदित लेखकों को प्रोत्साहित करने हेतु हरियाणा साहित्यिक अकादमी द्वारा विभिन्न साहित्यिक योजनाएं कार्यान्वित का जा रही हैं। इन योजनाओं में पुस्तक प्रकाशनार्थ साहयातानुदान योजना भी सम्मिलित है। हरियाणा राज्य के जो लेखक हिन्दी एवं हरियाणवी में साहित्य रचना करते हैं, उन्हें अपनी अप्रकाशित पुस्तकों के प्रकाशन के लिए प्रस्तुत योजना के अन्तर्गत आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2008-2009 के दौरान आयोजित पुस्तक प्रकाशनार्थ सहायतानुदान योजना के अन्तर्गत श्री महेन्द्र नैन सिंह की बींदणी शीर्षक पांडुलिपि को अनुदान के लिए स्तरीय पाया गया है।

आशा है सुधी पाठकों द्वारा लेखक के इस सफल प्रयास का स्वागत किया जाएगा।

देश निर्मोही,
निदेशक,
हरियाणा साहित्यिक अकादमी
पंचकुला (हरियाणा)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कहानियाँ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

लंगड़ा ऐलानिया

नाली के ऊपर लगे पत्थर पर हाथ टिकाते हुए लंगड़ा सरक कर दीवार के साथ पीठ लगाकर सट गया। उसकी साँसें तेज चल रहीं थीं। छाती में बलगम भरा होने के कारण उसके मुँह मे घर्र-घर्र की हलकी आवाज निकल रही थी, उसे साँस लेने में भी बेहद तकलीफ हो रही थी। प्यास के मारे बुरा हाल था। दो दिन से उसने कुछ खाया भी नहीं था। पेट पिचक कर रीढ़ की हड्डी के साथ लगा हुआ था।

गली से साईकिल सवार बड़बड़ाता हुआ गुजरा...

''इस उम्र में भी इतनी पी लेते हैं कि रास्ता नहीं चला जाता......''

सुनकर लंगड़े ने कोई विशेष प्रतिक्रिया नहीं दिखाई.... उसका दिल, चेहरा सभी कुछ काफी पहले भावना शून्य हो चुका था। उसने होठों पर जीभ फिराते हुए दरवाजे के नीचे की गली में उतरती सीढ़ियों की ओर देखा...

''कोई थोड़ा सा पानी पिला देता तो राहत मिलती....''

लेकिन वह कुछ कह नहीं सका.... बस अपनी बेबसी पर स्वयं को कोसता रहा.... उसके होठ बुदबुदाये....

''बस अब उठा ले भगवान अब नहीं सहा जाता....'' सोचते-सोचते उसके कानों में छोटी बहू के शब्द गूँजने लगे।

''पता नहीं कब जान छूटेगी, सारा गलियारा थूक-बलगम से भर देते हैं.... कोई निकल नहीं सकता, कितनी बार कहा है.... थोड़ा सरक कर नाली में थूक दीजिये, लेकिन नहीं.... जहाँ थोड़ी सी साफ जगह होगी वहीं थूकेंगे.... और थूकें भी क्यों नहीं.... घर इनका है.... जहाँ चाहेंगे वहाँ थूकेंगे.... सापफ करने के लिए तीन-तीन नौकरानियाँ जो हैं।''

और उसी शाम को छत पर सो रहे बेटे-बहू की बातें उसने सुनी.....

''ऐ जी मुझे तो लगता है बाबूजी से पहले हमारी साँसें रुक जाएंगी। गलियारे में इतनी गन्दगी. इतना थूक बलगम।''

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

लंगड़ा ऐलानिया

"तो क्या करूँ मैं ?" अर्जुन झल्लाया था, "बाप है, इसे उठाकर भी तो नहीं फेंक सकता।"

"मैं ये थोड़ी ही कह रही हूँ.... लेकिन थोड़ा ऐहतियात तो बरतें.... अब देखो रॉकी परसों थूक पर से फिसल गया... वो तो चोट नहीं लगी.... और फिर हर वक्त बुरी तरह खाँसते हैं. ... पता नहीं कोई बीमारी है कि क्या, छोटे-छोटे बच्चे हैं कहीं कोई रोग लग गया तो....? "सुनकर लंगड़े का कलेजा धक्क से रह गया.... उसका जी चाहा कि चीखकर कहे "अरी बहू... मैं वही हूँ जो अर्जुन को टी.बी. हो जाने पर दिन-रात उसे लिए फिरा..... एक पल को अकेला नहीं छोड़ा उसे.... तेरा अर्जुन तो ठीक हो गया लेकिन उसी बीमारी में उसकी माँ चली गई....

लेकिन वह चीख नहीं सका..., उसके आँखों की कोरें जरूर गीली हो गईं थीं।

उसके दूसरे ही दिन उसने सुना कालू बलहारिन स्टेशन वाले कुंऐ में डूबकर मर गया.... वह स्तब्ध रह गया.... कालू उसका सबसे अच्छा दोस्त था। दोनों साथ पढ़े थे। लंगड़े ने पाँचवी के बाद स्कूल छोड़ दिया था मगर कालू.... पढ़-लिखकर कलकत्ते चला गया।

लंगड़े को पिता के साथ ऐलानिया बनना पड़ा। ऐलानिया का काम उसे अच्छा लगता था.... लगता भी क्यों नहीं ढोलक की थापों के बाद जब वह "सुनो...सुनो....सुनो" कहता तो राह चलते हर आदमी का ध्यान उसकी ओर हो जाता... बच्चे...बूढ़े...नौजवान सभी उसकी बातों को ध्यान से सुनते....

"सुनो... सुनो.... सुनो हर खास-ओ-आम को इत्तला की जाती है कि आज शाम तीन बजे ठाकुरों की चौपाल पर पंचायत होगी "

सुनते ही लोगों में कानाफूसी होने लगती, लोग उसके पास जमा होने लगते कि क्या बात हुई....? पंचायत किस कारण हो रही है...? पंचायत बुला कौन रहा है...? सभी उससे जानना चाहते थे लेकिन वह आगे बढ़ जाता। फिर से ढोलक पर थापों के बाद सुनो...सुनो...सुनो...। लंगड़े का बाप बदरी पढ़ा-लिखा नहीं था... किसी भी छोटी से छोटी बात का ऐलान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

करवाना होता तो बदरी को वह बात दो-तीन बार बताई जाती, यदि बड़ा ऐलान करना होता तो बदरी आठ-दस या ज्यादा बार भी ऐलान को मन ही मन दोहराता। मगर लंगड़ा तो पाँचवी पास था... ऐलानिये का काम, लंगड़े ने बखूबी संभाल लिया... बदलते समाज और बदलते दौर के चलते उसका गाँव कम्पलैक्स में आ गया। कुछ सालों में गाँव की काया पलट गई... उन्हीं दिनों कालू कलकत्ते से आया... और उसने लंगड़े की जिन्दगी बदल दी, वह लंगड़े को अपने साथ बाजार ले गया.... शहर का बाजार... रेडियो की दुकान... बात कालू ने ही की... गारन्टी भी ली और लंगड़ा लाउडिस्पीकर लिए गाँव लौटा... अब जब भी ऐलान करना होता... गले में बैटरी वाला छोटा लाउडिस्पीकर टांगे... वह बोलता.... "सुनो... सुनो.. सुनो... कल खैरपुर के शिव मन्दिर के अहाते में भगवान हनुमान की एक विशाल मूर्ति की स्थापना के उपलक्ष्य में विशाल भण्डारे का आयोजन किया जा रहा है... हर बच्चे-बूढ़े... जवान... माताओं... बहनों... बेटियों से खैरपुर के शिव मन्दिर में मूर्ति स्थापना पर पहुँचने का अनुरोध किया जाता है कि भण्डारे में प्रसाद ग्रहण करें" यह ऐलान उसने आसपास के दस गाँवों में किया था।

लंगड़े का काम, उसकी पहचान बढ़ती गई... चुनावों में लगभग एक महीने तक दम लेने की फुरसत नहीं होती थी और एक दिन शहर उसके गाँवों को निगल गया...। कालू की मदद से उसने शहर में एक दुकान किराये पर ली, बड़े लाउडस्पीकर खरीदे। गानों के कई तये और मशीन खरीदी... भरे बाजार में उसकी दुकान पर लगा बोर्ड सभी को आकर्षित करता... लंगड़ा ऐलानिया... प्रोपराइटर बद्रीनाथ ऐलानिया... सोनमाजरे वाला।

सोन माजरा पहले जैसा गाँव नहीं रहा था, अब तीन-तीन मंजिलों वाले पक्के मकान.... कोलतार की सड़कें,सीवरलाइन..... वाटर सप्लाई सबकुछ आ गई थी। वह एक ऐलान कर लौटता तो उसके पिता बदरी के पास बैठा दूसरा ग्राहक इन्तजार कर रहा होता। कभी-कभी उसका बूढ़ा पिता भी ऐलान पर निकलता। बाप का काम पर निकलना उसे अच्छा नहीं लगता था। वह मना करता लेकिन बदरी हँसकर कहता "सूरज पैसा मिल रहा न बेटा... और ग्राहक बहुत परेशान है... इसका बाप न जाने कहाँ चला गया है, बहुत बूढ़ा है... दिमाग भी चल गया है उसका.... शहर में कहीं रास्ता भूल गया होगा.... जिद्द करके सब्जी लेने गया था... लौटा ही नहीं.... पूरी रात गुजर गई.... उसका बेटा दोपहर से दुकान पर बैठा है ऐलान के लिए।"

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

लंगड़ा ऐलानिया

लंगड़े ने कागज पढ़ा.... लिखा था....

"एक बूढ़ा आदमी, उम्र अस्सी साल.... याददाश्त काफी कमजोर... काली बंडी और खाकी पेंट पहने कल शाम से लापता है, जिस भी भाई को मिले वह सांई मोहल्ले के वैष्णों मंदिर में या राम धर्मकाँटे पर पहुंचाने का कष्ट करें।"

उसने पढ़ा... तो बदरी बोला....

"बेटा सूरज मैं ऐलान करने जाऊँगा... हो सकता है मुझे मिल भी जाये... राम धर्मकांटे वाले का बाप है... मैंने उसे दो-तीन बार देखा भी है, शायद उसे पहचान लूँ।" बाप की जिद्द के आगे लंगड़े की एक न चली...

"और सुन सूरज..." बदरी ने कहा तो लंगड़ा पलटा.... "क्या बाबा ?"

"वो जो परसों, तीन दिन मे खोई बच्ची हमने ढूँढ कर दी थी... उसका बाप आया था... ये मिठाई का डिब्बा दे गया है. .. मैंने तो बहुत मना किया लेकिन माना नहीं, सौ रुपए भी दे गया है... कह रहा था मेरी बेटी जान है मेरी, लंगड़े ने ढूँढकर दी... भगवान उसे लम्बी उम्र दे...।"

"लम्बी उम्र...." सोचते-सोचते लंगड़े के गले में कुछ अटक सा गया.... "कितनी दुखदाई होती है ये लम्बी उम्र" लंगड़े को तेज खाँसी उठी.... खाँसते-खाँसते उसका बदन दोहरा हो गया... छाती में तेज टीस उठी....

"पानी पिओगे बाबा ?" किसी ने कहा तो लंगड़े ने आँखे खोली और झपटकर हाथ से मुँह के पास चुल्लू बना लिया और पानी पीने लगा....। वह औरत पानी पिलाकर चली गई। खाली पेट पानी पीने से उसके पेट में दर्द उठने लगा था। कुछ देर बाद एक दस-बारह साल का लड़का हाथों में रोटी लेकर आया...लो बाबा लंगड़े ने काँपते हाथों से रोटी पकड़ी, रोटी थोड़ी सख्त थी, उसने रोटी के किनारे तोड़े और पास ही नाली के ऊपर रखे पत्थर पर रख दिये, बाकी रोटी जो ऊपर रखी सब्जी के कारण भीगकर-गलकर नर्म हो गई थी वह जल्दी-जल्दी खा गया. .... अब उसे काफी राहत महसूस हुई। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे. ... "भगवान तुम्हें सबकुछ दे मेरे बच्चों... पर लम्बी उम्र ना दे" दुआऐं देते हुए दीवार के सहारे बैठा लंगड़ा एक बार फिर यादों में डूब गया। एक बार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

लंगड़ा ऐलानिया

शाम को ऐलान करके लौटा, तो दुकान पर कालू बैठा था....

बदरी बोला.... "ले ये आ गया तेरा यार... ले जा इसे, कुछ दिन ये भी कलकत्ते घूम आयेगा"

सुनकर वह चौंका, उसका चेहरा देखकर बदरी बोला, "सूरज मैं यहाँ सम्भाल लूँगा सबकुछ और फिर एक हफ्ते की ही तो बात है... ये ही घूमने की उम्र है.... चला जा।"

बाप और कालू के आगे उसकी एक न चली। वह कालू के साथ कलकत्ते चला गया...

और कलकत्ते में आकर उसे पता चला कि कालू का नाम कालीचरण है और वहीं उसे पता चला कि कालीचरण उसकी शादी कराने यहाँ लाया है.... चार दिन बाद उसकी शादी भी हो गई। उसकी पत्नी दुर्गा.... कालीचरण के यहाँ बरतन मांजने वाली एक गरीब विधवा औरत की लड़की थी।

हफ्ते बाद लंगड़ा दुर्गा को साथ लेकर सोनमाजरे आ गया, दुर्गा को पाकर लंगड़े की जिन्दगी बदल गई। दुर्गा सेवा-सत्कार करने वाली लड़की थी। उसके पिता बदरी की तो वह बहुत सेवा करती थी..... बदरी और दुर्गा में बाप-बेटी के से सम्बंध बन गए... बदरी दुर्गा को हिन्दी सिखाता और दुर्गा उसे बंगला सिखाती... महेश का जन्म हुआ.... रमेश का जन्म हुआ... फिर अर्जुन जन्मा... भगवान ने लंगड़े को वो सब दिया जिसकी कल्पना भी उसने कभी नहीं की थी। खुद नहीं पढ़ा था तो क्या हुआ... बेटों को पढ़ाया उसने। बड़ा बेटा अच्छी नौकरी लग गया, छोटे ने इलैक्ट्रोनिक्स की दुकान खोली, मंझले रमेश ने ऐलानिया का काम सम्भाल लिया, सभी के शादी-विवाह से पहले ही दुर्गा तो चल बसी... लेकिन वह लंगड़े के खाली जीवन को रंगों से जरूर भर गई। फिर भी दिल के एक कोने में कसक सी तो महसूस करता ही था। कभी-कभी वह दुर्गा की फोटो के सामने खड़ा होता...

"देख रही है न दुर्गा, तेरी फुलवारी में कितने फूल खिल गए.... पूरे पाँच पोते-पोतियाँ.... तू होती तो..." वह अपनी आँखों से आंसू पौंछता.. "तेरी बहुत याद आती है दुर्गा। बस दुख तब होता है जब ये बहुऐं आपस में लड़तीं हैं। इनकी लड़ाई कैसे सुलझेगी.... बड़ी बहू कहती है कि दो दुकानों में हमारा भी हिस्सा है। अब तू ही बता महेश अच्छा कमाता है, उसे दुकान की क्या

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जरूरत है.... दो बेटों के लिए दो दुकानें हैं, तीनों का अच्छा गुजर बसर हो रहा है, मगर बीच में हिस्सा आता है, क्या करूँ मैं ? तुम होती तो थोड़ी और हिम्मत कर तीसरी दुकान भी खरीद लेता.... इनका हिस्से वाला झंझट तो खतम हो जाता, पर अब भी क्या कम है ? मन में सबर-सन्तोष होना चाहिए। मगर सबर-सन्तोष है किसे....? अर्जुन ने इलैक्ट्रोनिक्स की दुकान के साथ-साथ डीजे का काम शुरू किया तो रमेश ने ऐलानिया के साथ-साथ बिल्डिंग मैटीरियल का काम कर लिया। तूने और मैंने मिलकर दुकान के सामने जो नीम का पेड़ लगाया था वो तो रमेश ने कटवा दिया कि मैटीरियल में पत्ते तिनके मिल जाते हैं, माल खराब होता है। इनका झगड़ा कभी रुकता नहीं। अर्जुन कहता है कि इलैक्ट्रोनिक्स का सामान डस्ट, रेत की धूल से खराब होता है। इस काम को बन्द कर दे। मैं देखता रहता हूँ दुर्गा चाय की दुकान पर बैठा बेबस। एक दिन रमेश बोला..... "बाबा इतनी चाय मत पिया करो.... हाजमा खराब होता है और फिर पिछले महीने दो सौ रुपए का बिल था, मेरे पास पेड़ नहीं है पैसों का.... पूरे दिन गला फाड़कर चिल्लाता हूँ और ग्राहक सौ दो सौ रुपए में कारूँ का खजाना ढुंढवाता है. .. फिर आजकल लोग ऐलानिये से काम न करवाकर टीवी-केबल पर ऐलान करवा देते हैं। मंदिर-गुरूद्वारे से आवाज लगवा लेते हैं। पुलिस वाले अलग कानून बताते हैं कि लाउडिस्पीकर धजाना बन्द है। बोलना है तो बोलो पर वाल्यूम कम रखो।"

"क्या करूँ दुर्गा मैं तो सिर्फ वक्त बिताने के लिए दुकानों के आसपास बैठा रहता हूँ। ये दोनों किसी काम के लिए बाहर जाते हैं तो मुझे दुकान पर बैठा जाते हैं वरना हर वक्त काम में कोई ध्यान नहीं। यार-दोस्तों का झंझट। पिछले महीने रमेश के गल्ले से दो हजार रुपए गायब हो गए... वह मुझसे कुछ बोला तो नहीं लेकिन मेरी ओर ऐसे देख रहा था जैसे चोर मैं हूँ...."

"तूने ठीक किया दुर्गा, तू चली गई.... ये दिन देखती तो दुख होता तुझे... फिर भी सब खुश हैं... मेरा क्या.... अभी तक तो रोटी मिल रही है दुर्गा... अब बासी सब्जी-रोटी हमने अपने बच्चों को कभी नहीं खिलाई, उन्हें आदत नहीं है, मेरा क्या मैं तो पहले भी खा लेता था, अब भी खा लेता हूँ। पर अब चबती नहीं दुर्गा....! पर मैं खा लेता हूँ.... पानी में भिगो-भिगोकर। तू

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तो भगवान यहाँ मजे में होगी दुर्गा। भगवान को बोल न, मुझे भी बुला ले. ... पड़ा रहूंगा एक कोने में मैं भी'' कहते-कहते वह फफक कर रो पड़ता, फिर खाँसने लगता।

''और आज तो तेरा कालीचरण साहब भी मर गया। वो स्टेशन वाले कुऐ में डूबकर। मैंने देखा था दुर्गा....! उसके बेटे-बहू कैसे आँखों में घूंसे घुसा-घुसा रोए थे.... कह रहे थे ''दिमाग चल गया था वाबूजी का''...... पर कालू कल शाम को मिला था, मुझसे बोला... ''अच्छा यार सूरज चलता हूँ..... जिन्दगी रही तो फिर मिलूँगा...'' मार दिया उन्होंने मेरे यार को....। जाते-जाते भी हंसा था कालू.... कहता था ''यार मुझे सही ढ़ंग से दिखाई तो देता नहीं.... दो कदम चलता हूँ तो हाँफने लगता हूँ और मैं उस पर बुरी नजर रखूँगा..! अपनी बहू पर ! क्या इस दिन के लिए लाया था इसे ?'' मैंने हैरानी से उसे देखा, कालू फफककर रो पड़ा था, ''ये मैं नहीं... वो कहती है यार! और मैंने अपने बेटे को कहते सुना, ''कि तू चिन्ता मत कर, मैं बाबू जी से बात करूँगा... अब तू बता सूरज, वो..... वो क्या बात करेगा मुझसे ? और मैं क्या जवाब दूँगा उसे.... ? कई बार तो कह चुका हूँ कि बेटा मेरे मोतिये का आपरेशन तो करा दे, कहते-कहते वह चल दिया।''

''कालू अब कहाँ जा रहा है ?''

''कहाँ जाऊँगा यार ? वो स्टेशन वाले कुऐं तक जा रहा हूँ घूमते-घूमते, जिसमें पिछले साल गूगा पहलवान डूबकर मरा था।''

सोचते-सोचते लंगड़े ने आँखों से गालों तक ढ़लक आये आँसुओं को हथेलियों से पौंछा।

''तुम कौन हो बाबा ?'' उसने सुना, एक आदमी उससे पूछ रहा था... लंगड़ा सोचने लगा.... कौन हूँ मैं! था कभी.... पर आज........!

''कहाँ रहते हो ?'' उस आदमी ने फिर पूछा

''मुझे नहीं मालून बेटा'' कहते-कहते लंगड़े की आवाज काँप रही थी......

''तुम्हारे कोई है...., कोई बेटा... बहू..... ?''

''था... बेटा... सबकुछ था, पर अब !''

''ऐसा है बाबा....!'' उस आदमी ने कहा.... ''आप यहाँ से जाईये....।''

लंगड़े ने अपनी भीगी आँखों से उस आदमी को देखा.... ''इस गली में

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

या किसी घर के सामने तुम्हें कुछ हो-हवा गया तो पुलिस खामखां, हमें तंग करेगी....।"

सुनकर लंगड़ा सन्न रह गया.....

"यहाँ से जाईये बाबा..... आप कहें तो आपको छोड़ आऊँ।"

"कहाँ ?"

"कहीं भी... जहाँ आप कहें ?"

"मैं चला जाऊँगा बेटा..." कहते हुए उसने उठने की कोशिश की,..... वह कहीं भी..... कहीं नहीं है। उसने सोचा. वह कहीं जा नहीं सका था इसीलिए तो मझली बहू घर छोड़कर चली गई। शाम को ही बेटे-बहू में लड़ाई हुई थी। बहू चीख रही थी....

"बाकी दो भाई तो एक वक्त का खाना.... चाय देकर छूट जाते हैं और हम इन्हें खाना भी दें..... रैंट, खंखार, बलगम, थूक भी साफ करें। इनकी खाँसी के चलते, न हमें दिन को चैन है न रात को.... बात बनाना आसान है कि तिहाई खाना खर्चा देते हैं.... हमारे यहाँ रहते हैं तो रजाई तो हमें ही बनवाकर देनी पड़ी थी। बिछावन के लिए गन्दी-गली हुई गूदड़ी दे दी. ... कोई देखेगा, वो हमसे ही कहेगा.... और भी तो दो बेटे हैं, कुछ-कुछ दिनों के लिए उनके यहाँ जाकर क्यों नहीं रहते। हमारी ही छाती लोहे की समझ रखी है।"

"समझा कर नैना" अर्जुन ने कुछ कहना चाहा,

"क्या सब कुछ हमें ही समझना होगा.... दूसरे क्यों नहीं समझते.....? उनका भी तो बाप है... ये गन्दगी साफ करने के फर्ज उनके भी तो बनते हैं"?"

"ठीक है, ठीक है मैं कल बात करूँगा उनसे।"

"तुम कभी बात नहीं करोगे, मैंने पहले भी कई बार कहा है तुमसे। मैं जा रही हूँ अपने बच्चों को लेकर..... जब इस आफत से छुटकारा पा लो, तो आ जाना मुझे लेने।"

"नैना बात सुन.... कोई सुनेगा तो क्या कहेगा ?"

"जब हमारी परवाह किसी को नहीं, तो मैं किसी की परवाह क्यों करूँ. .... और तुम भी मजे से रहो अपने बाप के साथ, तुम्हारे लिए अलग से बहुत कुछ किया है न उन्होंने।"

"नैना.... मेरा बाप तेरा भी तो कुछ लगता है ?"

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

लंगड़ा ऐलानिया

''लगता है....., इतने दिनों तक किया नहीं क्या? इन्हें कोई तकलीफ होने दी हो तो मेरी गलती। अब नहीं होता मुझसे.. खुद तो दुकान पर चले जाते हो,यहाँ पूरे दिन गन्दगी खाँसी के बीच नर्क में मैं...., नैना पानी दे बेटा... नैना चाय बनी कि नहीं....? अब गरम पानी दो.... अब चारपाई थोड़ी छाया में सरका दो, अब नहीं होता मुझसे''

और नैना चली गई।

सब कुछ समझ रहा था लंगड़ा.... वह भी रुक नहीं सका। रात में जैसे-तैसे उठकर एक ओर चल दिया। कहाँ ? उसे खुद पता नहीं था... जा तो स्टेशन वाले कुऐं की तरफ रहा था, जिसके बारे में मशहूर था कि वह हर साल एक बलि लेता है..... लेकिन.... यह तो स्टेशन की तरफ जाने वाला रास्ता नहीं था.... फिर भी वह बढ़ता गया। उसका दिल किया कि उस आदमी से पूछे.... कि स्टेशन का रास्ता कौन सा है.... आदमी ने उसे सहारा देकर खड़ा किया.... भूखा पेट और कमजोरी के कारण उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया... वह गिर जाता, अगर वह आदमी उसे सम्भाल नहीं लेता..। कुछ देर बार सम्भलकर लंगड़ा बोला....

''बस बेटा.... मैं चला जाऊँगा अब.....''

''सुनो, सुनो, सुनो'' अचानक लाउडिस्पीकर पर उसे रमेश की आवाज सुनाई पड़ी.... वह चौंका ''एक बूढ़ा.... लाल-पीली पट्टियों वाली बनियान और सफेद पैजामा पहने.... दो दिनों से लापता है'' सुनकर लंगड़े की आँखें छलक गई...''

''मेरा रमेश...., मेरा बेटा, ढूँढ रहा है मुझे।'' वह तेजी से लहराते हुए गली से कोलतार वाली सड़क की ओर बढ़ा। साथ चलते आदमी ने भी सुना. ... उसने लंगड़े की लाल-पीली पट्टियों वाली बनियान और पैजामे की ओर देखा....।

''उसका नाम....'' लाउडिस्पीकर पर रमेश की आवाज गूँजी, ''रज्जाक है, जिस किसी भाई को मिले....

सुनकर लंगड़े का कलेजा बैठ गया, इससे आगे उसे कुछ सुनाई नहीं दिया. ... लाउडस्पीकर पर आवाज आ रही थी... रमेश ऐलानिया.... नेताजी नगर, सब्जी मण्डी पर इत्तला दें या पहुँचाने का कष्ट करें।''

लँगड़ा वहीं गली के बीच बैठता चलता गया, उसके होठों से कुछ अस्पष्ट सी बुदबुदाहट निकल रही थी

''जो.... जो.. जो आदमी... सारी उम्र... दूसरों को ढूँढता रहा, आज...

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

. आज... वह लंगड़ा ऐलानिया खुद खो गया... खो गया.... खुद खो गया लंगड़ा ऐलानिया..."

उसने अपना चेहरा... घुटनों में छिपा लिया और फफक कर रो पड़ा।

+++

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

समझदारी

रोड़ियों के ढेर के पास बने चार ईंटों के डाक पर मंजरी ने अपना खाली तसला रख दिया। बदलू हाथ में फावड़ा लिये हुए खड़ा था। अपनी ओढ़नी से धूल झाड़ते हुए मंजरी ने बदलू की ओर देखा। बदलू ने भी उसे प्यार भरी प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

"तो फिर क्या सोचा तूने....?" उसने पूछा

"सोच लिया मैंने.......... तू तसला भर...!" मंजरी ने अपना एक हाथ कमर पर रखकर दूसरे हाथ की उंगली से डाक पर रखे खाली तसले की ओर इशारा किया।

"खाली तसला ही भरवाती रहेगी..... अपनी खाली माँग भरवाने की भी तो बात कर ?"

"ऐ ज्यास्ती बात नहीं कर !" मंजरी बदलू को उँगली दिखाते हुए बोली "मैंने तेरी लुगाई नहीं बनना है।"

सुनकर बदलू कुछ नहीं बोला, वह देख रहा था कि सामने से झुलनी खाली तसला लिए आ रही थी। उसने मंजरी के तसले में फावड़े से रोड़ी भर दी और फिर झुलनी की ओर देखने लगा।

"उँचा अब...." मंजरी बोली

बदलू ने तसला उठाकर मंजरी के सिर पर रख दिया और मंजरी तसला लेकर चल दी, झुलनी ने आकर अपना खाली तसला डाक पर रखा। बदलू फावड़े से तसले में रोड़ी भरता हुआ झुलनी से बोला

"ऐ झुलनी..... समझा न अपनी सहेली को, मेरी लुगाई बनने से मना कर रही है"

"समझा दूँगी.... तू तसला उँचा.......ठेकेदार देख रहा है"

बदलू ने तसला उठाकर झुलनी के सिर पर रख दिया

"तू इतनी बीड़ी पीता है, मुँह जाजरू की तरह बासता है तेरा, लुगाई चाहिए तो सबसे पहले बीड़ी छोड़ दे" झुलनी ने

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

चलते हुए कहा था

''छोड़ दूँगा.... कसम से'' बदलू ने अपने कंठ को पकड़ते हुए थोड़ा जोर से कहा था।

''ठीक है तब... समझाउँगी मैं उसे.... और अगर वो नहीं समझेगी तो मैं बन जाउंगी तेरी लुगाई'' कहते हुए हँसी थी झुलनी।

उसने तेजी से कदम बढ़ाए और आगे जाती मंजरी के नजदीक आ ली।

''ऐ मंजरी... क्यों मना कर रही है री बदलू को....? देख, चोखी काठी का है और मेहनती है, कमाउ है, दारू भी नहीं पीता..... और कैसा मरद चाहिए री तुझे.......?''

''सिफारशी बनकर आई है तू उसकी !'' मंजरी ने ताना मारा

''अरी नहीं री...... मैं तो तेरी सहेली हूँ...''

''तो सुन, अकेला कमाउ है अपने कुणवे में.... माना कि चोखी काठी का है, मेहनती है और हर लुगाई को ऐसा ही मरद चाहिए, पर झुलनी इसकी तीन बहनें हैं.... उनकी शादी-सगाई. ... लेना-देना.... छूछक-भात. सारी जिनगी जिम्मेदारी और खर्चा.... फिर कल को अपने भी बच्चे होंगे तो कलह-झगड़े. ... सखी, आज अगर इसकी काठी देखूँगी तो कल मेरी काठी झुक जाएगी।''

सुनकर झुलनी.... मुँह बाये देखती रह गई थी मंजरी को.....

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्रपोज

अर्पणा सोफे में अधलेटी सी, भुने हुए काजू खाती हुई काफी देर से बीमा एजेन्ट का इन्तजार कर रही थी। अचानक कालबेल बज उठी। उसने उठकर पाँवों में स्लीपर डाले.... और दरवाजा खोला.... फिर मैन गेट पर पहुँची.... मैन गेट के पास खड़े व्यक्ति को देखकर वह चौंकी।

घनी दाढ़ी और भारी देह वाला व्यक्ति सचमुच विवेक था. ... चौंका विवेक भी।

दोनों के मुँह से लगभग एक ही समय निकला.....

"आप...!"

"इतने दिनों बाद अचानक" कहा अर्पणा ने "अन्दर आईये ना...।" उसने गेट खोलते हुए कहा। विवेक हँसता हुआ अन्दर आ गया।

"अचानक यहाँ... इस तरह मिलोगी... सोचा नहीं था" वह बोला।

"पहले अन्दर आओ.... सोचना बाद में", अर्पणा ने हंसते हुए कहा... दोनों अन्दर आये....

"बैठो !" अर्पणा ने सोफे की ओर इशारा किया, विवेक सोफे पर बैठ गया

"क्या लोगे.... ठण्डा या गर्म"

तकल्लुफ नहीं..... पहले बैठो तुम.... बहुत दिन हो गए तुम्हें देखे... पहले तुम्हें नजर भरकर देख तो लूँ...." कहते हुए विवेक अपनी चिर-परिचित हंसी में हंसा, उसकी बात पर झेंप गई अर्पणा

"तुम भी न.... बिल्कुल नहीं बदले !"

"तुम्हें याद है अर्पणा... मैं अक्सर कहा करता था कि..." कहा उसने तो अर्पणा बोली "हाँ याद है.... औरत कितनी भी कोशिश कर ले, आदमी कभी नहीं बदलता..... उसको बदलने की कोशिश में औरत बदल जाती है" कहते हुए मुस्कराई वह

"लेकिन तुम भी नहीं बदली.... वैसे ही मुस्कराती हो आज भी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्रपोज

''हिस्ट !'' कहते हुए वह झेंप गई...'' मैं कुछ लाती हूँ'

''फिर तकल्लुफ ?''

''तकल्लुफ ही सही.... बताओ क्या लाऊँ ?''

''अगर तुम जिद्द ही कर रही हो तो गरम-गरम सरसों का साग और बाजरे की तीन-चार रोटी....'' वह संजीदा सा बना कह रहा था.... और हाँ एक बड़ा गिलास लस्सी का भी.... रोटियों के साथ थोड़ी राब मिल जाए तो.....!

अर्पणा हैरान परेशान देखती रही उसे।

''मजाक कर रहे हो न ?''

''नहीं..... मजाक कर रहा हूँ '' कहते हुए वह फिर हँसा ''क्या अर्पणा.... कुछ लाऊँ...? क्या लाऊँ ? अरे तुम सामने हो तो फिर मुझे किसी चीज की जरूरत रही क्या ?''

''हिस्ट !'' वह फिर झेंपी

''अच्छा.... थोड़ी सी चाय !..... लेकिन....''

''लेकिन क्या ?'' उसने हैरानी से विवेक को देखा

''लेकिन इतनी थोड़ी भी नहीं चाहिए कि ?''

''जानती हूँ.... कम से कम इतनी.... कि मजा तो आये लड़ाई का....'' अर्पणा ने हँसते हुए कहा ''मगर शक्कर ?''

''डाल देना दिल खोलकर !''

''अभी तक भी उतनी ही मीठी चाय पीते हो ?''

''अब कहाँ उतनी मीठी पीता हूँ, अब तो थोड़ा और ज्यादा मीठी पीनी पड़ती है'' कहते हुए फिर जोरों से हँसा वह, ''जाओ न चाय बनाकर लाओ तुम.... तुम... तुम''

''तुम..तुम... क्या ?''

''सॉरी आप.... मेरा मतलब आप बनाना चाय... कहीं नौकर या नौकरानी से...''

''कोई नौकर या नौकरानी नहीं है यहाँ ?''

''कमाल है ?'' विवेक ने चौंकते हुए कहा ''तब क्या घर का काम पति से करानी हो...छि....अर्पणा बुरी बात. मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी.... खाना पकाना, बरतन साफ करना..... पोंचा लगाना तो औरतों के काम हैं और तुम... सॉरी आप...''

''मेरी बात तो सुनो''

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्रपोज

''क्या सुनूं अर्पणा'' कहते हुए विवेक खड़ा हो गया, ''अब सुनने को रह ही क्या गया है, होगी तुम नारी शक्ति की हिमायती... किंतु इतनी... मैं सोच भी नहीं सकता था... मैं..मैं चलता हूँ जहाँ पुरुष का इतना अपमान हो.....''

''शटअप.... यू जस्ट शटअप....'' चीखी अर्पणा

''ओवर ऐक्टिंग मत करो.... बैठो चुपचाप ! मैंने कहा बैठो'' फिर कहा अर्पणा ने ''और सुनो तुम.... मैंने शादी नहीं की है'' कहते हुए अर्पणा रसोई की ओर चल दी।

''मुझे पता है'' कहते हुए विवेक सोफे पर बैठ गया

''क्या पता है ?'' अर्पणा ने मुड़ते हुए पूछा

''तुम इतनी बड़ी बेवकूफी नहीं करोगी''

सुनकर चुप रह गई अर्पणा'' वह वापिस रसोई की ओर चल दी, सोच रही थी... सच ही तो है, कभी खुद मैंने ही तो कहा था विवेक से कि मैं बेवकूफ नहीं हूँ जो सबकुछ जानते-पूछते हुए भी शादी करूँ। पूरे दिन काम..... रोटी-सब्जी बनाओ.... बरतन धोओ, कपड़े साफ करो.... झाड़ू-पोछा....बच्चे सम्भालो... आदमी की गुलामी करो.... और कभी भी अगर अपनी मर्जी से कुछ कर दिया या कोई नुकसान हो गया तो उसकी मार भी खाओ, आफिस में झाड़ खाकर आयेगा, आकर गुस्सा पत्नी पर निकालेगा....''

सुनकर हँसा था विवेक, लेकिन पता नहीं किसी बात को सीरियस कभी नहीं लिया उसने, हर समय, हर बात पर मसखरी, मुस्कराहट, हँसी...ठहाके। बोला वह

''तुम्हारे विचार वाकई क्रांतिपूर्ण हैं.... नारी क्यों सहे... आखिर नारी ही क्यों सहे..! लगी रहो.... तुम्हें संघर्ष करना चाहिए.... क्रांति की अलख जगानी चाहिए, आज की नारी जागरुक है... वह हर वो काम कर सकती है जो आदमी कर सकता है, अलबत्ता आदमी उस काम को नहीं कर सकता जो औरत कर सकती है... आदमी क्या है, बस ऊपर ही ऊपर की हुंकार है... चन्द्रमा पर राकेट डाल दिया उसने... हजारों मीटर ड्रिलिंग कर मिट्टी और पत्थर का तेल.... मेरा मतलब पैट्रोल निकाल लिया उसने.... हवाई जहाज, कंप्यूटर बना डाले। देशों

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

को जीतता है, लड़ता है, एक से एक साहसिक कारनामे करता है, किन्तु गर्व से कहता है कि सूई में धागा डालना उसके बस का नहीं है।"

"ऐ विवेक टाँग तो नहीं खींच रहे हो ना ?"

"अरे मेरे बाप की तौबा, मैं तो दिल से नारी शक्ति का आदर करता हूँ, सम्मान करता हूँ, नतमस्तक होता हूँ" कहकर विवेक हाथ जोड़कर झुका था अर्पणा के सामने।

"हे नारी जी तुम अद्धा हो !"

"अद्धा हो !" सुनकर चौंकी अर्पणा

"ओह ! सॉरी.... मेरा मतलब श्रद्धा हो !"

अर्पणा ने मुँह बिचकाया... "तुम नहीं सुधरोगे"

"क्या मैं बिगड़ा हुआ हूँ ?"

"बहुत ज्यादा"

"तब तो कोशिश करना भी बेकार है सुधरने की...."

सोचते हुए अर्पणा रसोई में आई, उसने गैस चलाकर चाय का पानी चढ़ा दिया

कितना पसन्द करती थी वह विवेक को... इतना खुशदिल, मस्त हर बात में हँसी-ठहाके.... जिंदादिली की मिसाल....

कभी-कभी कितना अच्छा बोलता था नारी शक्ति पर, कहता... अब नर और नारी दो शब्दों को ही लीजिए, नर से भारी नारी होती है उसमें दो मात्राऐं भी हैं। बाईबल के अनुसार ईश्वर ने पुरुष की दो अस्थियों से नारी को बनाया था, अब विज्ञान के अनुसार नारी में अस्थियों की संख्या दो सौ पाँच है और पुरुष बेचारा दो सौ तीन हड्डियों पर ही काम चला रहा है.... कहते-कहते मजाक के मूंड में उतर आता... तुम लड़ो अर्पणा अपनी लड़ाई... वैसे आदमी बेचारे ने तुम्हें अपनी दो अस्थियाँ क्या दे दी.... तुम लोगों की डिमाण्ड ही खत्म होने में नहीं आती.... लड़ो तुम अपनी लड़ाई.... अधिकारों की मांग करो... तुम्हारे हर अधिकार में भला अन्त में पुरुषों का ही होना... तुम्हारे हाथ कुछ नहीं आने का.... माना आज नारी वे सारे काम कर सकती है जो पुरुष कर सकता है.... मेरा मतलब नौकरी... अरे क्या जरूरत थी.... आराम से घर बैठती.... ठाठ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

से रोटी खाओ.... बच्चे पालो... और साले आदमी की छाती पर मूँग दलो...। बाहर निकलकर क्या पाओगी...? नौकरी.... सुबह-शाम की भागदौड़, ट्रेन, बसों में धक्का-मुक्की, ऑफिस. .. वर्कप्लेस पर अफसर की किचकिच.... एक पैसा भी अपने ऊपर खर्च नहीं कर सकती.... दो मिनट घर लेट नहीं हो सकती.... हर समय टेंशन.... हार्ट अटैक जैसे रोगों को पाल लोगी तुम लोग.., मान लिया तुम नारियों में आगे निकलने का मादा है, होगा क्यों नहीं भगवान ने तुम लोगों को हमारी ही दो हड्डियों से बनाया है।''

अर्पणा हँसती.... ''ओ विवेक, नारी सारी दुनिया से जीत सकती है पर तुमसे नहीं...''

''मुझसे जीतना है ?'' वह गम्भीर हो गया ''ठीक है, अपने से जीतने का तरीका मैं बताता हूँ तुम्हें।''

''क्या ?'' अर्पणा मुँह बाये देखने लगी

''लेकिन एक बात याद रखना..... भीष्म पितामह ने अर्जुन को अपने को मारने के लिए तरीका बताया था, तो भी भीष्म मरा अपनी मर्जी से ही था..... बस तरीका बताकर भीष्म युद्ध से हट जरूर गये थे।''

''तुम बोलो तो ?''

''मुझसे जीतने का तरीका यह है कि मुझसे शादी कर लो''

''क्या ?'' अवाक सी देखती रह गई अर्पणा....''वाह! वाह! क्या तरीका है प्रपोज करने का!''

''एक और तरीका है प्रपोज करने का ?''

''उसे भी कहो'' कहते हुए मुस्कराई वह

''तुम लड़कियों के साथ मुशकिल यह है कि तुम लोग एक जनम के रिश्ते में विश्वास नहीं रखती।''

''मतलब ?''

''मतलब यह कि सात जन्मों के लिए पति ढूंढती हो ?''

''इसमें बुरा क्या है ?''

''इसमें अच्छा भी क्या है.... आज के युग में ऐसा कोई आदमी नहीं जो एक जन्म भी औरत का साथ ईमानदारी से निभा सके.... सात जन्मों का साथ निभाने की बात तो बेमानी है।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

फिर भी अगर तुम्हें ढूंढना ही है तो अगले जन्म में बाकी छह जन्मों के लिए ढूंढ लेना, इस जनम में तो मेरा ही घर बसा दो !''

अर्पणा हंसी....''तुम फिर से प्रपोज कर रहे हो''

''हाँ.... लेकिन केवल एक जन्म के लिए !'' सुनकर अच्छा किन्तु अजीब लगा.. अजीब सी रोमांचकता उसे घेरती चली गई।

''जवाब नहीं दिया तुमने ?''

''सोचुंगी !'' गम्भीर थी अर्पणा

''अरे.... एक जन्म के लिए भी सोचोगी...? एक जन्म तो यूँ ही चुटकियों में बीत जायेगा.... हँसते-खेलते... थोड़ा सुख... थोड़ा दुख...'' कहते हुए अर्पणा का हाथ पकड़ लिया था विवेक ने..... कितना सुखद एहसास.,हाथ छुड़ाने की कोशिश नहीं की थी अर्पणा ने.... बस एक पल को घबराकर इधर-उधर जरूर देखा था।

''जिन्दगी इतनी आसान नहीं है विवेक, जितना तुम सोचते हो'' कहा अर्पणा ने

''हाँ, अगर तुम चाहो तो उसे मुशकिल बना सकती हो, बस करना यह है कि छोटी-छोटी बातों पर लड़ना, झगड़ना, ताने देना.... ऐसी इच्छाऐं करना जिन्हें पूरा करने के प्रयास में सारी उम्र लग जाये, दूसरों का सुख देखकर दुखी होना। अपनों पर बिना वजह शक करना..। कोई औरत अपने बेटे को इतना मर्द नहीं बनाती.... सृष्टि का सृजन करने वाली नारी केवल बेटे को जन्म देकर दायित्वों से मुक्ति पाती रही है'' सुनकर प्रभावित थी अर्पणा.... इतने ऊँचे.... सुलझे साफ विचार और धारा प्रवाह बोलने की शैली..जैसे वह कहीं भाषण दे रहा हो....

''मैं रोकुंगा नहीं तुम्हें अर्पणा..... नारी मुक्ति, नारी शक्ति, नारी अधिकार.... तुम्हारी अपनी जिन्दगी है... जैसे भी तुम जीना चाहो.... हाँ यदि तुम हमारे बेटे को एक मर्द बनाओगी तो मुझे खुशी होगी'' विवेक के अंतिम वाक्य पर चकित हुई अर्पणा, हल्की सी लाज की परत उसके चेहरे पर छा गई।

''सोचूंगी !'' उसने अंगूठे के किनारे को दाँतों में दबाते हुए चबाया... हलके से नजरें उठाकर विवेक की ओर देखा।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्रपोज

"तुम वह काम कैसे कर सकती हो जो तुम्हारे बस का नहीं''

"तुम्हारा मतलब सोचने से है न ?'' कहते हुए अर्पणा ने विवेक की ओर उँगली तान दी, उसके चेहरे पर हंसी मिश्रित गुस्सा था।

"अगर तुम लड़ाई के मूंड में हो तो मेरा मतलब यह कतई नहीं था.... मेरा मतलब था..... मुझसे जीतना तुम्हारे बस का नहीं.... मेरा प्रपोजल पर, न तो हाँ करके..... न ही ना करके.. .. तुम जीत नहीं सकती।''

उसकी बातों पर फिर से अवाक थी अर्पणा, विवेक ने उसका हाथ छोड़ दिया। पता नहीं विवेक ने सीरिअसली प्रपोज किया था या नहीं, लेकिन उसे हाँ कहना चाहिए था.... आज सोच रही थी अर्पणा, दो कपों में चाय डालते हुए। वह पढ़ती गई..... बी. ए., एम.ए..... फिर टीचर्स ट्रेनिंग.... शादी की बात वह टालती रही.... आज कॉलेज में इंग्लिश की लैक्चरर ! विचारों में लगातार आती परिपक्वता.... सोचती रही वह कि विवेक है तो. ... लेकिन सपनों का महल वक्त के साथ-साथ ही ढह गया... . विवेक की नौकरी दूसरे शहर में लग गई.... वह सोचती कि जब विवेक किसी दिन आयेगा तो वह हाँ कह देगी.... किन्तु वह दिन कभी नहीं आया.... विवेक ने अपने माता-पिता को अपने पास ही बुला लिया.... उसके बाद उसकी कोई खबर नहीं मिली. ... गुजरते वक्त ने उसे उम्र के ढलान तक पहुँचा दिया। आज सबकुछ अपना था.... लेकिन फिर भी कुछ भी तो नहीं था... क्योंकि अकेलापन.... कुछ चाहा, कुछ अनचाहा.... और आज फिर से वही सबकुछ सामने था जिसके लिए कभी वह हाँ नहीं कह पाई थी....

चाय लाते-लाते उसके हाथों में ट्रे हिल रही थी.... उसने ट्रे मेज पर रख दी, विवेक उसकी ओर अजीब सी नजरों से देख रहा था

"क्या देख रहे हो'' अर्पणा ने बैठते हुए कहा था।

"इतना टाइम हो गया... मैं तो भूल ही गया था कि तुम चाय लाने गई हो'' सुनकर झैंपी अर्पणा

"हाँ थोड़ा देर लगी''

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्रपोज

''तो इसमें झेंपने की क्या बात है.... मोमबत्ती की लौ पर चाय बनाने में तो इतनी देर लगती ही है.... शुक्र करो कि शाम नहीं हुई है अभी''

''तुम शर्मिन्दा कर रहे हो विवेक !'' कहा अर्पणा ने, विवेक चाय की चुस्कियाँ लेने लगा... किन्तु अर्पणा के मस्तिष्क में बरसों पुराना तूफान उमड़ रहा था,

''तुमसे कुछ पूछूँ विवेक ?'' सिर झुकाये अर्पणा ने कहा

''तुम इंग्लिश की प्रोफेसर हो... न ?''

''हाँ हूँ तो ?''

''तो क्या ?'' अगर तुम थर्स्टी क्रो की स्टोरी में से कुछ पूछना चाहती हो तो आय एम सॉरी ?

''ऐ विवेक.... बी सीरियस... हाँ'' अर्पणा ने हलका सा गुस्सा दिखाया... शान्त हो गया विवेक... कुछ देर बाद बोला

''अच्छा पूछो तुम ?''

''विवेक.... उस दिन तुमने सचमुच... सीरियसली प्रपोज किया था ?'' पूछा अर्पणा ने तो विवेक गौर से अर्पणा की ओर देखने लगा।

''नहीं !'' कहा विवेक ने तो हैरान हुई अर्पणा ''असल में मुझे किसी दूसरी लड़की को प्रपोज करना था... पहली बार था. .. इसलिए थोड़ा घबरा रहा था... तुम मिल गई.... सोचा एक बार तुम्हारे साथ प्रैक्टिस कर लूँ...?'' सुनकर अर्पणा का सिर झुक गया...

''फिर बनी बात ?''

''कहाँ बनी....? उसने रिफ्यूज कर दिया था !''

''तो ?''

''तो क्या ? उसके बाद कोई लड़की मिली ही नहीं। तब से मैं कुँवारा ही भटकता रहा ।''

''क्या ?'' सुनकर हैरान हुई अर्पणा

''और नहीं तो क्या.... एक और लड़की मिली है, शुक्र है भगवान का कि तुम भी सामने हो, अगर तुम बुरा न मानो तो एक बार फिर तुम्हारे साथ प्रैक्टिस कर लूँ'' विवेक मुस्करा रहा था.... कुछ रोमांचित सी एक बार फिर लरज उठी अर्पणा.....

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्रपोज

बरसों बाद।

''लेकिन अगर मैंने हाँ कर दी तब'' अर्पणा की आवाज काँप रही थी

''मुझे पता है तुम ऐसा नहीं करोगी... तुम कहोगी... मैं सोचूँगी !''

''नहीं विवेक, अब मैं वह काम नहीं करुँगी, जो मेरे बस का नहीं'', कहते हुए अर्पणा ने देखा विवेक सोफे से उठ गया था. .. उसकी बांहें अर्पणा के लिए फैली थी

''तो क्या इस बार तुम हाँ कहोगी ?''

''हाँ... मैं हाँ कहूँगी'' कहते हुए अर्पणा उठी और विवेक से लिपट गई थी।

''लेकिन.... लेकिन पहले मुझे प्रपोज तो करने दो...?'' विवेक ने उसे अपने से दूर हटाना चाहा

''नहीं.... उसके लिए अभी छह जन्म बाकी पड़े हैं'' कहा अर्पणा ने

''तो क्या ? मुझे पूरे सात जन्मों तक मोमबत्ती की लौ पर बनी चाय पीनी पड़ेगी'' कहते हुए हँस रहा था विवेक.... कुछ नहीं बोली अर्पणा ''अगर ऐसा है तो मैं नारी शक्ति का विरोध करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आदमी को उसकी वे दो हड्डियाँ वापिस दिलवाए... जिनसे कभी उसने नारी को बनाया था।''

''और ईश्वर जो तुमको दो हड्डियों के बदले पूरी दो सौ पाँच अस्थियों वाली नारी प्रदान कर रहा है उसका क्या?''

''नहीं, ये तो अन्याय है !''

''तुम चाहे जो करो... सात जनम तो पूरे सात जनम....। बिना सोचे और बिना प्रपोज के हाँ की है मैंने'', कहते हुए अर्पणा की आँखों से अविरल आँसुओं की धारा बह रही थी।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

शकुन्तला हैरान थी, हाथ में पकड़ा कौर हाथों में रह गया, उसने मनोहर की ओर देखा, वह चुपचाप सिर झुकाए खाना खा रहा था, जैसे विशेष कुछ नहीं हुआ हो।

"मनोहर ?" उसने पुकारा

"जी दीदी !" मनोहर ने कौर निगलते हुए कहा

"दिशा का दाखिला नहीं हुआ, केवल चालीस हजार की वजह से....?"

"कोई बात नहीं दीदी, अगले साल हो जायेगा"

"अगले साल हो जायेगा? क्या एक साल की कुछ भी कीमत नहीं होती?"

"अब दीदी पैसे का इन्तजाम नहीं हो पाया, तो क्या करें?", कहते हुए मनोहर ने रोटी तोड़कर दाल में डुबोई, "इस साल और आगे पढ़ लेगी.... कोर्स में दाखिला अगले साल करवा दूँगा, इस बार दो लाटरी और डालकर दाखिले के समय उठा लूँगा।"

"लॉटरी के भरोसे रहेगा, ज्यादा बोली लग गई तो ? या किसी कारण नहीं उठा पाया उन्हें तू ? और फिर दो-दो लाटरियों को भरेगा कैसे ?" शकुन्तला हैरान-परेशान थी

"हम सब ठीक कर लेंगे बुआजी, आप खाना खाओ" पहली बार बोला था नरेन्द्र

"क्या ठीक कर लेगा रे तू?" शकुन्तला देवी बिफर पड़ी थी

"अरे घर में इतनी बड़ी बात हो गई और मुझे पता तक नहीं, क्या मुझे नहीं बता सकते थे ?"

"सोचा दीदी, हम इन्तजाम कर लेंगे, अब नहीं इन्तजाम हो पाया तो... क्या करें....? कहते हुए मनोहर ने कौर अपने मुँह में रख लिया और सिर झुकाकर खाने लगा।

"तो उसी समय कहा होता.... मैं देती पैसे.... साल बरबाद हो गया न अब ?

"ला दिशा थोड़ी सी दाल हो तो दे बेटी" मनोहर ने दाल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

की खाली कटोरी दिशा की ओर बढ़ाई, दिशा ने दो कड़छी दाल कटोरी में डाल दी।

"मैं तुझसे कुछ कह रही हूँ मनोहर !"

"तो कहो न दीदी, मैं सुन रहा हूँ"

"मनोहर !" कहते हुए अवाक सी देखती रह गई शकुन्तला देवी.... "कैसे बात कर रहा है रे तू ?"

सुनकर मनोहर ने शकुन्तला देवी की ओर देखा

"कैसे बात कर रहा हूँ दीदी ! क्या कुछ गलत कह रहा हूँ? अब निंदे ने कहा था कि मैं इन्तजाम कर दूँगा पैसों का... पर वक्त पर ब्याज पर भी नहीं मिल पाये... तो क्या करता वो भी? ... कोशिश तो की थी न उसने... अब नहीं हुआ इन्तजाम तो नहीं हुआ" कहते हुए मनोहर सिर झुकाए रोटी खाने लगा।

"ब्याज पर पैसा लेते.... मेरे होते हुए ? मैं कहती हूँ मुझसे कहते तो एक बार, लड़की का एक साल बरबाद करवा दिया पता नहीं कब अकल आयेगी तुम्हें।"

"बुआ जी !" नरेन्द्र की आवाज थोड़ी तेज थी, "आप हमारे मामले में टाँग ना ही अड़ाऐं तो ठीक है" सुनकर अवाक रह गई शकुन्तला देवी।

"मैं टाँग अड़ा रही हूँ ?"

"बुआजी, दिशा मेरी बहन है और मेरे पिता मनोहर लाल जी की बेटी है, उसे क्या करना है ? कितना पढ़ना है ? ये हम सोचेंगे"

"तुम सोचोगे....! और मैं ?

"आप भी हमारी जिम्मेदारी हैं"

"नहीं, मेरा मतलब... मैं कौन हूँ ?

"आप हमारी बुआ जी हैं... कोई तकलीफ हो तो बताईये हमें" सुनकर मन्न रह गई शकुन्तला,

"मुझे कोई परेशाानी नहीं"

"तो फिर क्यों परेशान होती हैं, हो जायेगा सब ठीक, आप खाओ-पियो और मस्त रहो... हमें हमारे हाल पर छोड़ दो"

"क्या मैं वक्त पड़ने पर तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकती?"

"अब तक इतना सारा कुछ आपने ही तो किया है बुआ जी,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

.. बड़े ताऊ को स्टेशनरी की दुकान खुलवाई, छोटे ताऊ को पढ़ा-लिखाकर बैंक में नौकरी लगवा दी। अर्जुन भैया मारूति में डिप्टी एस.एस. हैं। देव भैया को इंजीनियरिंग करवा दी। मुकुल भैया कम्पयूटर का पाँच साल का कोर्स करके क्राउन आई.टी. में तीस हजार रुपया महीना कमा रहे हैं। बड़े ताऊ की लड़की की शादी में पचास हजार आपने दिया था। छोटे ताऊ की लड़की का एनआरआई रिश्ता आपके कारण ही इतना जल्द हो पाया... इतना सब आपने किया है, अब हम भी आपको तंग करें तो....'' नरेन्द्र ने आगे की बात छोड़ दी थी

''बुआजी....'' दिशा ने कहा... ''मैंने तो कहा था कि पैसे के लिए बुआ जी को.....''

''ऐ दिशा'' नरेन्द्र चीखा, ''चुप ! चुप तू... बहुत जुबान चलने लगी है... नहीं करना कोई कोर्स... और नहीं पढ़ा सकते हम आगे तुझे... हमारी हैसियत नहीं है, अब समझी.... अगर कुछ पढ़ना-पढ़ाना हो और कोर्स करना हो तो ससुराल में जाकर करना।'' सुनकर सहम गई दिशा... ''चल जा काम कर अपना'' और सुनकर दिशा चुपचाप चली गई थी... सोचती रह गई शकुन्तला, वह चुपचाप खाने लगी किन्तु दो चार कौर खाने के बाद उठ गई... कुल्ला करते हुए बोली... ''निंदे बैठक में आ जरा''

''आया बुआजी, आप चलो...'' सुनकर थके-हारे कदमों से चलती हुई शकुन्तला देवी... बैठक में आकर मसहरी पर बैठ गई... उनके मस्तिष्क में रह-रहकर विचारों का तूफान उमढ़ रहा था... कि आखिर क्यों ये दोनों बाप-बेटे ऐसी बात कर रहे हैं ! शकुन्तला को इससे पहले कभी कोई शिकायत नहीं हुई थी... दोनों ही बड़े आज्ञाकारी थे, मनोहर ने कभी अपनी इस बड़ी बहन की बात नहीं टाली और नरेन्द्र ने भी कभी बुआ की किसी बात का विरोध नहीं किया था।

शिवदत्त वैद्य की सबसे बड़ी संतान शकुन्तला देवी शुरू से ही अपने वैद्य पिता के पास बैठती। दवा-जड़ी-बूटियाँ कूटने, पीसने, छानने में मदद करती... दवा बनाती। मरीजों के लिए पुड़ियाँ तैयार करती... धीरे-धीरे वैद्यक सीख गई.. पढ़ने-लिखने

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

में भी होशियार। स्कूल-कॉलेज से आकर... खाना खाकर आ बैठती पिता की मदद करने, सभी मरीज और फिर धीरे-धीरे समूचा शहर उसे बहनजी कहने लगा..कितना सम्मान, कितना सुख महसूस करती वह... छोटेपन से ही धीरे-धीरे सभी जड़ी बूटियों के नाम, गुण-दोष... उसे पता लगते गये... किस दवा की कितनी मात्रा देनी है... किस रोग में कौन सी दवा देनी है। दसवीं कक्षा तक आते-आते उसने पिता का लगभग पूरा दवाखाना सम्भाल लिया था। दो बजते-बजते पिता जी अधीर हो उठते

''अरे गिरधारी, देख तो बेटा, ये शकुन्तला आई कि नहीं स्कूल से....मैं थक गया हूँ.... जरा आ जायेगी दवाखाने में, तेरे बस का कुछ नहीं, तू तो ढोल है बिल्कुल''

सुनकर गिरधारी दवाखाने के भीतर के दरवाजे से घर में आता.... आवाज देता....

''दीदी..... अरी ओ दीदी !''

''क्या है? रोटी खा रही हूँ...... डकरा रहा है बिना बात''

''बिना बात क्यों ?...... पिता जी बुला रहे हैं''

जाती हूँ बाबा..... और तू बता, वो मैं सुबह बता कर गई थी. ..... नागरमोथा की जड़ें कूट दी ?''

''कूट दी दीदी....!''

''शाबाश मेरा राजा भैया.... इस बार राखी पर अपने भैया को दो-दो राखी बाँधूंगी..''

''रहने दे दीदी.... फिर नेग भी डबल माँगेगी तू'' गिरधारी खीसें निपोरते हुए हंसा, ''पर दीदी बदबू बहुत आती है नागरमोथा की जड़ें कूटने पर....''

''ये क्या !'' शकुन्तला की आवाज आई

''क्या-क्या दीदी ?''

''दीदी के बच्चे.... इतनी मोटी कूटी है'' शकुन्तला झल्लाई

''ठीक तो कूटी है''

''मरीजों की दवा बनानी है... भैंस का चारा नहीं.... देख इसमें कितने लफूसड़े ही लफूसड़े हैं.... बिल्कुल बारीक कर इन्हें.... चल बैठकर कूट और....

''अब दीदी बस!'' गिरधारी चिरौरी करता

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दंश

"नहीं ! बिल्कुल नहीं.... काम कर नहीं तो शाम को रोटी नहीं मिलेगी"... और शकुन्तला ने गिरधारी का हाथ पकड़कर जबरदस्ती फर्श पर बैठा दिया और इमामदस्ता उसके सामने रख दिया" ले कूट एकदम बारीक... जल्दी-जल्दी, शाम को एक मरीज की दवा बनानी है"

गिरधारी इमामदस्ते में नागरमोथा की जड़ कूटने लगा वह मजबूरी, क्षोब और जले-जले नेत्रों से शकुन्तला को देखने लगा.

"ऐसे क्या देख रहा है....? काम कर सही ढंग से"

"कर तो रहा हूँ, हर बखत हुकुम चलाती रहती है" गिरधारी बड़बड़ाया.... "ऐसी दीदी भगवान किसी को ना दे"

"क्या कह रहा है?" शकुन्तला उसकी ओर बढ़ी

"मैं कह रहा हूँ... पिता जी बुला रहे हैं तुझे!" गिरधारी ने सहमकर बात बदली और कान उमेठे जाने से बच गया

"जा रही हूँ.... और तू दवा कूटना.... अगर भाग गया ना तो देख ले फिर,......... कंचों के लिए पैसे नहीं दूँगी"

"मैं करूँगा भी क्या कंचों का? खेलने तो देती ही नहीं, कभी ये जड़ी-कूटो..... कभी वो जड़ी कूटो... ये घर है या कूटकाना?" गिरधारी बड़बड़ाता

"ये जो भी है.... दवा तो कूटनी ही पड़ेगी!"

"हाथ दर्द होने लगें तब भी ?"

"हाँ तब भी"

"मुझे कौन सा वैद्य बनना है ?"

"तुझे वैद्य बना भी कोई नहीं रहा...." कहते हुए शकुन्तला ने मटके से गिलास में पानी भरा और पीने लगी....

"और वो कहाँ है....सीताराम ?"

"गोखरू उखाड़ने गया होगा.... ये पड़ा उसका बस्ता"

कहते हुए गिरधारी ने कोने में रखे बस्ते की ओर इशारा किया....

"और वो काक भुसुण्डि.... आज स्कूल में पिटाई तो ज्यादा नहीं लगी उसकी, अभी तक जमा के सवाल भी सही ढंग से नहीं आते"

"पिटाई तो तब लगती जब वो स्कूल में रहता, आधी छुट्टी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

में भाग आया''

''अरे राम !'' कहते हुए शकुन्तला ने अपने माथे पर हाथ मारा ''ये मनोहर तो पता नहीं क्या ? पढ़ेगा या नहीं... और माँ ने कुछ नहीं कहा उससे ?''

''कुछ नहीं कहा दीदी, उल्टे उसका बस्ता भी पूरी छुट्टी में मुझे लादकर लान पड़ा, सीताराम तो नवाबों की तरह हमारी परेड़ करवाता, हुकुम देता हुआ पीछे-पीछे चलता है'' गिरधारी ने नाक रगड़ते हुए कहा, फिर छींक मारी

''ठीक है ठीक है देखुंगी दोनों को! तू दवाई कूट''

''हाँ देख लेना दीदी और मनोहर से उसके कल के प्रोग्राम के बारे में भी पता कर लेना... कल से उसका इरादा घर से ही स्कूल जाने का नहीं है, कहता है.... तुम दोनों पढ़ लेना, मैं तो तुम दोनों की पढ़ाई से ही काम चला लूँगा''

''हे भगवान.... ये लड़का बात कैसी करता है, अपनी पढ़ाई कभी किसी दूसरे के काम भी आई है क्या ?'' बड़बड़ाती हुई शकुन्तला दवाखाने की ओर बढ़ गई.....

ऐसा घर और भाईयों पर शकुन्तला का जाना-पहचाना प्यार भरा अधिकार, माँ चुप रहने वाली सीधी-सादी, उतनी ही शकुन्तला होशियार-समझदार... कुछ दिनों बाद तो घर में उसकी मर्जी के बिना पत्ते का हिलना भी असम्भव हो गया था. .. बारहवीं कक्षा पास करके वैद्य विशारद की डिग्री कर ली.... शादी करने से साफ इनकार कर दिया उसने, दवाखाना मरीज, जड़ी-बूटियों में बिल्कुल रम गई... घर बैठे अच्छे-अच्छे रिश्ते आये, पर शकुन्तला देवी की एक ना तो हजार ना....

बाप-बेटी की वैद्यक अच्छी और बहुत अच्छी चल निकली। पूरे शहर में नाम था शिवदत्त वैद्य और बहन शकुन्तला का दवाखाना.... सीताराम ने बारहवीं पास कर स्कूल के पास ही स्टेशनरी और किताबों की दुकान खोल ली....., गिरधारी और भी अच्छा पढ़कर एकाउन्टेंसी का कोर्स कर गया और बैंक में अच्छे पद पर लग गया। सबसे छोटा.... वह काक भुसुण्डि मनोहर, काफी कोशिशों के बाद पढ़ा नहीं। अनाज पीसने की चक्की लगा ली..... सीताराम और गिरधारी की अच्छी जगहों पर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

शादी हुई.... उनके बच्चे भी अच्छा पढ़े, अच्छी पोस्टों पर लगे. ... हर कदम... हर जरूरत पर थी तो शकुन्तला देवी.... पिता शिवदत्त जी गुजर गये, माँ भी गुजर गई.... परिवार बिखर गया.... बिखरा नहीं, दोनों भाई... अपने-अपने बच्चों के साथ सैक्टरों में सैटल हो गए। सबसे छोटा मनोहर... गरीब ही रहा. .. बस आटे-चून में सना .. चक्की पर जुटा रहता, उसका लड़का नरेन्द्र भी खास नहीं पढ़ पाया... दसवीं के बाद कोई कोर्स करना चाहता था... शकुन्तला का ध्यान... प्यार सब बड़े भाईयों और उनके बच्चों की पढ़ाई-तरक्की की ओर था.. दिल खोलकर पैसा देती.... मनोहर को तो शकुन्तला हर समय कोसती-झिड़कती। नरेन्द्र के कोर्स के लिए वह पैसा नहीं दे पाई, उस समय गिरधारी का मकान सैक्टर में बन रहा था... .। नरेन्द्र ने चुपचाप आई.टी.आई. में दाखिला ले लिया। शकुन्तला को बुरा तो लगा लेकिन नरेन्द्र नालायक बाप का नालायक बेटा था... पर दिशा अच्छे नम्बर लाती... होशियार चतुर.... शकुन्तला बहुत चाहती थी दिशा को... वैसी ही थी दिशा.... जैसे कभी शकुन्तला देवी थी... शकुन्तला देवी के पास दवाखाने में आ बैठती... दवाओं की पुड़िया बाँधना, दवा कूटना उसे अच्छा लगता.... जब दिशा कुछ पूछती तो शकुन्तला देवी को अपना बचपन याद आता.... उसके वैद्य पिता सोते समय लोरी की तरह उसे सुनाते कि कैसे राजकुमारी से प्यार करने वाला राजकुमार, राजकुमारी के सफेद दागों को ठीक करने के लिए बाकुची नामक पौधे में बदल गया। उसने हलदी, करंज और पंवाड़ के साथ जाकर अमलतास से प्रार्थना की कि लेपन के लिए सोमराजी तेल बनाने को वह अपने कुछ पत्ते दे दे।

पिता शिवदत्त जी कहते थे आदमी मरता नहीं, वह धीरे-धीरे अपने आपको मारता है, बुरी आदतों, व्यसनों, नशे आदि से उसकी उम्र घटती है। यदि सभी नियमों और यमों के साथ सादा जीवन जिया जाए, सादा भोजन हो तो सम्पूर्ण विंशोत्तरी अर्थात 120 वर्षों की आयु पाई जा सकती है। रोग कोई व्यक्ति अपने आपको स्वयं लगाता है परन्तु कोई बात नहीं... . चिकित्सा प्रकृति करती है.... गरिष्ठ... तला-चिकना खाने से

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जोड़ों के दर्द, कमर दर्द, गठिया, सायटिका होते हैं तो प्रकृति ने हरड़, सौंठ... विधारा.... आँवला.... सेन्धा नमक दिया है, सबको बराबर मिलाओ.... पीसो और दो चुटकी चूरण, चार पाँच बार फांको.....

और अब शकुन्तला देवी.... दिशा को समझाती...... कि मिर्गी रोग बड़ा भयंकर... आसान दवा और छू मंतर.... दिशा आसान दवाई जानना चाहती तो शकुन्तला देवी कहती "शुद्ध और बढ़िया क्वालिटी का जूट, पच्चीस ग्राम.... जलाकर... राख की पाँच पुड़िया बनाओ.... रोज सुबह खाली पेट एक पुड़िया राख-शहद के साथ चाटो और मिरगी सदा के लिए बाय-बाय... टाटा....।" धीरे-धीरे दिशा बहत कुछ सीख गई थी। शकुन्तला देवी चाहती थी कि वह वैद्य विशारद कर ले लेकिन उसकी रूचि फैशन डिजाइनिंग में थी। वह कहती.... "वैद्यक में विशारद की डिग्री तो आप करवा रही हैं बुआ जी... फिर क्यों टाइम और पैसा खराब करना, आज फैशन का जमाना है"

शकुन्तला देवी हंसती... "फैशन तो हमारे जमाने में भी था बिट्टो, पर ये डिजाइनिंग-विजाइनिंग नहीं थी... क्या जमाना आ गया है अगर कोई आदमी गलती से अंडरवियर को बाँहों में पहन ले. .. तो दूसरे दिन शहर के आधे आदमी वैसा ही पहनावा पहने मिल जायेंगे"

सुनकर दिशा भी हँसती.... "तुम भी न बुआ जी !" तभी बैठक में नरेन्द्र ने प्रवेश किया, उसने कोने में रखा मूढ़ा सरकाया और बैठ गया। शकुन्तला देवी की विचार श्रृंखला टूट गई... नरेन्द्र सिर झुकाए बैठा था, वह सदा से कम बोलने वाला आज्ञाकारी रहा था। सुबह किसी फैक्ट्री में काम पर जाता और शाम को लौटता... कभी-कभी ओवरटाईम भी करता तो थोड़ा लेट हो जाता। मेहनती था, किन्तु इतनी मेहनत और ध्यान पढ़ाई में लगाया होता तो वह भी मुकुल, अर्जुन और देव की तरह कहीं अच्छी पोस्ट पर होता।

"तुझे यह शिकायत है न शिंदे कि मैंने जो कुछ किया गिरधारी और सीताराम के लिए किया.... उनके बच्चों के लिए किया, मनोहर और तेरे लिए कुछ नहीं किया... यही शिकायत है

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

न तुझे'' शकुन्तला ने कहा तो नरेन्द्र का सिर यथावत झुका रहा

''मुझे कोई शिकायत नहीं बुआ जी, अगर मेरी बात आप को बुरी लगी हो तो माफी चाहता हूँ'' नरेन्द्र ने कहा

''मुझे बुरा तो लगा निंदे, मगर तुम आगे नहीं पढ़ पाये, मनोहर आटा चक्की तक ही रह गया... क्या मेरी गलती है, अगर बच्चा होशियार हो, बुद्धिमान हो तो बड़ों को खुशी होती है, वे उन्हें पढ़ाने. ... काम सिखाने और ऊँचाईयों तक पहुँचाने के लिए अपने आपको बेच देने के लिए तैयार रहते हैं। मैंने उनकी हर सम्भव सहायता की क्योंकि वे होशियार थे, बुद्धिमान थे, काबिल थे, आज वे जिन जगहों पर हैं उन पर उनका अधिकार था ही... और उनको उन जगहों तक पहुँचने में उनकी सहायता करना मेरा कर्तव्य... काश तुम ये बात समझ सकते...'' कहते हुए शकुन्तला देवी ने सिर झुकाये सुन रहे नरेन्द्र को देखकर एक ठण्डी साँस भरी...'' खैर समझोगे तुम निंदे, मगर अभी नहीं... उस वक्त जब तुम थोड़ा और बड़े होगे... शादी होगी... बच्चे होंगे.... वे पढ़ेंगे-लिखेंगे.....तब''

''आप बड़ी हैं... बुद्धिमान हैं बुआ जी... एक बात पूछूँ ?'' नरेन्द्र ने सिर झुकाए हुए कहा था, ''वैसे ये आपकी अपनी सोच है... जरूरी तो नहीं कि हर व्यक्ति आपके विचारों से सहमत हो, फिर भी आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ, आशा है आप बुरा नहीं मानेंगी''

सुनकर शकुन्तला ने देखा नरेन्द्र का सिर उठा हुआ था... उन्हें बहुत अजीब सा लगा, उनके मन में नरेन्द्र का कुबुद्धिपन उभर आया था।

''यही तो बात है निंदे... तुम न तो पहले समझे... न ही अब समझ पा रहे हो, अभी वक्त है तुम्हारे समझने में, जब तक समझोगे... तब पछतावा होगा कि एक बुआ थी जो ठीक समझाया करती थी... मगर तुम तो...।

''बुआ जी अगर आपकी इन्हीं बातों को समझना बुद्धिमानी है तो मैं कमअकल और मूर्ख ही ठीक हूँ, अगर बुरा न मानें तो बड़ों को एक बात समझनी चाहिए कि जो बुद्धिमान है उन्हें किसी की सहायता की जरूरत ही क्या है। सहायता की जरूरत तो कमअकल और बुद्धिहीनों को होती है जबकि बड़े उनकी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उपेक्षा करते हैं'' नरेन्द्र ने झुके हुए सिर के साथ कहा था और उसके शब्दों को तोल रही थी शकुन्तला देवी''

''हाँ थोड़ी सी उपेक्षा तो होती है निंदे लेकिन...।''

''लेकिन बुआ जी.... बड़े भी अपनी सभी आशाऐं और उम्मीदें अपनी समझदार होशियार सन्तानों से लगाते हैं''

''ये तो होता ही है'' शकुन्तला देवी बोली थी

''आपने सबके लिए सबकुछ किया बुआ जी...सब आगे बढ़ गए... अच्छी-अच्छी नौकरियों में हैं, सभी सैक्टरों में सैटल हो गए, किसी बात की कोई कमी नही, आज सबकुछ है उनके पास... वे होशियार थे.. समझदार थे... काबिल थे किन्तु एक वक्त आता है बुआजी... जब कर्तव्य अधिकार और अधिकार कर्तव्य में पलट जाने चाहिऐ... हमारी बात छोड़िये.... वे होशियार और समझदार जहाँ भी कहीं हैं जितना भी आगे हैं.... आप वहाँ नहीं हैं।''

''तू.... तू कहना क्या चाहता है निंदे ?''

''बुरा मत मानना बुआ जी... आपने कुरबान कर दिया अपने आपको... आपने शादी नहीं की... मुझे नहीं मालूम ये आपकी बु)मानी थी या नहीं... आपने जिस परिवार को अपना समझकर उसके प्रति इतने कर्तव्य निभाये हैं... आज वह परिवार है कहां? अपनी बात छोड़िये... हर माँ-बाप के साथ यही होता है, उसकी होशियार और बुद्धिमान संतान इतना आगे निकल जाती है जहाँ से वह न देख पाती है, न सुन समझ पाती है कि जिन माता-पिता ने उसके लिए इतना सबकुछ किया वे कितना पीछे और कहाँ छूट गये... और वे माँ-बाप भी अपने उस कमअकल और गरीब बेटे के पास रह जाते हैं जिसकी उपेक्षा वे जीवनभर करते आए थे''

सुनकर शकुन्तला देवी को झटका सा लगा था, वे निंदे के चेहरे की ओर गौर से देखती रह गई कि कितनी गहरी और सच्ची बात कह गया था निंदे... अपने को देवी-देवता समझने का भ्रम, ख्वाबों के शीशमहल की तरह ढह गया था और वह उस मलबे के नीचे दबी हुई थी।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मनहूस सवारी

शाम के आठ बज चुके थे, बैरागी उत्सुकता से और याचक दृष्टि से आते-जाते लोगों को देख रहा था। पास गुजरते लोगों से पूछता भी रहता....

"साहब चलना है कहीं?"

"नहीं !" कहते हुए लोग आगे बढ़ जाते और उनका कहा हुआ छोटा सा शब्द "नहीं !" बैरागी के ऊपर हथोड़े सा पड़कर देर तक उसके मन-मस्तिष्क को झनझनाता रहता। वह मायूस सा आवाज लगाता.... "हाँ साहब टेसन-टेसन!"

हर पैदल व्यक्ति को आता देखकर उसकी उम्मीद जागती और जब वह व्यक्ति पास से होकर गुजर जाता तो मायूस होता... सोचता शायद अब भी उसे कोई सवारी मिल जाय..

"हिस्ट किस्मत साली.... अगर भीख माँग रहा होता तो शायद सौ पचास कमा लेता... पर"

उसे एक पुलिसवाला अपनी ओर आता दिखाई दिया, वह डन्डा हिला-हिलाकर भद्दी गालियाँ देता हुआ रिक्शे वालों को सड़क से हटा रहा था... चार दिन पहले इस पुलिसमैन ने बैरागी के टखने पर डन्डा मार दिया था

"साले... मादर ऽ ऽ ऽ.... बाप की सड़क समझ रखी है, रिक्शा बीच में खड़ी कर दी है!"

टखने पर डन्डे की भरपूर चोट से हुए दर्द के कारण बुरी तरह बिलबिलाते बैरागी ने पुलिसमैन को देखा

"ओ तेरी बहण... साले, आँखे किसे दिखाता है बे ?" बैरागी ने आँखे झुकाते हुए रिक्शा सम्भाली और लंगड़ाते हुए चलकर रिक्शा पफुटपाथ से भी नीचे कच्चे में उतार ली। पुलिसवाला आगे बढ़ता हुआ बड़बड़ा रहा था....

"तुम साले मानते नहीं हो... सवारी को बैठना होगा तो वहाँ कच्चे में खड़े रिक्शे में आकर नहीं बैठ सकती क्या ? सड़क पर रिक्शों की बाढ़ लगा देते हो... पैदल, स्कूटर, कारवालों को परेशानी हो तो हो... ट्रैपिफक जैम हो तो

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तुम्हारी बला से''

और अपने रिक्शे को लेकर खड़े बैरागी ने हड़बड़ाकर रिक्शा आगे बढ़ा दिया। आती हुई दो महिलाओं ने उसे आवाज दी

''ऐ रिक्शा.... ?''

''जी बहन जी'' कहते बैरागी रिक्शा उनके पास ले आया

''सर्किट हाउस चलोगे ?''

''बैठिये बहनजी'' कहते हुए बैरागी को समूचे दिनभर की दूसरी सवारी की उम्मीद जगी, उसने सोच लिया था चाहे जो हो वह इस सवारी को हाथ से नहीं जाने देगा।

''पैसे बोलो... कितने लोगे ?''

''दो सवारी है बहन जी ?'' उसने पूछा

''दो ही तो हैं...! तुझे कितनी दिखाई दे रही हैं ?''

''दे देना जो जी में आये'', कहते-कहते बैरागी ने एक दूसरे रिक्शे वाले को धीरे-धीरे पास आते देखा था।

''नहीं तुम बताओ.... क्या लोगे?''

''बहन जी जो आपकी इच्छा हो... दे देना'' बैरागी ने आत्मसमर्पण किया

''अजीब आदमी है !'' एक महिला झुझला गई, ''बाद में झिकझिक करेगा ! पहले रेट तय करना ठीक होता है.... बता जल्दी... टाइम नहीं है हमारे पास''

बैरागी को सवारी अपने हाथों से फिसलती सी लगी।

''दस रुपए दे देना बहन जी''

''सर्किट हाउस के?'' महिला की जैसे भृकुटि तन गई,

''नोएडा नहीं जाना है, सर्किट हाउस जाना है!'' महिला ने व्यंग्य किया। बैरागी को लगा जैसे दो सवारियों के दस रुपए बताकर उसने बहुत बड़ा अपराध किया है।

''पन्द्रह का तो रेट है बहन जी, एक सवारी का!'' कहते हुए बैरागी ने थूक निगला

''तो तीस माँगने थे ?'' महिला ने ताना मारा ''तुम लोग जो भी मुँह में आये माँग लेते हो, मेहनत से कमाया जाता है पैसा !'' महिला ने उपदेश दिया,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मनहूस सवारी

बैरागी उसको अवाक देखता रह गया...

"सात लेने हैं" महिला ने स्पष्ट किया, बैरागी कुछ बोल नहीं पाया... उसने अंगोछे से पसीना पोंछा।

"बोल जल्दी लेने हैं सात ?"

"इतनी गर्मी है बहन जी... और सामने की हवा में दो सवारी ?"

"गर्मी क्या तेरे लिए ही है ?"

"मगर बहनजी तीन किलोमीटर है सर्किट हाउस पूरे..."

"तभी तो रिक्शा कर रही हैं, एक आध किलोमीटर होता तो बात करते हुए पैदल निकल जाती दोनों !"

"आप नौ देना बहन जी बैठो !"

"नहीं सात सही है" कहकर वे महिलाऐं दूसरे रिक्शे की तरफ बढ़ी, वह रिक्शेवाला भी उनके पास तेजी से आया

"बैठिये बहन जी, कहाँ चलना है ?"

"सर्किट हाउस !"

"बैठिये, बीस रूपए देना...!"

"बीस..! तू उसका भी बाप है.. वह तो दस माँग रहा था!"

"अब वह चाहे तो मुफ्त में ले जाये बहन जी, मैंने तो जो रेट है वहीं माँगा है" कहते हुए उसने बैरागी की ओर खा जाने वाली नजरों से देखा... बैरागी अंगोछे से पसीना पौंछते हुए दूसरी ओर देखने लगा... महिला उसकी ओर पलटी

"अच्छा चल आठ लेना" उन्होंने बैरागी से कहा

"नहीं बहनजी नौ से कम नहीं!"

"अच्छा चल...!" सुनकर बैरागी ने रिक्शा सड़क पर लगा दिया। सवारियाँ रिक्शे में बैठने लगीं थीं, अचानक एक कार पीछे से हार्न देने लगी।

"जल्दी कीजिए बहन जी !" कहते हुए बैरागी ने एक हाथ-ठेले और फिर एक और कार को पीछे खड़े देखा, एक महिला सीट पर बैठ चुकी थी... पीछे से मोटरसाईकिलों के हार्न बजने लगे... दूसरी महिला के सीट पर बैठते-बैठते चौराहे पर जाम लग चुका था।

"ओए रिक्शा!" ट्रैफिक पुलिसवाले की तगड़ी आवाज

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आई... बैरागी ने रिक्शा फुटपाथ की ओर खींचा

''क्या कर रहा है... सही ढ़ंग से बैठने तो दे, गिराएगा क्या ?'' महिला झल्लाई... पुलिसवाला पास आ चुका था

''तुम लोग साले...'' कहते-कहते पुलिसवाले का भारी हाथ बैरागी के कान पर पड़ा... फिर कमर पर दो डन्डे, डन्डे तो महसूस नहीं हुए... कुछ देर के लिए सबकुछ सुन्न और सन्न हो गया !

पुलिसवाला जा चुका था... रिक्शे के कारण चौराहे पर लगा जाम छंट चुका था... उसने देखा दोनों महिलाऐं नीचे उतर रही थी... वह चौंका

''बैठी रहिऐ न बहन जी... यह सब तो चलता ही रहता है''

कहते हुए उसने पूरी हथेली से अपना कान मसला... ''यह सब तो हमारी रोजाना की किस्मत है आप बैठिये !''

''जायेगा कैसे'' महिला ने उसकी ओर दया भाव से देखा

''वॉल-बोडी तो पुलिस वाला ले गया है'' सुनकर उसने रिक्शे के पहियों की ओर देखा.... पिछला एक पहिया हवा निकल जाने के कारण बैठ गया था.... उसने एक हाथ से कान सहलाया और दूसरा हाथ मोड़कर पीठ सहलाई और बेबसी से अपनी सवारियों को दूसरे रिक्शे की ओर जाते हुए देखता रहा। फिर कुछ ध्यान आते ही उसने हड़बड़ाकर कुर्ते की जेब में हाथ डाला। हाथ बाहर निकला तो उसकी आज की कमाई उसके हाथ में थी। उसने गिना उन्नतीस रुपए थे... वह मन ही मन हिसाब-किताब में जुट गया।

''पन्द्रह रुपए रिक्शे का किराया, दो रुपए की वॉल-बाडी, एक रुपया हवा भरने का, पाँच रुपये का आटा और छह रुपए का दूध....!''

✦

वह घर में घुसा... तो कमली ने उठकर उसके हाथों से आधी थैली दूध की ले ली.... उसने अंगोछे से पसीना पौंछते हुए आटे का लिफाफा कमली की ओर बढ़ाया। कमली ने पति की ओर देखा... एकदम उदास... बुझा... बेजान सा चेहरा.... कुछ कहते-कहते रुक गई कमली... मुड़ी और स्टोव जलाने

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बैठ गई...

बैरागी छोटे से कमरे में पुआल के बिछावन पर लेटी अपनी बेटी पूर्णी को देखने लगा.... फिर उसी बिछावन पर एक तरफ निढ़ाल सा पड़ गया

कमली दूध गरम करके ले आई थी... उसने कटोरी के दूध को फूँक मारते हुए पूर्णी को गोद में उठाया; और उसे चम्मच से दूध पिलाने की तैयारी की।

''सुनिये जी.... पूरी थैली दूध लाते न, आप तो जानते हैं हमारे तो इतना दूध उतरता नहीं... पूर्णी भूखी रह...'' कहते-कहते वह चौंकी, कटोरी के गरम दूध में फूँक मारना भूल गई... सामने पति का आँसुओं में डूबा चेहरा था.... उसका हृदय टुकड़े-टुकड़े हो गया

''नहीं जी... हम, हम तो ये कह रहे थे कि आटा तो थोड़ा सा बाकी पड़ा है !...'' कमली ने थूक सटकते हुए पति को सांत्वना भरी दृष्टि से देखा

''मैं तुझे थोड़ा भी सुख नहीं दे पाया कमली''

''क्या मैंने कुछ माँगा क्या ?'' कहते हुए कमली ने पूर्णी को वापस पुआल के बिछावन पर लिटा दिया।

''नहीं तूने तो नहीं माँगा, मगर.....!''

''कभी कोई शिकायत की हमने ?'' कहते हुए कमली ने पति की छाती को सात्वना से सहलाते हुए, उसके गालों पर ढलक आये आँसुओं को पोंछा

''नहीं... मगर कमली....!''

''नहीं न जी, फिर क्यों मलाल करते हो ?''

''मगर कमली मैं पूर्णी के लिए भी तो....।''

''देखो जी ऐसे ही पलते हैं गरीबों के बच्चे... मैं और तुम क्या ऐसे ही नहीं पले हैं...? और यह क्या...?'' कहते हुए कमली ने चौंककर पति के कान की ओर देखा ''तुम्हारा ये कान सूजा हुआ है, लाल भी हो रहा है ?''

''कुछ नहीं कमली! पुलिसवाले ने थप्पड़ मार दिया था, वो मेरे रिक्शे के कारण चौराहे पर थोड़ा ट्रैफिक रुक गया था... इसीलिए....''

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सुनकर कमली दुख से भर उठी, उसने पति के कान को सहलाया, वह चिंतित थी

"और रिक्शा?"

"ठीक है रिक्शा, बस वॉल-बाडी निकाल कर ले गया, तीन रुपए ही लगे.... सस्ता छूटा। पिछली बार तो उसने अपना डन्डा ही चलते पहिये के बीच में दे दिया था, पूरी चौदह तिलीयाँ टूट गई थी, रुपए तो बीस लगे थे पर पूरा दिन रिक्शा सही करवाने में लग गया था" कहते हुए फीकी सी हँसी हँसा बैरागी"

"हाँ हाँ? हँस रहे हो और आज पुलिसवाले का थप्पड़ ?"

"ये तो गरीबी का ईनाम है री!" कहते हुए फिर हँसा.... उसके होठों पर एक अजीब सी बनावट उभर आई

"साली सुबह-सुबह कितनी मनहूस सवारी थी, पूरा दिन एक तो कुछ कमाई नहीं हुई और आखिर में पुलिसवाले का थप्पड़ भी खाया।"

"मनहूस सवारी...?" कमली ने पति की ओर देखा

"हाँ री... सुबह-सुबह एक सवारी मिली... सवारी क्या थी पूरा हाथी का सा बच्चा था, दो सिलेण्डर थे उसके पास"

"फिर ?" कमली ने कटोरी के दूध में फूँक मारते हुए पूछा

"फिर क्या ?" लाल डिग्गी पर इण्डेन के डिपो तक जाना था, भरे सिलेण्डर वापिस लाने थे, मैंने सुबह-सुबह बोहनी के वक्त चालीस रुपए माँगे.... खूब झिकझिक करने के बाद तीस देने पर राजी हुआ..."

"वो क्या राजी हुआ होगा जी, तुम ही राजी हुए होगे, सवारी को वाजिब से भी कम बोलो, तो भी दो चार रुपए तोड़ ही लेती है"

"हाँ हाँ मैं ही राजी हुआ, उसने तीस कहा तो तीस पर ही अड़ा रहा...."

"पूर्णी.... राजे उठ बेटी.... दुदधू पी ले... देख अप्पा आ गए गुडिया" कमली ने पूर्णी को गोद में ले उठाकर जगाया, पूर्णी कुलमुलाई, बैरागी मंत्रमुग्ध सा बेटी को देखता रहा..

"फिर ?" कमली ने पूछा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मनहूस सवारी

"फिर क्या...? पूरे दस किलोमीटर गया.... आया, आधा घण्टा वहाँ भी लगा.... ग्यारह बजे निपटा, इतनी गरमी.... ऊपर से लू-हवा... दम निकल गया... और सवारी ने सौ का नोट दिखाया। मेरे पास खुले थे ही नहीं। पूरे दस मिनट इधर-उधर भागा नहीं मिले.... वह बोला मेरे पास उन्तीस रुपए हैं... क्या करता मन मारकर ले लिए... पर चलो बोहनी तो हुई।

"बोहनी तो अच्छी थी"

"खाक अच्छी थी, पूरे दिन धूप में इधर से उधर। इस चौराहे से उस चौराहे तक... खाली के दो चक्कर टेशन से बस स्टैण्ड के भी लगाए... लेकिन बेकार। किसी-किसी सवारी की तो बोहनी भी मनहूस होती है... सवारी तो मनहूस थी ही.... एकदम शाम को दो सवारियाँ मिली भी थी, पुलिसवाले की मेहरबानी से वो भी जाती रहीं... ऊपर से गरीबी का ईनाम, साले ने कमर में दो डन्डे भी मारे, इतनी मनहूस सवारी मिली थी सुबह-सुबह....!"

"सवारी मनहूस नहीं होती जी, भगवान जिलाऐ उसको" कमली ने कहा तो बैरागी चौंक कर कमली को देखता रह गया

"हाँ जी... सवारी को भगवान लम्बी उम्र दे... उसने तो सुबह की बोहनी में ही रिक्शे का किराया, खाने के लिए आटा, पूर्णी के लिए दूध और वॉल-बाडी के पैसे दे दिए थे, आगे हमारा नसीब ही जोर नहीं मारा" कहा कमली ने तो बैरागी चकित, देखता रह गया कमली को।

कमली ने पूर्णी को बैरागी की ओर बढ़ाया "लो सम्भालो अपनी राजे को, खेलो दोनों बाप-बेटी, मैं रोटी बनाती हूँ"

कहते हुए उठ गई थी कमली।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बींदणी

बगड़ावत का ऊँटगाडा तेजी से रेतीले टीलों के बीच बनी सड़क पर दौड़ रहा था। गाजली पीछे छूट चुका था, बगड़ावत ने मुहार खींचकर ऊँट को पुचकारा...

"रुक जा बेटा... रुका जा मेरे शेर"

मुहार खिंचने पर ऊँट की गरदन मुड़ गई, वह रुक गया, बगड़ावत ने कान में लगी अधजली बीड़ी निकाली, माचिस से तीली निकालकर माचिस पर रगड़ते हुए ताल उठाई

"अरे बीड़ी जलईले जिगर से पिया.... जिगर मा" तीली जलते ही हवा की ओट करके उसने बीड़ी सिलगा ली। दो चार लम्बे-लम्बे सुट्टे खींचकर, बीड़ी का कड़वा धुआँ बाहर उगला,

"अब चल मेरे शेर" कहा उसने और ऊँट की मुहार ढीली छोड़ दी.... चार-पाँच लम्बे-लम्बे कशों में ही बीड़ी उँगलियों तक रह गई। बीड़ी फेंकते ही वह चौंका, ऊँट को रोकने के लिए उसे जोरों से मुहार खींचनी पड़ी, सामने एक लड़की खड़ी थी, दोनों हाथों को जोरों से हिलाते हुए। गरदन पूरी तरह मुड़ जाने पर ऊँट ने बुरी तरह बुक्काल भरी... जैसे गुस्से में पागल हो गया हो

"ऐ छोरी.... थैं मरणाो चावे के ?"

"म्हानै सहर जाणौं है" लड़की अपनी ओढ़नी से आँखो चमकाती हुई बोली

" और इबी सुरग पौंहच जात्ती तो ?"

"म्हाने सहर जाणौं है" कहते हुए लड़की की आवाज में कातरता थी, चेहरा तो बगड़ावत देख नहीं पाया, हाँ उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में उलझकर रह गया

"मैं नचेल ताँई जाऊँ हूँ, बठै तांई छोड़ सकूँ हूँ थाणै, पण ?"

"पण खाँई ?"

"थैं इकली, तेरी गैल कोऐ मरद कोनी ?" बगड़ावत ने इधर-उधर देखते हुए कहा

"थैं तो हो जी मरद! नचेल ताँई" लड़की ने कहा तो

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बींदणी

बगड़ावत की छाती फैल गई

"हाँ हूँ तो सूँ.... पण ?" कहते हुए बगड़ावत ने अपनी पगड़ी उतारकर उसे फटकार कर उसकी धूल झाड़ी

"पण के....? म्हानै सहर जाणों है !"

"तू बावली तो कोनी ? साम होरी है और सहर पूरा चौदाह कोस है अठे तैं और मैं तो तनै नचेल छोड़ द्यूँगो.... रात के नौ बजेंगे... फेर बठे तै किस तरियाँ सहर पौहूँचेगी थैं ?"

"थम ले चालियो जी" लड़की ने भोले स्वर में कहा

"बावली...!" कहते हुए बगड़ावत की दृष्टि लड़की के अंगों की ओर पड़ने लगी, लड़की सिमटी, बगड़ावत के शरीर में खून का दौड़ना तेज हो गया... लड़की अठारह उन्नीस बरस की, जवान, भरी देह.... अकेली, रात का सफर। पैंतीस पार कर चुका बगड़ावत..तवे सा काला रंग, पाँव में लंगड़ाहट, पीले बड़े दाँत, मुँह बाहर की ओर निकला, लोमड़ी की थूथन सा.... ऐसे रूपवान पुरुष का ब्याह न तो होना था, न ही हुआ.. घर में तीन ही प्राणी थे...बगड़ावत...., बगड़ावत की पचपन साल पार कर चुकी चूल्हा फूँक-फूँककर अन्धी हो चुकी माँ... और बगड़ावत का शेर वह ऊँट, जो उसकी रोजी-रोटी का साधन था, ऊँट गाड़ी में शहर से व्यापारियों का दाल, चावल, गुड़, बाजरा, ज्वार ढोकर गाँवों में उनकी दुकान-दुकान पहुँचाता। एक ढाणी से दूसरी ढाणी अनाज, उपले, भुस, ढो देता... गुजारा चल रहा था... कोई कमी नहीं थी... बस पैंतीस बरस पार कर भी लुगाई को तरस रहा था। शुरू-शुरू में तो इच्छा होती, जवान होता शरीर और मन हिलोरें लेता तो राह चलती, पानी भरकर लाती लड़कियों औरतों को तकता-घूरता.... हाथ मलता... होठों पर जीभ फिराता, चाहता... कोई तो ऐसी हो जो घर पर उसका बेताबी से इन्तजार करे... चाहे चाची कुन्द्री की तरह लड़ोकड़ी हो या बजरंगी की लुगाई जैसी कर्कशा, भले ही चन्द्रो भाभी सी कुरूप-मोटी, थुलथुली हो या नन्द्राणी ताई की तरह तेज हवा के डर से खाम्बा पकड़ लेने वाली सुरमई की खींची लकीर से भी पतली, मगर कोई हो तो जो सुबह काम पर जाते बगड़ावत से, दरवाजे की ओट में खड़ी होकर धीरे से फुसफुसा कर कहे.. "ऐ जी सामकू थोड़ा जल्दी आईयो..."

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बींदणी

वह उसकी मोटी-मोटी कजरारी आँखों से अपनी काणी सी मिचमिची आँखों को मिलाते हुए मस्ती में कहता "क्यों..... कोई खास बात है आज सामकू ?"

"कुछ नई जी, थानै तो गैर बखत भी सरारत ई सरारत सूज्झै...." वह तुनककर कहती

"फेर जल्दी कंईयाँ आणो है ?"

"जलावण खतम होरी है.... थोड़ा ढाँकर काट की ल्याणा है!"

"धत् तेरी..." वह माथे पर हाथ मारके कहता "ओ धणौण... मेरी किस्मत नै लगा ले चूल्हे में...."

"कईयाँ कहो हो जी !" कहते हुए वह दोनों हाथों को अपने कानों पर रख लेती... "थैं तो धणी हो म्हारा"

"ठीक है.... ठीक है....." कहते-कहते अपनी लुगाई की बात पर बगड़ावत की छाती फूल जाती... पण कहाँ ऐसी किस्मत..? किसका ऐसा भाग....?"

बगड़ावत ने अपनी नजर लड़की के अंग-प्रत्यंग में गढ़ा दी.... बोला

"सहर क्यों जाणो है ?"

"बठै चाच्चा रैंह मेरे" उसने सिर झुकाते हुए कहा

"समझूँ.... समझूँ... मैं.... घर तै भाज कै आई है ना ?"

बगड़ावत ने पूछा तो उसका चेहरा झुक गया... वह चोरी पकड़ी जाने पर अपने आपमें सिमटने लगी

"रुपया ढाई सौ ल्यूंगो... कम नहीं ज्यादा.... मंजूर हो तो बैठ जा... अर टेसन छोड़ दयूंगो" सुनकर लड़की आगे बढ़ी... बोली "कठै बैठूँ ?"

"ला हाथ पकड़ा", कहकर बगड़ावत ने अपना हाथ बढ़ा दिया, लड़की कुछ झेंपी, उसने हाथ बढ़ाया... झिझका बगड़ावत भी, पर उसने हाथ पकड़ लिया... वाह कितना नरम-मुलायम हाथ, बगड़ावत के शरीर में भीतर तक बिजली दौड़ गई। लड़की ने अपना पैर ऊँट के जुआ सम्भालने वाले डन्डे पर रखा, उसकी चिकनी-कोमल पिंडलियां, बगड़ावत की नजर में कौंध गई। उसे अपने शरीर में सिरहन सी होती लगी

"ऊपर चढ़ाओ जी" लड़की कह रही थी

"ओ... हाँ...." बगड़ावत की तन्द्रा टूटी उसने लड़की का

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हाथ पकड़कर खींचा... लड़की ऊपर चढ़ते-चढ़ते सम्भलते-सम्भलते गद्दी पर आ बैठी... उसकी चूंदड़ी हटी, सीने पर दृष्टि पड़ते ही बगड़ावत सुध-बुध खोता सा लगा.. .. "वाह रे भाग... पैंतीस साल में पहली बार कोई जवान लड़की उसके इतना पास और वह भी एकदम सटकर बैठी थी. .. गाड़ी चलने पर गिरने के डर से लड़की ने बगड़ावत की बाँह पकड़ ली.... बगड़ावत को अपना शरीर पिघलता सा लगा, ऊँटगाड़ा दौड़ने लगा था... सोचले लगा वह, जब कोई औरत. .. आदमी से ऐसे सटकर बैठती है तो आदमी कैसे सम्भालता होगा अपने आपको... कब तक संभाले रखता होगा? लेकिन बगल में औरत बैठी हो... होले-होले, मीठी-मीठी बातें करे तो पुरुष अपने आपको मर्द महसूस करता है। बगड़ावत के साथ तो यह पहली बार था... क्या पता शायद यही आखिरी बार भी हो...? कुछ पल... केवल कुछ पल जो मर्दानगी का एहसास करते हुए भरपूर जिये जा सकते हैं, वह लड़की की ओर झुकते हुए उस पर दबाव बनाने लगा, उसने अपनी मूँछों पर मरोड़ लगाई

"नाम कांई री तेरो ?" बगड़ावत ने अपनी बाँह उसकी बाँह से रगड़ी, वह कुछ नहीं बोली, उसने कुछ ऐसी दृष्टि से बगड़ावत की ओर देखा जैसे वह सबकुछ समझ रही हो। उसकी आँखों की ओर देखकर पस्त हो गया बगड़ावत। शरीर के रोम छिद्रों ने एक साथ बहुत सारा पसीना उगल दिया, तर-बतर हो गया बगड़ावत, उसने मुहार खींची, ऊँट एकाएक रुककर गुस्से से बुक्कालने लगा। बगड़ावत गाड़ी से नीचे उतरा... लड़की हैरान हुई। बगड़ावत ने बीड़ी जला ली और धीमे-धीमे कश भरता हुआ दूर रेत पर फुदकती टिटहरी को देखने लगा। वह अपने आपको सामान्य करने का प्रयत्न कर रहा था। कुछ देर बाद वह संयत हुआ, आ बैठा गाड़ी पर,

"चल शेर" कहते हुए उसने मुहार हिलाई, ऊँट सड़क पर दौड़ने लगा, अन्धेरा घिर चुका था, वैसे चाँदनी रात थी। ब्याह न हो पाने का दुख बगड़ावत से ज्यादा उसकी अंधी-धुंधी माँ को था। वह अपने काले-कलूटे, लंगड़े बेटे की काणी सी मिचमिची आँखों में सपने देखती तो दुख से भर जाती।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बींदणी

सिलवर की थाली में टैंटी के अचार से ज्वार की रोटी धरते समय वह बगड़ावत के सिर पर हाथ फिराती...

"कांई ओ बगड़ावत... बेट्टा मन में बाज्जोड़ी सहनाई... घर में तो बाज्जैगी ना ?"

बगड़ावत मिचमिची आँखों से माँ की ओर देखता, माँ की आँखों में सपने अभी तक बाकी थे

"तू दूर-दूर तक जावै... कोऐ किसी भी मिल ज्या काणी, .. भैणी..., लूली-लंगड़ी, काली-पीली.... लिआ... कम तै कम रोट्टियाँ का सुख होज्या तेरा, तो मैं सीली नहाऊँ !"

"बनड़ी नहीं माँ सा... मेरे भाग में ही नहीं" वह रोटी के टुकड़े में दो चार टैंटी लेकर मुँह में ठूंस लेता।

"किसनै भगा ल्या बेट्टा, बेमेल बी होगी तो भी चूँदड़ी में ले ल्यूँगी.... पोते-पोतियाँ का मुँह दिखा देगी, तो उसके पाँ सिराऊँगी"

"सुपणे देखना छोड़ माँ सा"

"कांई ओ बगड़ावत.. बेट्टा उड़ीसा-बंगाल चल्या जा... खरीद ल्या दाम देकै, बिण्या बींदणी... घर मरघट बरोबर..."

"रहणे दो माँ सा..मेरा कुण सा महाराणा का सिंहासन है जो मेरे बाद खाली पड्या रह जागा..."

सोचते-सोचते बगड़ावत लड़की के मुँह की ओर देखने लगा... चूंदड़ी से उसका चेहरा दमकता सा लगा.... सेकसाई की ढाणी नजदीक आने लगी थी... नरैण पटवारी के घर पर लगे लट्टू की लाइट... लड़की के बोरले के नगों पर पड़ी तो बोरला चमकने लगा... मन मचल गया बगड़ावत का, उसने मस्ती में आकर गाया

"म्हारी मंगेतर बोरले वाली...,
म्हारी मंगेतर बोरले वाली....
टोपी वालो री नवाब आयो री"

लड़की ने घूमकर उसकी ओर देखा... फिर वही आँखें। बगड़ावत का चेहरा फक्क पड़ गया, उसने उन आँखों से नजरें हटा ली

"औरत, चाहे साली छोटी या बड़ी, चाहे कितना भी कम जानती हो... पर मरद की हर हरकत को समझती जरूर है,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

वह अभी तक भी बगड़ावत की ओर देख रही थी. हैरान-परेशान ऐसे. जैसे वह पुरुषों पर अपने विश्वास को तोल रही हो और पा रही हो कि हर पुरुष एक जैसा ही होता है। ऊँटगाड़ा रुक गया. बगड़ावत जल्दी से नीचे उतरा. वह गाड़े के टायरों को जोरों से थपथपाता. दबाकर देखता हुआ. गाड़े के पीछे ही पीछे कई बार घूमा... सत्य में तो वह लड़की की सबकुछ समझ रही आँखों से बचने की कोशिश कर रहा था. कुछ देर बाद संयत हुआ वह... कि लड़की ही तो है. अकेली. वह भी उसी पर आश्रित. नारी के प्रति अत्याचार कर सकने के प्रकृति प्रदत्त अधिकार की भावना को मन में भरे एक मर्द की भाँति वह लौटा और आकर बैठ गया गाड़े में, जैसे उसने लड़की के प्रति कोई अपराध किया ही नहीं था। कुछ किया भी था तो वह एक पुरुष का अधिकार ही तो था। हालात चाहे जो हो एक स्त्री पर दबाव बनाया जा सकता है।

"ओ बणी-ठणी तणै नाम कोणी बतायो आपणो ?" लड़की "बणी-ठणी" के सम्बोधन पर चकित हुई. उसने बगड़ावत की ओर देखा

"इस तरियाँ के देक्खै.... छोरियाँ की मोटी-मोटी काजल लगी आँख्याँ. मरद ने प्यार तै देक्खण खातर हुया करैं"

सुनकर लड़की का चेहरा झुक गया... वह अपने आप को लुटती-पिटती पा रही थी

"अच्छा णू बता बणी-ठणी"... घर तै क्यूँ भाज्जी ?

"माँ मणै एक बूड्ढे के हाथ बेचणो चाहवे थी"

"और तणै जवान चहिए थो....." कहते हुए बगड़ावत हँसा. उसे अब इस बात की कतई परवाह नहीं थी कि लड़की अपने भीतर कितनी आहत और अपमानित थी. वह तो केवल एक ही अहसास से भरा था कि अन्ततः पुरुष विजेता होता है और स्त्री की नियती यह है कि वह उसे विजेता बनने देती है मजबूरी. क्षोभ. ग्लानि. अपमान. शर्म.... लज्जा. विरोध. संघर्ष के बावजूद वह जीत जाने देती है पुरुष को

"था॰ घर में कौण-कौण है जी" लड़की ने सिर झुकाए हुए ही पूछा. चकित हुआ बगड़ावत. वह समझ गया था कि लड़की उसके बनाये दबाव से बचने के लिए बात बदल रही

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

है.... वह हँसा

''एक माँ है, जो अव्वी तौली बींदणी आण की बाट देख री ऐ.... रोज की रोज बक्से नै खोल के बैठ जा है, सितारे-गौटे जड़ी चूँदड़ी, घाघरे ने छाती तै लगाकै घर में बींदणी आण की टेक करै। एक यो मेरो सेर सै'' कहते हुए उसने अपने ऊँट की ओर इशारा किया, ''सुबह जब इसणै चारा गेरूँ तो गुस्से से मेरी कानी देखै जैसे मेरे हाथ तै जीम-जीम कै अघा लिया हो, इब बेरा नै कद चुड़ले वाले हात्थां तै चारा जीमण ने मिलेगा. .. अर मैं इसतै कहूँ जीम ले मेरे सेर, तेरे भाग में के, चुड़ले वाली के हात्था के छप्पन भोग तो मेरे भाग में भी नहीं सैं, और एक मैं सूँ घर में, जिसको जी इबी तक तो किसै छोरी पै आया कोनी, न्यू लाग्गे अब बेमात्ता मेरे जोट की छोरी बणानो ऐ भूलगी...'' कहकर बगड़ावत चुप हो गया। लड़की उसकी बातों को सुनकर मन ही मन हँस रही थी.

''वैसे एक बात कहूँ बणी-ठणी ?'' कहा बगड़ावत ने तो लड़की ने आँखों में सवाल लिए उसकी ओर देखा ''तू मेरे घर चली चलै मेरे लारै... तो मेरे घर के कुठले चाक, कटोरी-थाली. ... सबनै मालकिन मिल ज्यागी'' लड़की चुप ''बेसक रोज गाल काढ़िये, कोसिये, माँसा चाँदी की तगड़ी.... बजणी पजेब.... असली हाथ दाँत के बाँह भरके चुड़ले पहणावैगी''

लड़की चुप

''बणी-ठणी, मैं अभी तो जवान सूँ, दिसावर भी कोनी जाऊँ.... धरवालो वो जो शाम ने घर लौट के आजा... मेहणत-मसक्कत आलो सूँ . जुगार बी कोनी खेल्लूँ ''लड़की तब भी चुप

''कालो हूँ तो गोरी तू भी कोनी, मैं बदनसीब सूँ तो नसीब वाली तू भी कोनी, मेरा घर बार अभी बस्यो नहीं सै तो घर बार की तू भी कोनी, मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है तो कोई तेरा भी कोनी, तेरी मर्जी जिस तरियाँ रहिए, रोक्कण-टोक्कण आली कोए जिठाणी, दयोराणी भी नहीं सें, चल मेरे लारै... अपणी दुनियाँ बसावेंगे दोन्नूं मिलकै....''

लड़की तब भी चुप रही.... सिर झुकाये

''राज करैगी, कुएँ तै पाणी भरकै मैं खुद ल्याऊँगो, जलावण

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

खात्तर ढाँकर ल्याण भी मैं खुदी जाऊँगो, चार लत्ते... आपणे तो मैं आपैए धो ल्यूँगो, रोटी.... माँसा नहीं तो मैं खुद पो सकूँ हूँ'' कहते-कहते पूरा का पूरा बिखर गया बगड़ावत, उसका विजेता का सा दर्प.... एक औरत के सामने कण-कण, तिनका-तिनका हो रहा था.

लड़की चुप थी, वह देख रहा था, आशा, उम्मीद से उसकी ओर...., और लड़की की चुप्पी.... बगड़ावत की पराजय को प्रत्येक पल और पुख्ता कर रही थी

''तेरी मर्जी...!'' कहते हुए बगड़ावत ने ठण्डी साँस भरी ''चल मेरे सेर'' उसने धीरे से मुहार हिलाई.... ऊँटगाड़ा चलने लगा।

''या सरड़क खुद कहीं ना जात्ती.... सालों होगे देखते-देखते, हमनैई चलना पड़ै है.... चलरे हैं.... कोऐ साथ मिलज्या..... तो सफर आसान हो जा है, नईं तो तू बदनसीब.... मैं बदनसीब और मेरा यो सेर बदनसीव!'' बगड़ावत बड़बड़ा रहा था किन्तु उसके भीतर पल-पल एक तिलमिलाहट बढ़ रही थी, भीतर का पुरुष था जो एक औरत से हार जाने को तैयार नहीं था. .. बदनसीब भटियारे की सराय धीरे-धीरे पास आने लगी थी. .. खण्डहर, टूटी सराय.... पेड़ों झाड़ियों की सघनता थी... एक कुआँ जो थोड़ी अच्छी हालत में बचा हुआ था। काफी देर तक वह कुछ नहीं बोला, लड़की तो चुप थी ही। बगड़ावत के हृदय में पाप का षडयन्त्र चलने लगा था उसने गाड़ा रोक दिया। गाड़े में रखी बाल्टी और रस्सी उठाई और कुएँ की ओर चल पड़ा

''पाणी पीवै और हाथ मुँह धोवे तो आ ज्या बणी-ठणी'' कहते हुए वह चल दिया। कुछ सौ सवा सौ कदम दूर ही था आधे रास्ते पर ही उसने घूमकर देखा वह गाड़े से उतर रही थी।

बगड़ावत ने बाल्टी कुएँ में उतार दी, पानी भरकर खींचने लगा.... बाल्टी बाहर निकालकर उसने जगत पर रखी और मुँह धोने लगा... फिर पानी पिया। बाल्टी खाली होते ही... लड़की ने बाल्टी लेकर कुएँ में उतार दी, बगड़ावत पास बने टूटे-फूटे चबूतरे पर बैठ गया... वह इस उधेड़बुन में था कि क्या करूँ, कैसे करूँ.... सामने लड़की पानी खींच रही थी।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उसकी पतली-कमर... भारी कटि... बगड़ावत के गले में जैसे कुछ अटक गया... वह तेजी से उठा कि यही मौका है, उसने पास आकर लड़की को दबोचने के लिए हाथ बढ़ा दिये। लड़की ने उसकी जूतियों की आवाज पर घूमकर पीछे देखा

''थम बैट्ठो जी, भारी कोनी, मैं खैंच ल्यूँगी''

सुनकर बगड़ावत का दिल बैठ गया, वह थके टूटे कदमों से पीछे लौट पड़ा, उसके कान सांय-सांय कर रहे थे, वह रुका, पच्चीस-तीस कदम पर टूटी खण्डहर हुई सराय थी, मौका था.. जगह भी थी... दूर-दूर तक न कोई था, न किसी के आने का अंदेशा था, एक अकेली लड़की कितना विरोध कर सकती है... वह पलटा... लड़की जगत पर बाल्टी रखे मुँह धो रही थी.... उसकी चूँदड़ी हटी थी, साँवला, सुन्दर, छोटा बटुए सा चेहरा.... बगड़ावत की साँसें धौंकनी सी चलने लगी। शीशे सितारे लगी काली कुर्ती के भीतर से दहकती, दमकती छाती, गदराये उसके अंग, बगड़ावत के सिर से पैरों तक रक्त तेज़ी से दौड़ने लगा, वह पागल हो उठा, अब नहीं तो कभी नहीं, सोचते-सोचते वह चला उसकी ओर.. लड़की ने आहट पाकर चेहरा उठाया... अपनी ओढ़नी सम्भालकर ढक लिया उसने अपने आपको...

''ऐ जी.... थाने सराय के बदनसीब भटियारे-भटियारी का किस्सा सुण्या है''

स्तब्ध, विस्मित और वाकशून्य था बगड़ावत, उसने ना में सिर हिलाया.

''बहुत दर्द भरा किस्सा है जी, बैट्ठो, मैं सुणाती हूँ'' उसने कहा तो धम्म से उस टूटे चबूतरे पर बैठ गया बगड़ावत

✦

''वो देखो जी'' लड़की ने दूर बावड़ी की ओर इशारा किया....'' वा बावड़ी, यो कुओं और या सराय, राजगढ़ के हुकुम जी ने अपने सिवाणे के गाम सिवाणसर तै आद्धे कोस दूर बणवाई थी और सराय में थेई कितणे जीव.... चन्दर भटियारो.... उं की जोड़ायत श्यामली और उण को एक छोरो बिज्जी.... तीनों ब्हौत सुखी..... खुशी.....।

एक बै कुछ सेठ लोग दिसावर जात्ती बार ठहरया सराय

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

में, भटियारा और भटियारी बोले "म्हारा टाबर नै बी दिसावर ले जाओ, ब्यापार सीख जागो," सेठ बोल्या "भटियारे म्हारे दिसावर जाण को तो टैम है, पर वापस लौटबा को कोई टैम ना, पांच साल बाद भी और दस साल बाद बी।" पण भटियारो नहीं मान्यो, बोल्यो "जो वी हो जी इसनै अपनी चाकरी मैं ले जाओ." और उं को छौरो सेठ की गैल्यां दिसावर चल्यो गो।

आते-जाते राहगीर.... दिसावर जात्ते और लौटते सेठ-साहूकार....वणिए सराय में ठहरते तो सेवा के बदला में कुछ न कुछ दे जात्ते.... और राजगढ़ के हुकुम जी की आज्ञा ते सेकसाई के ठिकाणेदार तै मिलती एक मोहर चाँदी की अलग...." कहकर लड़की रूकी.... फिर उसकी पलकें कुछ झुक गई.... देखा बगड़ावत ने उसके चेहरे पर घिर आई हलकी सी लाज की लाली को..... वह सोच रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा है... लड़की ने आगे कहा....

"हुकुम जी री चाकरी.... और बंधी-बंधाई हर महीने एक मोहर चाँदी की.... सिवाणसर के रिसाल सिंह ने या सोच कै अपनी छोरी नरूकी को ब्याह.... चन्दर भटियारे के छोरे के साथ कर दियो.... पाँच साल की छोटी सी बींदणी..... सिर पै सुहाग की रखड़ी.... गोटे सितारे जड़े ,छोटे-छोटे जयपुर की चूंदड़ी, लहंगा-चुन्नी.... पण सुहाग थे कहाँ...? सुहाग को छोटो सो साफ्फो..... ऊं की गैल फेरा हुआ.... नाच-गाणा... शहनाई...ताशे... सबकुछ, फिर दावत-भोज.... छोटी सी नरूकी ने देखा माँ जैसी सास का लाड-दुलार, पिता जिसा ससुर का प्यार आसीर्वाद... फिर बखत बीत्या, अर वा छोटी सी बींदणी. ... बड़ी होती गई.... सिवाणसर के बाहर आधे कोस दूर सराय के पास बणी बावड़ी के कुएं ते पाणी भरणे जाती तो देखती. ... अरमान हसरत और चाव तै अपनी ससुराल इस सराय नै.. ... खो जाती सुपणो में.... बावड़ी की जगत पै पीतल की टोकणी धरे देर तक देखती रहती सराय नै..... दिखती दूर तै उसकी सास... दिखतो दूर तै मैडी में बैठयो चिलम गुड़गुड़ातो ससुर.... सबकुछ दिखै थो, कुछ नहीं दिखै थो तो उसको सुहाग.... उसको आपणो धणी..." कहते-कहते लड़की के चेहरे पर एक उदासी सी उभर आई... सूनी पथराई सी आँखें।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बींदणी

सराय के पास बावडी और बावड़ी के पास कुआँ..... कभी-कभी. . जब पाणी भरने आई उसकी सासू उसे मिल जाती तो नरूकी की आँखों में चमक होती और होत्तो एक सवाल... तब सासू जी पास आत्ती. नरूकी के सिर पे प्यार और आसीर्वाद का हाथ धरती. फिर नरूकी के चांद से मुखड़े नै अपनी हथेलियों में लेकर कहती.....।

"तू के समझै बींदणी.... बेटा देखवा णै मेरी छाती ना हूकती. ... आ जागो तेरो धणी.... तो दूसरे दिन तैने सिवाणसर तै विदा कराकर ले आऊँगी..... मैं भी तो पोते-पोती को सुख देखणो चाहूँ अब"

इसी आसा-उम्मीद में ही तो जी रही थी नरूकी. पाणी भरने बावड़ी आती तो आधे कोस के टीब्वों भरे रस्ते पर उड़ती चली आती.... पर वापिस लौटते बखत पाँव जैसे चिपकते रेत पर... . घूम-घूमकर देखती सराय की ओर.... कि पीछे से आवाज आये.... कि ओ री बींदणी ले आग्या तेरा धणी.... पर आवाज आयी तो... मन पक्का कर लेगी.... पर देखेगी नहीं घूमकर..... कहीं भूतिया महल की तरह हवा में गुम न हो जाये सबकुछ.. .. खुली आँखों तै सुपणे देखती मीठे-मीठे.... जिन सुपणों में धणी होता ऊं का. ऊं के साथ छेड़खानी करता.... बैठा... बतियाता... ऊं नै बाहों में लेकर प्यार करता... अपने सुपणों में वा चूल्हे के पास बैठी आटा उसण रही होती... सब्जी काट रही होती... और कुछ दूर सराय के आंगन में खाट पर बैठकर चिलम गुड़गुड़ाता ऊं का धणी ऊं की ओर देख रहा होता... वह देखती सुपणे में कि वह अपने धणी से कह रही होती

"ओ जी धणी.... सहर जाओ तो म्हारी पायल में बड़ा-बड़ा घूंघरा जड़वा कै ल्याईयो"

अर वो हंस कै कहतो "ओ री जोड़ायत...घूंघरा तो जड़वा दयूंगो...पण फेर पायल भारी हो ज्यागी.....चल्या कोनी जागा तेरे पै"

"घूंघरा जड़वाणा है.... कोऐ घन्टी ना लटकवाणी पायल में" सुनकर हंस पड़ता ऊं का धणी, ऊं का भरतार....

वह देखेगी..... देखती रहेगी.... अपने धणी को देखने से कभी जी भी भरता है ?.... मैं तो पलक तक कभी न झपकाऊँ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

और कभी नरूकी सुनेगी....

"ओ री बींदणी.... घर में बासी झाड़ू भी ना लगी अब तक, तूं कर के रही है....?, उठ जा अब...., देख रात फिर आवैगी... अर यो बिज्जी भी कठै कोनी जावै।" सुनकर हड़बड़ा कर उठेगी नरूकी... कपड़ों को जल्दी-जल्दी ठीक करती, हाथ पकड़ लेगा ऊं का धणी.... वह फुर्ती से अपने आपको छुड़ाकर बचाते हुए....घूंघट करते हुए भागेगी.... "आई.... सासू माँ...."

कभी सासू चिल्लायेगी "अरी ओ बींदणी.... चूल्हे पे सब्जी चढ़ाके.... मैड़ी में घुसी पड़ी है.... के तो जली सब्जी ख्वावैगी, के आधी कच्ची" वह चौंकती और सिर पर रखी टोकणी गिरने को हो जाती। सखियाँ रेत के टिब्बों के बीच.... गाते हुए बावड़ी के कुऐं तक पाणी भरने जाती.... टिब्बों के बीच गूंजती उनकी खनखनाहट भरी आवाज....

"पीतल की मेरी गागरी...दिल्ली से मोल मंगाई रे...
पाँवों में घुंघरू बाँधके पणिया भरण हम जांई रे"

पर नरूकी...! न गीत में ध्यान होता... न सुर में, उसकी आँखें होती तो टिब्बों पर कि इस टिब्बे के उतरते ही वो सराय।

सखियाँ छेड़ती उसे... "ओ छोटी भटियारी....जीजी जवान तो हम बी हैं, और सारी की सारी ब्याही थ्याही... पर तेरे सुपणे अनौखो... हममें से किसी ने बी अपने-अपने धणियों की सकल-सूरत नहीं देखी है...., देखी होगी.... तो पता नहीं.... सभी का छुटपन में ही ब्याह हुआ... जब धणी बिदा करने आयेगा... तो चली जायेंगी उसके पीछे-पीछे.... सुपणे क्या देखना? सुपणे सच ना होते" पर नरूकी कुछ जवाब नहीं देती, खोई रहती सुपणों में।

सब कुछ होता उसके सुपणों में... पाँच हाथ का कड़ियल जवान, अंगरखे के खुले बटनों से बाहर झलकती उसकी बालों भरी चौड़ी छाती.... मजबूत लम्बी बांहें... घनी बड़ी-बड़ी नुकीली मूंछें... भरा चेहरा... पर चेहरा कहाँ था...? चेहरा ही तो नहीं था, धनी का, नरूकी के सुपणों में.... देखा होता तो होता। नरूकी के सुपणे एक बार फिर से फैलते चले गए। एक दिन. ... नरूकी बावड़ी पर टोकणी रखे सराय की ओर देखती खोई

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

थी.... आहट पर चौंककर पीछे देखा... कोई राहगीर था

"टोंकणी उँचा दयूं कै ?"

"अंहु.... मैं उंच ल्यूंगी... भारी कोनी..... थैं बताओ जी.... पाणी पीणो है के ?"

"हाँ.... प्यासो तो सूँ पण" कहा राहगीर ने "तो भी रहण दे. .. नहीं तो तुझे दोबारा कुऐं में से पाणी खींचना पड़ेगा...."

तो के..? पुन्न तो मिलेगा..., नईं तो अपणे गाम पहुँचकर सबसे कहोगे अक सिवाणसर की बावड़ी पै एक पणिहारी मिली थी, उँ नै पाणी बी कोनी पियायो...

"नहीं कहूँगा किसी से.... क्यूंकि मैं आग्गै किसै बी गाम कोन्नी जाऊं... बस इसी सराय तक जाऊँगो" हंसते हुए कहा उसने, "या सराय ही है मेरो घर-ठिकाणो..."

सुनकर चौंक गई नरूकी, उसका जी एकदम तेजी से धड़का, कुछ पलों में ही पसीने-पसीने हो गई वा, ठगी सी देखाती रहगी वा, बिण्या पलक झपकाये

"न्यूं बड़ी-बड़ी आख्या करकै कईयाँ देख्खै, सींग लिक्ड़याया के मेरै सिर पै?" उसने कहा

अचानक नरूकी को कुछ ख्याल आया और उसने हड़बड़ा कर घूंघट कर लिया.... वह थोड़ा पीछे हटी और बावड़ी की दीवार की ओर मुँह करके खड़ी हो गई, लाज से सिमटी, सुकचाई सी, हैरान थी वो।

"थम कूण हो जी....?" बहुत धीमी आवाज पूछा नरूकी ने, उसने ओढ़ली के पल्लू का सिरा दाँतों में दबा रखा था।

"मैं... बिज्जी... मेरो मतबल बिजय सिंह...! पण तूने ये... ये घूंघट क्यूँ किया मुझसे ?"

नरूकी का बरसों पुराणा सुपणा सच होकै उँ के सामणे खड़्या था

"थैं धणी सो जी मेरा...!" धीरे से कहती हुई नरूकी जैसे सिमट रही थी अपने आप में।

"वो किस तरियाँ... और तेरो नाम कांई है"

"मैं.... मैं नरूकी!" अटकते हुए बोली वह... "सिवाणसर के रिसाल सिंह की छोरी.... बारह बरस पहले थारे और मेरे घर क्यां नै म्हारो ब्याह कर दियो थो जी....!" कहते हुए नरूकी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

पाँव के अंगूठे से जमीन कुरेद रही थी।

"पण मैं तो अठे थो नहीं... फिर म्हारे दोनुआँ को ब्याह किस तरियाँ हुयो ?"

"थारे साफ्फे के गैल्या फेरे हुए थे जी मेरे"

सोच में पड़ गया वह...... फिर हंसा .... बोला

"मेरा धन भाग...... बारह बरस सेठ की चाकरी करी....... दिसावर गयो....... व्योपार सीख्यो........ धन कमायो..... अर घर आत्ता ऐ बींदणी मिलगी," कहते हुए वो आगे बढ़यो, अर अपने दोणू हाथ.. पीछे से नरुकी के कन्धों पर रख दिये....... नरूकी के बदन में एक सिरहन, एक बिजली सी दौड़गी........ उसने उं का हाथ हटाण नै अपने कन्धें मोड़े

"हटो जी...... कोऐ देख लेगो तो ?" कहते हुए नरूकी लाज से पानी-पानी हो रही थी, पण उसने कन्धों को पकड़ कर नरूकी को अपनी ओर घुमा लिया

"अच्छा.......... तो वा तूं ऐ थी जो मेरे सुपणे में मेरा पाँ दबाया करती"

"हटो जी.........।" कहते हुए नरूकी ने अपने तन-मन के भीतर उठता अजीब सा हिलकारा महसूस किया......, अर तभी उसको धणी ने घेर ली वा बावड़ी की दीवार के सहारे....... नरूकी तो घबरा गी एकदम.......

"मुने तू ढंग तौ तो देक्खी ही ना..." कहकै धणी ऊं का घूंघट ठावै लाग्यों........ नरूकी तो घबरा गी एकदम

"ओ जी.......... ओ जी... हाथ जोड़ूं हूं थारे" गिड़गिड़ाते हुए नरूकी ने अपने दौनों हाथों की हथेलियां घूंघट के उपर से मुँह पै धर ली

"अभी नहीं जी...., मै तो थारी ही जोड़ायत.......... पण ऑट है अभी जी, मुनै पहले विदा करवा कै.......... अपणे घर ल्याईओ. ...."

वह समझ गयो.... कुछ देर चुप रइयो...... हट गयो दूर, फेर कहण। लग्यो

"अच्छा नरूकी......... एक बात सोचूं मैं.......... मै दस-बारह बरस को देख्यो थो मेरा मां-बापू नै, आज बारह बरस बाद वे पिछाणेंगा मुनै.........?"

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बींदणी

"पिछाणेंगा क्यूँ ना........ माँ बापू है जी"

"याऐ तो देखणो ऐ.... राहगीर की तरियाँ जाउँगो.....ठहरूंगो सराय में...... कुछ बी कोनी बताउँ........ कल सुबह बताउंगो"

"थम जाणो जी..... थारे अर माँ बापू के बीच में......... मै के बोलूँ ?"

और चल पड़ा था सराय की ओर......... उसका धणी .... लंबा तगड़ा......... पांच हाथ का.........मुग्ध सी देखती रही नरूकी, फिर उसने पाणी की टोकणी उठाई और चल पड़ी सिवाणसर की ओर, उसकी पायल की आवाज में आज कुछ और अजीब सी छनछनाहट उठ रही थी........, रेत का हर टिब्बा उस के पांव की धमक से दलक कर तमक रहा था, वह चाहती थी....... एक बार... बस एक बार........... वह घूमकर देखे पर उसने देखा नहीं..... डरती थी..... कहीं सुपणा ना हो..... घूमकर देखने से सब कुछ गायब न हो जाय भूतिया महल की तरह.. ...।

उसके बाद दिन बीता............रात हुई... पर आँखो में नींद कहां थी नरूकी के............ नींद अर चैन सब कुछ ले गयो धणी, कैसे देख रइयो थो उसने........ अजीब सी प्यार-हसरत भरी नजरों से मूंछा पें मरोड़ लगातो हुयो......... यूं ही करवट बदलते रात कटी.., दूसरा दिन आया.... कयामत का दिन था.. .... पहाड़ जैसे एक-एक पल वाला दिन........ हर आहट पर नरूकी झरोके से दरवाजे की ओर देखती............ पता नहीं वह क्यों नहीं आया अभी तक, छत की मुंड़ेर पर देखती.....मुंड़ेर खाली थी.... सुण्या था उसने, जिस दिन कोई घर मे आवै है तो उसतै पहले मुंड़ेर पै-कागले बोलवा लागें, ... पर कोई कागला नहीं बोला ?........... पल-पल कर दिन ढलने को होता रहा............ फिर एक वैसी ही रात......... और उसके बाद वैसा ही एक दिन......... आज जरुर आवेगा धणी, दिन बीतता रहा........ माँ पल-पल समझ रही थी बैचेनी को...... उसने पूछा भी।

"नरूकी....! बात कांई है लाड़ो..... जी ठीक नहीं है कै तेरो ?"

"ठीक हूँ माँ सा।"

"ना बेटी... मै माँ हू तेरी.... कोई बेचैनी है जरूर तुझे"

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बींदणी

"कुछ नहीं मां सा, बस थोड़ा सा यूं ही"

"बैटी तू दो दिन तै पाणी ल्याण बी नहीं गई, मूं ने ल्याणें पड्यो"

"कल मै ले आउँगी मां सा"

और चली गई मां..... पीछे रह गई नरूकी.... शायद वह सहर गया हो, कपड़ा........... जेवर-सामान ल्याणे.... जयपुर की लहंगा, चुन्नी..... या फिर सितारे-मोती जड़े घाघरा-चोली...... बड़े-बड़े घूंघरा वाली पायल....... हाथी दांत के कड़े... जिन्हें पहना के सासू मां नरूकी ने पूरी की पूरी मारवाड़ री औरत बणा देगी.. मूछां पे मरोड़ लगातो आगे-आगे चालेगो उसको धणी... अर पाछे-पाछे, धीरे-धीरे मेहंदी वाला पां धरती चालैगी उसकी नरूकी, गांव के सिवाणे तक विदा कराणे आये लोग-लुगाई.... लौट जायेंगे, अर नरूकी हो ज्यागी सुसराड़ की... हां सहर ई गया हूंगा आज....... बीदंणी बिदा करा के ल्याणें के लियां कपड़ा जेवर ल्याणा भी तो जरूरी हैं, खाली हाथ आया तो गाम वाला बोल मारेंगा.......

यूं ही सोचता सोचता दिन बीत्यों.... फिर एक रात और....... ... और रात भी बीती ..तीसरो दिन, उस दिन आई नरूकी.... पाणी ल्याण, सराय के पास बावड़ी वाले कुऐं पै। कुऐं की जगत पे टोकणी धर के देख्या सराय की ओर......... दूर तै दिखे....... .. चाक, कटोरी.........कठौता लोटा बाल्टी........ खाट पै बैठयो चिलम खींचतो ससुर.......... चूल्हा लारे बैटठ्ी, आटा उसणती सासू.....नहीं दीख्यो तो नरूकी रो आपणों धणी.....।

जी नै डाट नहीं पाई नरूकी........एक ई तो टिब्बो थो बीच में, पायां में पंख लाग गया, भागी वा सराय कान्नी....., तेज-तेज धड़कता कलेजा............ जोरां तो हांफती नरूकी, अर जा खड़ी हुई सास के सामने ...... घूंघट काढ़्यॉ.......... सासू हैरान

"बीदंणी............! तूँ............? क्यूँ आई........? ऑट तोड़नो अच्छी बात नहीं.......... अपसुकण हो"

"सासू जी......... म्हारो धणी कहां है ?" कहते हुए नरूकी की आंखें सराय में इधर उधर देख रही थीं, सासू ने गौर से उसे देखा, नरूकी को ससुर, खाट पै तै उठकै...... उन के पास आ गया

"सासू जी..........म्हारो धणी कहां है ?" जोर से पूछा नरूकी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ने, सासू आगे बढी..., उसने नरूकी का घूंघट ढका चेहरा अपने हाथों के बीच में ले लिया..............

''बींदणी जद आवेगा ना.. तो सब तें पहल्याँ......... तेरे पीहर खबर करूंगी बेटी''

''पण वो तीन दिनां पहले आयो थो.....! चीख पड़ी नरूकी

''ना बींदणी....... आयो होतो....तो तेरे तै छिपाती मैं..? चिड़िया को बच्चो नहीं, जो ओढ़णी रा पल्ले में बांध ल्यूंगी..... पूरे पांच हाथ को गबरू होगो................''

''हाँ-हाँ.......... सासू माँ.... पांच हाथ को गबरू ही सै'' बावड़ी के उस कुआं पै मिल्यो थो मुनै, कहै थो.......... राहगीर बण कै ठहरूंगो सराय में और देखूंगो, बारह बरस बाद मुनै मां-बापू पिछांणैगे अक....ना''

''कांई कहरी ऐ बीदणी.......।'' दौनो के मुंह से अचानक निकल पड़ा..

''ओ बिज्जी थो म्हारों!''

''हां हां सासू जी...... ओ बेटो थो थारो'' चिल्ला कर बोली नरूकी, वह फटी-फटी आँखों से दोनों के चेहरों पर से उड़ते रंग को देख रही थी, अन्जानी आंशकाओं से जी धड़क रहा थ उसका.............फिर जोर से चीखी नरूकी

''कहां है सासू जी म्हारों धणी ?''

पर उन दोनुआं ने कोई जवाब नहीं दिओ, दोनुआ के मुंह सै अजीब सी कराहट की आवाज निकली

''आह.....। यो हमनै के कर दिओ'' कहते-कहते दौनों छाती पकड़े जमीन पै बैठते चलेगे........ लुटे-पिटे.......... दुखी से...... अपणी हथेलियां तै अपना मुँह ढके.......... उठे वे....... दौनो एक दूसरे का हाथ पकड़े........... चुपचाप सराय के भीतर चले गये.. ......। हैरान-परेशान नरूकी.......आंखों में हजारों सवालों से भी भारी.... एक ही सवाल लिये.......... गिड़गिड़ाती.......... कातरता से देखती रही थी...... धड़कते हुऐ कलेजे में उत्सुकता, दिमाग में उमढ़ते-घुमड़ते हजारों आँधी-तूफान, दूर रेत के टिब्बों के पार उगता लाल-लाल सूरज उसकी कनपटियों को जलायें जा रहा था..........

''बींदणी ओ...........!'' सासू की दर्द भरी आवाज जैसे किसी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अन्धे कुंऐ से आई. नरूकी दौड़ कर दरवाजे के पास आई ''जी सासू मां.......।''

''बेटी........ हम दोनू निर्भाग........... अपणे इस बेटे की खातर. ...... धन इकट्ठा करणे के लिए सराय में ठहने वाला राहगीरां नै मार देते रहे......'' अर आगे कुछ भी कह नहीं सकी सासू ..... सराय के दरवाजे बन्द हो गये, अन्दर से कुण्ड़े की आवाज आई।

ठगी सी नरूकी आगे बढ़ कर जोरो से दरवाजा पीटने लगी

''सासू जी..... म्हारो धणी कहां है ?''

जोरों से चीखते हुए उसने अपने बालों को नौंच लिया

''कहां है...? कहां है सासू जी..... म्हारों धणी कहां है ?''

कभी- पगली.......... कभी पथराई.......... दोनों हाथों से अपना कलेजा थामती, सारी दुनियां के दर्द का हिलकारा आंसू बन कर ढ़लकता उसकी छातियों को भिगो रहा था...

चीखती चिल्लाती....... रोती हिलकती........... दरवाजे के बाहर पछाड़े खा रही थी

'' कहां है म्हारों धणी...........? ओ सासू जी......''

बगड़ावत ने देखा लड़की का चेहरा आंसुओं से भरा हुआ था। उसने कहानी आगे जानने के लिए लड़की की ओर देखा

"एक दिन बाद नरूकी को ढूंढते गांव वाले सराय पर आये... ... नरूकी दरवाजे पर पड़ी रोती बिलखती मिली.. वह किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे पा रही थी। सराय का दरवाजा तोड़ा गया..... उसके भीतर से सास-ससुर की लाशें निकाली गईं.....''

कह कर लड़की चुप हो गई फिर उठी............

''आज भी......'' लड़की की कराहट गूंजी, ''आज भी नरूकी गाम-गाम टिब्बे-टिब्बे, सड़क-सडक........ ढूंढ़ती रहती है अपणे धणी को'' सुनकर बगड़ावत ने देखा........ वह चुप,गुम-सुम सराय की ओर चल पड़ी थी। धीरे-धीरे एकटक सराय की ओर देखते हुए।

विस्मित......... वाक शून्य........ हड़बडाया बगड़ावत उसे सराय की ओर बढ़ता देखता रहा।

दूर सड़क पर खड़े गाडे में जुते उँट ने जोरों से बुक्काल भरी....................

+ + +

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दुश्मन

बन्दूक को मजबूती से सम्भाले कोहनियों के बल सरकते सार्जेंट आशाराम ने लगभग दाँतों को भींचते हुए जाँघ में हो रही तीव्र पीड़ा को सहने की कोशिश की। अभी-अभी नीचे आ गए एक छोटे से पत्थर का टुकड़ा जांघ पर लगभग उसी जगह लग गया था जहाँ दुशमन की गोली आकर उसकी जाँघ के आर-पार निकल गई थी। तेज दर्द के कारण वह ठहर गया। सिसकारी भरते हुए उसने फिर से कोहनियों के बल सरकना शुरू किया... वह थककर बुरी तरह निढ़ाल हो चुका था. उस पर तेज दर तेज होता दर्द,..पथरीले मैदान में यहाँ-वहाँ लाशें ही लाशें थी.... उसने कोहनियों के बल सरकते हुए अपने आपको एक बड़े से पत्थर के पीछे कर लिया। अपने आपको पत्थर से टिकाते हुए अधलेटा होकर उसने एक ठण्डी सी साँस ली। अपनी आँखें बंद करते हुए उसने अपना सिर पत्थर पर रख दिया। अचानक उसने हलकी सी सरसराहट सुनी। उसने तेजी से बन्दूक थामकर उसका रुख आवाज की ओर करते हुए देखा एक पाकिस्तानी सिपाही था जो खून से बुरी तरह लथपथ....कोहनियों के बल सरक रहा था... सार्जेंट आशाराम जैसे अपना सब दर्द भूल गया... उसने हलके से उठाकर बन्दूक का बट कन्धे के नीचे लगा लिया और निशाना साधने लगा. बन्दूक को मजबूती से थामते हुए उंगली ट्रिगर पर जमा ली....

लेकिन यह क्या उस पाकिस्तानी सैनिक के पास बन्दूक नहीं थीं। आशाराम के होठों पर मुस्कराहट फैल गई.... फिर वह जोर से चिल्लाया

"जय भवानी ...."

पाकिस्तानी सिपाही ने चौंककर उसकी ओर देखा....

अपनी तरफ बन्दूक तनी देखकर वह शायद सकते की हालत में था

"नाम क्या है?" आशा ने पूछा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दुश्मन

''सार्जेंट आस मौहम्मद!''

''आस मौहम्मद! बड़बड़ाया था आशाराम'', एक ही तो नाम है आशाराम और आस मौहम्मद, कोई अन्तर नहीं, ''कहाँ के हो'' उसने पूछा।

''पाकिस्तानी सिपाही हूँ। कहाँ का हूँ इस पर कोई फर्क नहीं पड़ता..दुशमन हूँ..... तुम गोली मारो।''

''ओए बड़ी जल्दी है तुझे मरने की! घर में कौन-कौन है?'' पूछा आशाराम ने, फिर कहा...पर तू तो पाकिस्तानी है, दुशमन है, क्यों बताने लगा ?

आस मौहम्मद ने अजीब सी नजरों से आशाराम को देखा. .. फिर बोला

''मुलतान का हूँ, घर में अम्मी, बीवी, एक पाँच साल की बेटी और एक बहन है।''

सुनकर आशाराम हंसा, ''अपने घर में भी एक माँ है... एक पत्नी है और एक छोटी सी बेटी है और तुम्हारी तरह से ही एक बहन भी है... तुझे भी जाँघ में गोली लगी है क्या ?''

''हाँ! कहा था सार्जेंट आस मौहम्मद ने....'', क्या तुझे भी?

''वही तो दुशमन मेरे।'' कहते हुए हँस दिया सार्जेंट आशाराम, फिर बन्दूक सम्भालकर आस मौहम्मद की ओर तान दी.... आस मौहम्मद ने अपना हाथ उठाकर रोका उसे.

''ठहर जरा... थोड़ा पास आने दे..... कहीं तेरा निशाना चूक गया तो तकलीफ और बढ़ जायेगी।''

''बहुत होशियार है ओऐ तू...चल आजा।'' हँसते हुए कहा सार्जेंट आशाराम ने, और आस मौहम्मद कोहनियों के बल आशाराम की ओर सरकने लगा

''चल अब अपनी आखिरी इच्छा बता ? '' आशाराम की इस बात से चकित हुआ आस मौहम्मद फिर दर्द को दबाते हुए फीकी सी हंसी हंसा

''ओऐ तू क्या आखिरी इच्छा पूरी करेगा मेरी, खुद तो घायल है.... चल फिर सकता नहीं, फिर भी एक ऐसी इच्छा है. .. जो तू यहाँ पूरी कर सकता है

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दुश्मन

"बोल....!"

"गोली माथे पर मारना ओए.... बहुत दर्द हो रहा है... बरदाश्त नहीं हो रहा अब"

"तो दर्द से छुटकारा पाना चाहता है.... दर्द तो मुझे भी हो रहा है... खैर तेरी ये इच्छा तो समझ पूरी कर दूँगा, कुछ और इच्छा ओऐ सार्जेंट..... बेसक मैं पूरी न कर सकूँ.... पर तू बता तो....."

"छड़ ओऐ.... तू गोली मार... चाहतों का क्या है"

"ओऐ सार्जेंट.... बता दे ! वरना गोली मार दूँगा" हँसकर कहा आशाराम ने

"सोचा था जंग से लौटूँगा तो एक अच्छा सा लड़का देखकर अपनी समीना का निकाह कर दूँगा.... लेकिन..." मुस्कराते हुए कहा आस मौहम्मद ने, "चल अब मार गोली!"

"नहीं मारता ! क्या कर लेगा तू ओऐ", कहते हुए आशाराम ने बन्दूक झुकाकर गोद में रखली, "चल छोड़ दिया तुझे तेरी समीना बहन के लिए.... धूमधाम से उसका निकाह करना" सुनकर आस मौहम्मद चकित सा आशाराम की नम आँखों और बुझे चेहरे को देखता रह गया।

"ऐसे क्या देख रहा है सार्जेंट.... अपनी भी एक बहन है उसकी शादी का अरमान मुझे भी है.... लड़ाई से लौटकर मुझे भी उसे हाथ पीले करने हैं"

"खुदा तेरा ये अरमान जल्दी और जरूर पूरा करेगा" आस मौहम्मद ने अपने हाथ उपर उठाये

"और भगवान करे तेरी समीना का निकाह भी जल्दी से जल्दी हो"

"आमीन.." बड़बड़ाया था आस मौहम्मद

"आजा ओऐ दुशमन ! आ गले तो मिल लें इक बार" सुनकर आस मौहम्मद कोहनियों के बल तेजी से आशाराम की ओर सरकने लगा.. थोड़ी देर बाद, सभी दर्दों को भूलकर दोनों गले मिल रहे थे...

तभी चौंके दोनों.... उन्होंने घूमकर बूटों की आवाज की ओर देखा.. पाकिस्तानी सैनिकों की टुकड़ी थी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दुश्मन

"लेट जा ओऐ दुशमन..... जैसे मर गये हों" आस मौहम्मद ने धक्का देकर गिरा दिया आशाराम को। फिर काफी देर तक दोनों जमीन पर दम साधे पड़े रहे... पाकिस्तानी सैनिकों के बूटों की आवाज दूर होती गई... फिर आनी बन्द हो गई. ... आशाराम जमीन से उठकर फिर से उस बड़े पत्थर पर अधलेटा हो गया... वह आस मौहम्मद की ओर देखता हुए बोला

"ओऐ दुशमन.... आवाज तो देता उन्हें... तुझे उठाकर ले जाते... असपताल पहुँचा देते.. समीना का निकाह तो..."

"हाँ दुशमन ओऐ... मुझे तो उठाकर ले जाते ये... पर तुझे तो मार देते...!" आस मौहम्मद ने ठण्डी सी साँस भरते हुए कहा।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

पर करें क्या ?

लक्ष्मी के लिए गेट खोलते हुए निर्मला ने तीखी नजरों से उसे देखा

''आ गई तू....! वैसे थी कहाँ चार दिन से ?''

लक्ष्मी चुप रही थी,

''देख अगर तुझे काम नहीं करना है तो बोल दे.... मैं दूसरी रख लूंगी. कमी नहीं है सरवेन्ट्स की''

''नहीं बीबी जी..... काम करूँगी मैं'', लक्ष्मी ने कहा, ''अब काम नहीं करूँगी तो खाउँगी क्या ?''

''ऐसे ही काम करेगी....? चार दिन से महारानी का अता-पता ही नहीं है, इतना लम्बा नहीं चलेगा, अगर एक-आध दिन की छुट्टी चाहिए तो निभा भी लूँगी..... परन्तु उसके लिए भी बताना पड़ेगा पहले.... इन चार दिनों में मुझे कितनी परेशानी हुई... पता है तुझे.... पिछले महीने भी तूने इसी तरह.....

''वो बीबी जी.... बात ये है कि..... कि....''

''कि कि क्या....? बस वही अपने मरद का रोना रोयेगी तू तो...., वो दारू पीकर आया होगा.... तू झगड़ी होगी.... उसने तुझे पीटा होगा... तुम लोग भी न.... अरे अगर गलती करेगी तो पिटेगी भी.... इसीलिए तो कहा करती हूँ कम से कम बच्चों को पढ़ा..... खुद तो अनपढ़-असभ्य रहे.... बच्चों को तो ढंग से जीना सिखा दो... वरना कल वे भी अपने घर में झगड़ा करेंगे... औरतों को पीटेंगे...., पता नहीं ? मुझे तो ऐसा लगता है कि तुझे भी अच्छा लगता है रोज-रोज का ये पिटना''

''बीबी जी.... मेरा मरद घर छोड़ के चला गया.... उसे ही ढूँढ रही थी''

''मिला फिर.....?'' निर्मला ने पूछा

लक्ष्मी ने ना में अपना सिर हिला दिया.

''आ जाएगा... कहीं नहीं जाता तेरा मरद.... अब कहाँ ठौर मिलेगी उस शराबी को.... मुझे तो तू ये बता.... आज काम करना है या चार-छह दिन अभी और ढूँढेगी उसे ? ''

''काम करना है बीबी जी !''

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

पर करें क्या ?

"आ अन्दर फिर" कहते हुए निर्मला गेट से एक ओर हट गई लक्ष्मी ने अंदर आकर गेट बंद किया. उसका चेहरा झुका था

"जा पहले... सिंक में बरतनों का ढेर पड़ा है..... कपड़े.... साफ-सफाई. चार दिन से बुरा हाल है कमरों में"

"मैं सब कर दूँगी बीबी जी", कहते हुए लक्ष्मी रसोई में घुस गई थी.

आधा घन्टे बाद रसोई से बाहर निकली. उस समय निर्मला लान में बैठी कोई किताब पढ़ रही थी... लक्ष्मी ने सभी कमरों की झाड़ू लगाई फिर पानी की बाल्टी लेकर पोचा लगाने बैठने गई

"बीबी जी....!" लक्ष्मी ने तेज आवाज में कहा

"क्या है ?" निर्मला ने किताब से नजरें हटाकर उसकी ओर देखा...

"बीबी जी... साहब लौटे नहीं हैं क्या अभी... बिदेस से ?" लक्ष्मी ने पूछा

"साहब कम्पनी की ओर से गये हैं... काफी सारा काम है... अर्जेण्ट मीटिंग्स हैं.... लम्बा टूअर है, कई जगहों का... फ्रैंकफर्ट. ... बोन, डुसैलडोर्फ.... कम्पनी जर्मन कन्सर्न है न.... वहाँ से फिर शायद कैनेडा भी जायें ... कम्पनी की कोई ब्राच वहाँ भी है.... मॉन्ट्रीयल में"

"मैं वो सब क्या जानू बीबी जी... पर मुझे इतना तो पता है कि बिदेस हमारे फरूखाबाद से बहुत दूर पड़ता है.... जापान सैड़ में कहीं है...."

"तू जल्दी....जल्दी हाथ चला !" हँसते हुए कहा था निर्मला ने

"नही... अब तो साहब को गये बीत दिन हो गये बीबी जी ?"

"कितने भी दिन हो जायें ... काम निपटा कर ही आयेंगे, जिम्मेदारी भी कोई चीज होती है.... साहब तेरे मरद की तरह शराबी... निठल्ले तो हैं नहीं !"

"आपका मन लग जाता है बीबी जी अकेले ?"

"क्यों ?"

"नहीं.... ऐसे ही पूछा बस.... मेरा मन तो अपने मरद बगैर बिल्कुल भी नहीं लगता"

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

पर करें क्या ?

"तभी तो वो ऐसा है.... भाग गया तुझे छोड़कर.... भाव खाता है"

"अब क्या करूँ वीवी जी ?" लक्ष्मी ने धीमे से स्वर में कहा. "पर लौटकर तो मेरे पास ही आयेगा एक दिन"

"अगर तब तक तू बूढ़ी हो गई तो ?" कहते हुए हंसी निर्मला, "अच्छा ये बता.... वो भाग क्यों गया तुझे छोड़कर ?"

"पता नहीं बीवी जी, भगवान ने भी, न जानें किस मिट्टी का बनाया है इस नासपीटी मरदजात को ? घर के लिए तो ये जीव बना ही नहीं है.... घर में तो दम घुटे है इसका... पूरा-पूरा दिन दोस्तों में बैठाकर गप्पें लड़वा लो.... रेडियो पर किरकिट सुनवा लो... वाहर मटरगम्ती करेगा.... दूसरों की लड़कियों-जोरूओं को घूर-घूर कर देखेगा, एक तो रात को देर मे लौटेगा.... उपर से वहाने बनायेगा... ये ना सोचता है कि औरत सब जाने है.... दीदों में पढ़ लेवे हैं हम सब कुछ इन नासपीटों के. अब उस दिन की ही लो, मैं बोली, "मैं जानूं हूँ..... तेरी सब... कम्पनी में तेरा कोई उपर टैम ना लगा.. तू गया होगा उस छिनार से मिलने. ... खुद का इतना हट्टा-कट्टा आदमी है... पर मेरे मरद कू डोरे में कस रखा है वैरन ने...." मेरा इतना कहना था बस.. बन गया जिनावर... थप्पड़-घूंसे... और एक दो तो लात भी मारी नासपीटे ने...., उसने उठाया तो डन्डा भी था.... वो तो मैं अकड़कर खड़ी हो गई.... कि "मार तू... अब देखती हूँ तुझे, सच बात कह दी.... तो कलेजे में आग लग गई.... तू दस मारेगा.. . तो एक मैं भी मारूँगी... पर तेरी इज्जत उतर जायेगी...." बस पड़ गया नरम.... चुपचाप बैठ गया खाट पे... फिर तो खूब सुनाई मैंने...., "उसका मरद नहीं है... जो तू जाता है उसके पास", बोला... "मैं तो मेहताव से मिलने जाता हूँ..... दोस्त है मेरा... अब रूलिया उसकी घरवाली है... तो उसमें मैं क्या करूँ ?" मैंने भी कह दिया... "रूलिया मेरी सहेली है.... अगर मैं मिलने जाऊँ और कहूँ कि मेहताब उसका मरद है तो मैं क्या करूँ?" चिढ़ गया. .. बोला "देख तू बात बढ़ा रही है।", मैंने कहा "तू अपनी बता तू भी तो पहले सक करै था मुझ पर कि तू मेहताब से फंसी है" तो खी-खी करके हँसने लगा नासपीटा, बोला "सक तो मैं अब भी करूँ हूँ तुझ पर ?" और बीवी जी मैंने उठाई दरांती, "अब की बोल ?".... बोला, "काट दे...., अब तुझे क्या जरूरत है मेरी,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तेरा काम़ तो मुझसे निकल गया है'', मैं तो ठिठक गई, ''क्या काम निकल गया रे मेरा तुझसे...?'' हँसकर बोला ''तुझे ब्याह कर लाया.... घर-आंगन दिया.... सास, ससुर, ननद, जेठ, देवर मिले तुझे.... हट्टे-कट्टे दो छोरे दिये.... सुन्दर गुड़िया सी बेटी दी.... अब क्या जरूरत तुझे मेरी.... काट दे.... तेरी जान का रोज-रोज का टन्टा खत्म हो...'' सच बीबी जी..... नासपीटे ने कलेजे में सुईयां चुभो दी.... खूब रोई मैं.....,''तू ऐसी बात ही क्यों करता है ?'' कमबखत खुद भी रोने लगा, बोला, ''बुरा हूँ तो बुरी बात ही करूँगा...'' मैंने अपने आँचल से आँसू पौंछे उसके, ''किसने कहा तू बुरा है ?''.... बोला ''अब बुरा ही तो हूँ मैं.... दारू पीता हूँ.... रूलिया से दो बात करने के लिए मौका देखता हूँ, तुझे मारता हूँ.... सीधे मुँह बात नहीं करता तुझसे... . चाय... बीड़ी... पान.... तम्बाखू में पैसे उड़ाता हूँ'' वो बड़बड़ाता रहा.... मैं समझ गई उसकी चाल.... ये मरद भी न बीबी जी.... सारे ऐब इन में पर अपनी बातों के लपेटे में लुगाई को ऐसे लेवें. .. कि पूछो मत... पर लुगाई भी समझे है इनकी चाल को.... बेसक औरत जाने है कम.... पर समझे ज्यादा है.... पर करें क्या. .? अपने मरद की चाल में तो आना ही पड़े है.... औरत को तो छोटेपन से ही सिखाया जावे है कि चाहे तिल-तिल मरना बेटी. ... पर घर बचा लेना... अब घर मरद को तो चाहिए नहीं.... सुबह जायेगा और रात को देर गये लौटेगा.... एकदम टुन्न.... आते ही हुकुम चलायेगा, अगर घर में उसके दिल जोगी कोई बात नहीं होगी... तो झगड़ेगा... मारेगा... पीटेगा... और हमारे पीहर वालों तक को कोस डालेगा... इन नासपीटों के लिए रोटी बनाओ, बरतन मांजो... कपड़े धोओ इनके... बच्चों को पालो.... जब तब चार बात सुनो... और पिटो भी.... सच कहूँ बीबी जी ! ये दाड़ी मूँछ वाला सखत, खुरदरा, गुस्सैल- मरखना जीव निभाने लायक होता तो नहीं.... पर करें क्या...? निभाना पड़ता है.... हम औरतों के पास भगवान ने कोई दूसरा रास्ता छोड़ां भी तो नहीं... घर जो चाहिए हम औरतों को... और ये चारदीवारी खड़ी करके उसमें ला बैठावे हैं हमें... और कहवे हैं घर की मालकिन... और कभी कोई बात हो गई तो हमारी कोख जाये बच्चों को भी छीन लेगा कि निकल जा मेरे घर से और कहेगा बच्चे मेरे हैं, पीहर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

से ना लाई थी तू.... बीबी जी ये तो औरत का ही कलेजा होवे. ... जो निभा लेती मरद से.. वरना ये नासपीटा निभाने लायक होवे थोड़े ही....''

निर्मला सुन रही थी हंसती, मुस्कराती.... सोचती, बोली ''तू इतना बकझक कर गई.... निकल गई सारी भड़ांस ?''

''भड़ांस....! अरी बीबी जी कलेजा फुंके है''

''उसे फुंकने दे... तू ये बता फिर क्या हुआ था ?''

''फिर क्या....? झुमका गिरा रात को !''

''क्या....! ?'' हैरानी से देखा निर्मला ने लक्ष्मी को.... फिर हल्के से मुस्कराई.... मुस्करा रही थी लक्ष्मी भी.... उसने पोचे को पानी में निचोड़ा... बाल्टी को आगे सरका कर खुद भी थोड़ा सरकी...

''बीबी जी.... मैं तो सो गई अपना... मस्त. चादर तान के... बीबी जी अब पिटने-कुटने के कारन अपनी नींद खराब करूँ तो मेरा मरद तो हफ्ते में एकाध बार अपनी मर्दानगी दिखा ही देता है... पर हाँ.... मैंने भी रोटी नहीं बनाई.... सुबह का भात पड़ा था थोड़ा सा.... अपने बच्चों को खिला दिया... दो चार गास खुद भी खा लिए... और सो गई... पर वो कमबख्त... पता नहीं.... सोया कि जाने ना.... रात ढाई बजे मुझे जगा के बोला... ''अरी कलुऐ की माँ.... मेरा सिर दरद कर रहा है.. जरा दबा दे...'' मेरे जी में तो ऐसा आया टेंटूआ दबा दूँ कमबखत का. रात को ढाई बजे... मैं जानू तो थी कि अपने पास बुलाने के लिए ऐक्टिंग करे था... पर मरद तो मेरा ही है.... नासपीटा कहीं सच न बोल रहा हो.... उसका सिर कहीं सच में ही तो नहीं दुख रहा... ये ही सोच के उठ आई मैं.... उसका सिर दबाने लगी... कुछ देर बाद उसने हाथ पकड़ा मेरा.... बोला, ''नाराज है न तू मुझसे ?'' मैं तो चुप रही, फिर वो बोला... ''तू बौत खपसूरत है कलुए की माँ !'' मैं चौंकी, ''तो...?'' ''तो कुछ नहीं'' बोला वो पर मैं समझ रही थी, ''तू गुस्सा होती है तो बौत अच्छी लगती है।'' मैं भुन गई ''तो रोज पीटा कर, कभी-कभी मर्दानगी क्यों सवार होती है तुझ पर ?'' वो चुप रहा... कुछ देर बाद बोला, ''अच्छा अब नही मारूँगा कभी।'' मैं बोली, ''हर बार तू यही कहता है ?'', कहने लगा वो, ''इस बार कसम से...!'' मैं चुप रही... आठ साल से देख रही थी उसकी कसम को... पर उस पर यकीन का

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दिखावा करने के सिवा और क्या करती मैं. मैंने उसके मुँह पर हाथ रख दिया, "मैं पिट लूँगी रोज-रोज. पर तू कसम मत खा, तेरी कसम से नुकसान तो मेरा ही होगा", और उसने मेरी कमर की ओर हाथ बढ़ाया... मैं तमकी.... उसके पास से हट गई...., "और ये बच्चे ?", बोला "तीन ही तो हैं"...., "तो क्या टीम बनायेगा पूरी किरकिट की... ओ मेरे खसम... सो जा अब. .. और मुझे भी सोने दे.. तेरा क्या है...? तू तो सोता रहेगा सुबह दस बजे तक... मुझे तो काम पर जाना है...", मेरा इतना कहना था और भड़क गया, बोला "तू काम छोड़ क्यों नहीं देती, सरम नहीं आती तुझे घर-घर बरतन-झाडू-कटका करते, अभी मैं जिन्दा हूँ", सुनकर मेरे तो तन-बदन में आग लग गई बीबी जी... मैंने कहा "तू समझता रह अपने आपको जिन्दा.... जो कमाता है... उड़ा देता है, तेरे और तेरे बच्चों के हलक में जो जाता है उसके लिए मैं काम करती हूँ.... अरे मरद अगर मैं काम नहीं करूँगी तो भूखा मरेगा तू और भीख माँगेंगे तेरे बच्चे!" और चोट लग गई उसकी मर्दानगी को, कहने लगा "तुझे तो बौत घमण्ड है अपने इस झाडू-पोचे के काम पर... . सम्भाल अपना घर-बच्चे... जा रहा हूँ मैं..साली.... हरामजादी. ... मरद बनने की कोसिस करती है... जरा सा हाथ क्या लगा दिया... दरांती उठाती है... औरत की तरह से रहना ही नहीं आता... तेरा क्या भरोसा तिरिया...? कभी मार भी देगी.... तू तो दूसरा कर लेगी.... पर मैं तो अपनी जान से जाऊँगा..." और पता नहीं क्या-क्या बकता रहा, मैं हैरान पत्थर बनी सोचती रही... कहाँ की बात, कहाँ ले जा रहा है कलिहारा कहीं का? उसने कपड़े पहने.... फिर चप्पल, चलने को हुआ... तो मैं होस में आई... हाथ जोड़कर खड़ी बी हो गई.... पर जीभ मेरी... वैसे तो खूब चलती है कतरनी की तरह पर उस टैम पर तालू छोड़ती ही नहीं थी, मेरा कन्धा पकड़कर एक तरफ धकेल दिया उसने मुझे.... बोला, "तुझे कसम है मेरी अगर मुझे रोका तो.... नहीं रहना मुझे तेरे टुकड़ों पर.... तू तो दरांती उठाती है !" और चला गया नासपीटा... मैं रह गई आँखों में आंसू लिए... और हम औरतों के नसीब में होता ही क्या है... आँसू, आँसू और आँसू...."

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

पर करें क्या ?

लक्ष्मी ने अपना आँचल मुँह में ठूँस लिया और रोने लगी थी.

''चार दिन मे पता नहीं कमबखत का.... उसकी कम्पनी भी गई थी, तो पता चला.... ड्यूटी पर नहीं आ रहा चार दिन से, मेहताब को भी नहीं मालूम.... सारे ठौर-ठिकाने ढूँढ लिए उसके. .. बस एक वार मिल जाये नासपीटा.... अब कभी दुर्गा नहीं बनने की मैं तो...। धूमधाम मे व्याह कर लाते हैं... जताते हैं कि तू तो मेरे घर की लक्ष्मी है.... तारीफ करते हैं कि कामनी है तू.... घर की इज्जत बताते.. पर समझते पाँव की जूती.... यहाँ तक भी ठीक है पर पता नहीं कब जूती की नौंक पर धर दें ये नासपीटे मर्द हमें... और बीबी जी ऊपर से जुल्म ये कि हमें ही तिरिया कहते हैं और खुद का रूप कब बदल जाये... पता नहीं... रोज-रोज की कलह.... दुत्कार... मार के बीच हम तो भूल ही जाती हैं कि हम भी इन्सान हैं, कोख से लेकर कबर तक हिलती ही रहें हैं हम तो''

''पुलिस में खबर की ?'' निर्मला ने पूछा तो लक्ष्मी ने ना में सिर हिला दिया

''पुलिस में खबर कर दे... भगवान ना करे, कुछ कर ले... कुछ हो न गया हो उसके साथ ?''

रोती सुबकती लक्ष्मी ने झटके से चेहरा उठाया था, फिर हथेली से गालों पर से आँसुओं को पौंछा

''उसे होने का तो कुछ ना बीबी जी... हर साल करवाचौथ का बरत जो रखती हूँ नासपीटे के लिए...।

सुनकर चकित हुई निर्मला, हलकी सी मुस्कराहट उसके चेहरे पर तिर आई

''आ तो वो जायेगा कमबखत.. पर पहले खूब परेसान कर लेगा मुझे, खूब रूला लेगा मुझे, पर ओ मरद जी..मैं बी तेरी ही लुगाई... रह ले कहीं भी चैन से, कर ले जितनी मौज करनी है. ... आने दे जरा बड़पूजनी मावस को...., तब देखूँगी तुझे....।''

''बड़पूजनी मावस...! क्या मतलब ?'' हैरान सी पूछा निर्मला ने

''हाँ बीबी जी... कहते हैं इस दिन बरत करने से.... मरद जहाँ भी हो... लौट आता है.... सब ताले-जंजीर टूट जाते हैं उसके, खिंच के चला आता है अपनी लुगाई के पास।''

''कमाल है... इतना विश्वास तुझे बड़पूजनी मावस के व्रत का?''

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

पर करें क्या ?

"बिसबास क्यों नहीं होगा बीबी जी, कहते हैं इसी दिन सावित्री अपने आदमी को यमराज के बन्धन से छुड़ा लाई थी"

"ओ... सत्यवान को...! तो तू अपने आदमी के लिए वटसावित्री का व्रत करेगी...मगर आज के युग में ये सब... बकवास बातें हैं"

"आज का जुग और कल का जुग क्या बीबी जी, हम औरतों के लिए तो सारे के सारे जुग एक से ही रहे हैं, अब अहिल्या को ले लो.... चाहे सीता मैया को... वे तो ना हुई कलजुग में.... हम औरतें तो बिसबास के सहारे ही जीती हैं चाहे वो झूठा ही हो. .. इस बिसबास के सिवा हमारे पास है ही क्या... जिस दिन औरत के मन का बिसबास टूट गया... दुनियाँ खतम हो जायेगी, घर बेसक आदमी का होवे बीबी जी... पर बनाकर तो उसे औरत ही रखे है... वरना मरद तो घर तोड़ने के लिए हर बखत तैयार बैठा रहे है.... अब भगवान को ही देख लो.... उसने औरत-मरद दोनों अलग-अलग सुभाव के बनाये हैं.... और जरूरी कर दिया कि रहो दौनों एक साथ... सोचो जरा अलग-अलग सुभाव के.. एक गरम... सखत.... रूखा.... मरखना... गुस्से वाला.... दूसरी नरम, कोमल, सहन करने वाली....., एक उद्दण्ड, मुँहमार, छेड़ने वाला, दूसरी सर्मीली, नाजुक, मुस्करा कर प्यार कबूलने वाली, एक को जीत चाहिए, दूसरी को हार कर सबकुछ मिल जावे है... एक बहकाता है फुसलाता है और दूसरी बहकाने में आ जावे हैं, और बीबी जी औरत कभी प्यार ना करती !" कहा लक्ष्मी ने तो निर्मला चकित हुई..

"करती है.... औरत भी प्यार करती है कौन कहता है कि वह प्यार नहीं करती ?", कहते हुए दृढ़ थी निर्मला

"ना बीबी जी... औरत प्यार ना करती... वो तो समरपन करती है, आदमी के प्यार पे खुद का, बच्चे के प्यार पे ममता का, अरे बीबी जी दोनों एक जैसे सुभाव के हो जायेंगे तो निभेगी कैसे. .. दोनों ही जीतना चाहेंगे तो रह लिए साथ-साथ, पूरी जिन्दगी कोसिस करे है औरत मरद को बदलने की... पर ये नासपीटा बदलने के लिए बना ही ना है, बदलने के लिए तो औरत बनी है और ये बदल भी जावे है... इस आदमी जात का बड़ा ऐहसान होता है औरत पर, जो ये शाम को लौट आवे है घर... अरे ना लौटे... तो क्या कर लेगी औरत... नासपीटा कहीं भी खा-कमायेगा.

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

.. कहीं भी मुँह मार लेगा और फिर घर भी बसा डालेगा दूसरा. ... रंडी बैसयाओं की भी कमी ना है... अपनी ब्याहता लुगाई की जरूरत तो उसे बुढ़ापे में ही ज्यादा पड़े हैं। पर जवानी में तो घर की औरत का बिसबास ही घर लौटा के लावे है उसे, मैं तो अब कभी दुर्गा ना बनने की... पछताई मैं तो.... अब तो..."

"छोड़ ये सब... पहले बता... ये वटसावित्री का व्रत करते कैसे हैं ?" पूछा निर्मला ने

"कैसे मतलब ?" लक्ष्मी ने पूछा

"मतलब इसकी पूजा, विधि-विधान... कथा वगैरह...?"

"हाँ इस दिन बरत तो करती ही हैं.... बड़ के पेड़ के चारों तरफ सात चक्कर कलावा लपेटती हैं... आदमी नासपीटे के लिए आसा-उम्मीद की चुन्नी लटकाती हैं या फिर घर में ही बरगद की टहनी मंगाकर...." कहते-कहते रूक गई लक्ष्मी... उसने निर्मला को गौर से देखा....

"पर बीबी जी.... आप.... मेरा मतलब... ये सब....?"

निर्मला का सिर झुक गया था

"विदेश नहीं गए हैं साहब तेरे.... झूठ बोला था मैंने", सुनकर चकित हुई लक्ष्मी....

"तो.....?"

"मुझसे नाराज होकर.... अपने पेरेन्टस के पास" सिर झुकाऐ ही बोली थी निर्मला, "शायद डाईवोर्स तक भी बात...?"

"ओऽऽऽ" कहते हुए जैसे सबकुछ समझ गई थी लक्ष्मी

"मैं तो बहुत सहनशील हूँ लक्ष्मी... मगर करूँ क्या ? कभी-कभी साहब के बरताव पर चिढ़कर... उसके बाद झगड़ा और फिर...।" कहते-कहते निर्मला का स्वर भीग गया था

"मैं समझती हूँ बीबी जी", उठते हुए कहा लक्ष्मी ने, वह लान में निर्मला के पास आई.... निर्मला का हाथ अपने हाथों में ले लिया

"आप के साथ ऐसा कुछ भी अलग नहीं है जो औरतों के साथ नहीं होता हो.... किसी के साथ ज्यादा.... तो किसी के साथ कम...। सभी मरदों की किस्मत अलग-अलग होती है पर हजारों सालों से हम औरतों की किस्मत तो एक जैसी ही है..।" कहते हुए लक्ष्मी ने अपना चेहरा निर्मला के हाथ पर टिका दिया था।

+++

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दुनिया की सबसे अच्छी लड़की

आज पूरे पाँच बरस बाद मैं अपनी आइसक्रीम की रेहड़ी को ढकेलता हुआ राजीव कॉलोनी की ओर निकल आया था. ... वैसे लगभग पाँच साल बाद पहली बार मैंने आइसक्रीम की रेहड़ी सम्भाली थी। इन बीच के पाँच सालों में मैंने हर वो काम किया जो मैं कर सकता था। फुटपाथ पर चप्पल बेचे, मूँगफली-चने-गज्जक की रेहड़ी लगाई, घरों में अखबार फेंकें... पर कोई काम जमा नहीं, या यूँ कहो कि मैं ही किसी काम में जम नहीं पाया... अन्त में मैं अपने पुराने काम में ही लौट आया...., वैसे पाँच साल पहले भी यह काम मैंने अपनी मर्जी से नहीं छोड़ा था... हम सात आदमी थे... फैक्ट्री मालिक ने निकाला था हमें.... मालिक हमें कुल विक्री का तीस परसेंट देता था, हम पैंतीस परसेंट की माँग कर रहे थे... हमने चार दिन रेहड़ी नहीं उठाई और पाँचवे दिन मालिक जाने कहाँ से चार-पाँच नये आदमी पकड़ लाया और हमारी छुट्टी हो गई... मैं दूसरी आइसक्रीम फैक्ट्री पर गया पर रेहड़ी नहीं मिली.... हमने यूनियन बनाई थी फैक्ट्री मालिकों ने भी यूनियन बना ली.... हमें किसी ने काम नहीं दिया, लेकिन परसों एक नई आइसक्रीम फैक्ट्री का पता लगा.... मैं वहाँ गया और मुझे तीस पर्सेंट पर काम मिल गया...

ठिकाने तो मेरे पास पुराने ही थे... अगर वहाँ किन्हीं नये रेहड़ीवाले ने कब्जा नहीं कर लिया होगा... तो...। वरना तो मुझे नया ठिकाना बनाना होगा... या फिर घूम-घूमकर आइसक्रीम बेचनी होगी। गन्दे नाले की पुलिया पार करते ही सरकारी स्कूल था... लेकिन वहाँ पहले ही तीन तीन आइसक्रीम वाले रेहड़ी लगाए हुए थे... मैंने अपनी रेहड़ी जोर लगाकर अपनी जानी पहचानी कूबड़ गली में चढ़ा दी, इसी कूबड़ गली में ही तो रहती थी दुनियाँ की वह सबसे अच्छी लड़की। ऊँचाई तक आते-आते मेरी साँस फूल गई... थोड़ा दम लेने के लिए मैं रेहड़ी खड़ी करके बैठ गया.... साँसों को आराम मिलते ही मैंने जेब से बीड़ी का बंडल निकाला और एक

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बीड़ी निकालकर सुलगा ली, तभी एक आवाज आई

"अरे बारेलाल तू...। इतने सालों बाद..? मैं समझी मरखप गया है कहीं" मैंने पलटकर देखा.... रामरती बुढ़िया थी

"अरे ताई तू.... तूने भी तो जमीन पर अंगद की तरह पाँव जमा रखा है..." मैंने उसकी ओर देखकर कहा, बहुत खुशदिल थी रामरती

"अच्छा सारी बात छोड़..ये बता ब्याह-सादी की तूने या नहीं ?"

"ताई यहाँ एक पेट का गुजारा करने के लिए पापड़ बेलने पड़ते हैं, ब्याह कर लूँगा तो और भी मुशकिल हो जायेगी"

"निपूता ही मरेगा तो...?"

"अपनी-अपनी किम्मत ताई" मैंने उठकर रेहड़ी का ढक्कन खोला, अन्दर हाथ देकर... एक वनीला बार निकाली और रामरती की ओर बढ़ाई

"ले ताई.... पाँच साल बाद आज फिर से आइसक्रीम बेचना शुरू किया है.... पहली बरफ... तू खा !" अपने बारेलाल बेटे की ओर से।"

"तेरी अच्छी बिक्री हो....! बेटा तू कुछ नहीं भूला" कहते हुए रामरती ने बरफ ले ली....., "मेरे बारेलाल बेटे के वारे न्यारे हों।" उसने आसीस दिया। तभी आसपास के घरों से बच्चों का जमघट मेरी रेहड़ी के चारों ओर लग गया... उनसे निपटकर मैंने देखा रामरती अपने घर में अन्दर जा चुकी थी... मैंने रेहड़ी आगे बढ़ाने से पहले पीछे की लगभग खड़ी चढ़ाई की ओर देखा....

गली काफी लम्बी थी और फिर उसके बाद उतराई... गली में तीखा मोड़ और उसके बाद लगभग चार-पाँच घरों के बाद बार-बार रुकता मैं आगे बढ़ता गया... मेरी रेहड़ी से आइसक्रीम बिकती गई। उस गली से फटती लगभग सभी गलियों में मैं गया।

पन्द्रह-सोलह साल तक मैंने राजीव कॉलोनी की गली-गली में आइसक्रीम बेची थी.... दूसरा कोई रेहड़ी वाला इस उँचाई पर चढ़ता नहीं था... सबसे ज्यादा डर तो रेहड़ी उलट जाने का था... पर मैं... मैं तो रोज आता था... तीस बत्तीस साल की उमर से ही... आज पचपन साल का हो गया... कुछ नहीं बदला

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

यहाँ.... मेरी उमर बढ़ गई बस, सिर में इक्का-दुक्का काले बाल बचे हैं अब तो।

"बाबा...!" मैंने देखा एक छोटा सा बच्चा, अपने हाथ की मुट्ठी मेरे सामने किये था, "एत बरफ दे दो" उसने कहा

मैंने उसकी मुट्ठी की ओर हाथ बढ़ाया.... उसने अपनी छोटी सी मुट्ठी मेरी हथेली पर खोल दी... दो रूपए का सिक्का मेरी हथेली पर गिरा, मैंने रेहड़ी का ढक्कन हटाकर एक औरेंज बच्चे को पकड़ा दी... वह चल दिया, मैं बोला "ठहर ओऐ बांगड़ू.... पैसे तो ले जा....." सुनकर वह ठहर गया, मैंने जेब से एक रूपये का सिक्का निकालकर उसके हाथों में पकड़ा दिया, तभी एक आवाज आई

"इसे ये वाली बरफ मत दे ताउ.....।" मैंने देखा एक औरत रेहड़ी की तरफ आई उसने बच्चे से बरफ छीनकर, मुझे वापिस कर दी, "सारे तो कपड़े खराब कर लेगा.... मुँह-जीभ सारे रंग में हो जायेंगे.. दूध वाली बरफ दे दो इसे.."

मैंने औरेंज बर्फ वापिस ले ली... और रेहड़ी के भीतर से वनीला निकाली.... औरत ने बच्चे के हाथ से रुपया लेकर मुझे दिया, लेकिन बच्चा अड़ गया...

"नई-नई मम्मी... मैं तो बोई वाली लूंगा...।"

"ये वाली अच्छी है बेटा" उसके माँ ने उसे समझाने की कोशिश की"

"नई-नई..... उछ वाली बरफ के छात तो बाबा ने एक पैछा बी दिया था" कहते हुए वह मचलने लगा

"वो अच्छी नहीं है बेटा"

"नई..बोई वाली अच्छी है... मीठी है"

औरत के हाथों में बरफ पकड़ाकर मैं तो रेहड़ी को धकेलता आगे बढ़ गया... और बच्चा माँ के साथ फ़जीहत करता रह गया। बारह बजे तक रेहड़ी खाली हो चुकी थी... लेकिन मिल्क औरेंज, कप, चौक बार, मैंगो बार... आईस कोल्ड सारे के सारे दस-दस पीस और एक ब्रिक यूँ ही बचे हुए थे... पहला ही दिन था इसलिए.. औरेंज, वनीला मैंने ज्यादा नहीं उठाए थे, वे सारे बिक भी गए थे... अभी आधा दिन भी बाकी पड़ा था... कल से थोड़ा ज्यादा माल लूँगा.... सोचता हुआ मैं

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सबसे अच्छी लड़की

रेहड़ी धकेलकर आगे बढ़ा...

अचानक मैंने एक प्राइबेट स्कूल का बोर्ड देखा.... शायद नया ही खुला था.... पाँच साल पहले यह यहाँ नहीं था।

मैंने स्कूल के सामने एक साइड में रेहड़ी लगा दी.... स्कूल के चौकीदार से पता किया कि लैंच कितने बजे होगा.

''होने वाला है लैंच तो.... मगर...''

चौकीदार आगे भी कुछ कहना चाहता था... मैं वापिस आकर रेहड़ी पर खड़ा हो गया... कुछ ही देर में घंटी बजी... पर गेट नहीं खुला.... जालीदार गेट के पास एक छोले कुल्चे वाला.... जाली से अन्दर सप्लाई कर रहा था... सभी बच्चे बड़े-बड़े थे. .. मैं तो निराश सा देखता रहा... तभी अन्दर से एक लड़की की आवाज आई....

''अंकल चौकबार है क्या ?''

मैंने हाँ में सिर हिलाया

''एक देना अंकल'' सुनकर मैं रेहड़ी में झुका

''एक मुझे भी देना अंकल'' एक और लड़की की आवाज आई... मैंने दो चौकबार निकाल कर जाली से उन्हें पकड़ा दी. .. लेकिन लड़के-लड़कियों का एक बड़ा हुजूम था...

''एक मिल्क ऑरेंज अंकल....?''

''एक चौक बार देना अंकल ?''

''अंकल..... अंकल एक आईस कोल्ड ?''

''एक कप दीजिये अंकल'',

मुश्किल से दस मिनट में ही मेरी सारी रेहड़ी.... खाली हो चुकी थी, मैं मन ही मन मुस्कराया...

''वाह री ताई रामरती.... तेरी बोहनी भी जैसे पन्द्रह-बीस साल पहले मेरे लिए लक्की रही.... आज भी है.... अब मैं बच्चों से मना कर रहा था

''अब कुछ नहीं है बेटा... खतम सब माल''

''तो ज्यादा लाया करो न अंकल''

''कल से ज्यादा माल लाउँगा'' कहते हुए मैंने रेहड़ी आगे बढ़ा दी.

अचानक मैं ठिठक गया... मैंने स्कूल की बिल्डिंग.... उसके आसपास के घरों को गौर से देखा... आज जहाँ स्कूल है....बिल्कुल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सबसे अच्छी लड़की

यहीं.. यहीं तो था... संसार की सबसे सुंदर लड़की का घर।

तीस-बत्तीस साल का रहा हूँगा मैं तब... चढ़ाई पर भरी हुई आइसक्रीम की रेहड़ी को एक साँस में ढकेलता हुआ.. जब पहली बार यहाँ आया था

बड़े-बड़े बच्चों की भीड़ से घिर गई थी मेरी रेहड़ी, मै उनसे पैसे लेता और रेहड़ी के भीतर से आइसक्रीम निकालकर उन्हें देता रहा... मेरा ध्यान बार-बार उस पर जाता। छोटा सा गोल-मटोल चेहरा, मैली कुचैली फ्रॉक पहने वह चुपचाप खड़ी थी... दूर भीड़ से काफी परे... एक-दूसरे पर पड़ते बच्चे....

''ताउ पहले मुझे.... एक दूध वाली बरफ''

''भैया एक गोले वाली बरफ''

''एक औरेंज''

''सबको देता हूँ..... धक्का-मुक्की नहीं'' मैंने कहा, किन्तु मेरे कहने का कोई असर नहीं हुआ.. बच्चों की वही चिल्ल-पौ.. वही मारा-मारी और एक-दूसरे से पहले की कोशिश

''सबसे पीछे वो देखो, वो छोटी सी बच्ची, कितनी शान्ति से खड़ी है... दुनियाँ की सबसे अच्छी लड़की की तरह'' कहते हुए मैंने उसकी ओर इशारा किया

सभी बच्चों ने पलटकर देखा....

''अंकल मैं ?'' उसने हाथ उठाया और अपनी उंगली अपने पेट पर रखते हुए पूछा.....

''हाँ गुड़िया... तुम....तुम दुनिया की सबसे अच्छी लड़की हो, न तो इनकी तरह शोर करती हो.. न ही मारा-मारी''

''ओह ये गोलो...?'' एक बड़े से बच्चे ने कहा, ''इसकी नाक बह रही है... कितनी मैली है... गन्दी.... छि''

''नाक बह रही है तो क्या ?....'' उस लड़की ने कहा ''मैं दुनिया की सबसे अच्छी लड़की तो हूँ.... हैं न अंकल ?'' उसने मुझसे हाँ भरवाने के लिए मेरी ओर देखा

''हाँ गुड़िया.... तुम दुनियाँ की सबसे अच्छी लड़की हो'' मेरी कही इस बात से उसकी जीत पुख्ता हो रही थी

''ओ.S..S... गोलो....।'' एक बड़े बच्चे ने उसे चिढ़ाया

''देखो मेरे बाल भी सुनहरे हैं'' वह इतराकर बोली

''और आँखें कंजी-कंजी हैं...'' एक दूसरा बच्चा बोला

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सबसे अच्छी लड़की

''अंकल मुझे दुनिया की सबसे अच्छी बरफ भी देंगे...'' वह इतराकर बोली.. ''है न अंकल ?''

''हाँ गुड़िया... दुनिया की सबसे अच्छी लड़की को सबसे अच्छी बरफ...'' कहते हुए मैंने रेहड़ी के भीतर हाथ डालकर... . एक मिल्क औरेन्ज निकाली... और उसके पास आ गया.... ''ले गुड़िया''

मुझे पैसे की फिकर नहीं थी... बच्ची की बात मेरे दिल को छूने लगी थी.... पैसे मुझे लेने भी नहीं थे, मैंने उसकी ओर मिल्क औरेन्ज बढ़ाई.... उसने ना में अपना सिर और दोनों कन्धे तक हिला दिये

''ये नहीं अंकल.... सबसे अच्छी बरफ दो''

''ये सबसे अच्छी बरफ है बेटी...'' मैंने उससे कहा

''नहीं.... बो बाली बरफ.... जिससे मुँह लाल हो जाता है।'' मैं मुस्करा दिया.... उसका भोलापन...

मैंने उसे साधारण चवन्नी वाली लाल बरफ दे दी... और वह मुझे अपनी मुट्ठी में पकड़े पैसे देने लगी, मैंने पैसे नहीं लिये, वह चली गई आइसक्रीम चूसती हुई... मैं बिक्री में लग गया। बाद में पता चला उसका नाम रजनी है।

मैं उसे कभी रजनी कहता, कभी रज्जो और कभी रजिया सुल्तान ! और उसके बाद तो एक अजीब सा रिश्ता जुड़ गया था... दुनियाँ की सबसे अच्छी लड़की से, मैं उसे दूसरी बरफ भी देने की कोशिश करता मगर वह दुनियाँ की सबसे अच्छी बरफ माँगती.... वही जिससे मुँह लाल हो जाता है...

हर रोज वह बेताबी से मेरा इंतजार करती, घर के दरवाजे की चौखट पर बैठी, कोहनियों को गोद में रखे, अपनी दोनों हथेलियों पर अपना गोल मटोल चेहरा टिकाऐ.

थोड़ा बड़ी हुई.... तो स्कूल जाने लगी

दिन, महीने..... फिर बरस बीतते गए, उस रजिया सुल्ताना की छोटी सी फव्वारा चुटिया दो चुटियों में बदल गई और उसकी फ्राक... गुलाबी रंग की सलवार कमीज में, जिस दिन उसका रिजल्ट निकलता.... मैं स्कूल के बाहर खड़ा बेताबी से उसका इन्तजार करता, वह अपनी सहेलियों के साथ हंसती खिलखिलाती और उस दिन तो मैं अपनी रेहड़ी लुटा देता.....

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सबसे अच्छी लड़की

उसकी सहेलियाँ..... चौकबार, मिल्क ऑरेंज, आईसकोल्ड, वनीला खाती.... कप.... सोफ्टी खातीं.... मगर वह वही..वाली..... जिससे मुँह लाल हो जाता है। कुछ दिनों बाद उसका मुँह बिना बरफ के लाल होने लगा था.... उसके बाद फिर बरस बीते

एक दिन शाम को...., मैं शहर के सिटी पार्क के बाहर अपनी रेहड़ी लिए खड़ा था.... सड़क पर एक आटो रुका, वह उतरी. ... उसके साथ एक लड़का था... मैं चकित हुआ.... उसने मुझे देखा नहीं था दोनों पार्क के भीतर चले गये.... काफी देर तक वे पार्क की घास पर घूमते-बतियाते रहे... दूर से मेरी नजरें तो उन पर ही लगी रहीं... कुछ देर बाद वे निकले. मैंने मुँह दूसरी तरफ घुमा लिया

"दो आइसक्रीम देना ताउ...." आवाज पर मैंने घूमकर देखा वे दोनों मेरी रेहड़ी के पास खड़े थे. "बढ़िया वाली. ऐसा करो. कप दे दो" कहते हुए लड़के ने उसकी ओर देखा, वह सकुचाई खड़ी थी "या फिर मिल्क औरेंज या चौकबार ? बोल कौन सी खाएगी ? मगर वह सकुचाई सी खड़ी रही, कभी-कभी आँखें उठाकर मेरी ओर देखती, मैंने लड़के की ओर देखा.... और वह उसे देख रहा था... "बोल न इसमें शर्माने की क्या बात है ?"

मैं लड़के से बोला "आप बताइये, कौन सी आइसक्रीम दूँ. उसे क्या खाना है ये मुझे पता है" सुनकर वह हैरानी से मेरी ओर देखने लगा...., उसने उसे देखा, वह सिर झुकाए थी

"ठीक है दो कप दे दो !" कहते हुए लड़के ने कन्धे उचकाए, मैंने एक कप और एक लकड़ी का चम्मच लड़के को थमा दिया, फिर एक औरेंज बरफ निकालकर लड़की की ओर बढ़ाई... उसने हाथ बढ़ाकर औरेंज थाम ली... लड़का चौंका

"ये क्या ?..... इसे भी कप दो ताउ"

"नहीं.... यही ठीक है" लड़की ने उससे कहा

"मगर...?" लड़के ने कुछ कहना चाहा

"कहा न... यही ठीक है.... अब चलो !" लड़की ने कहा

"जैसी तेरी मर्जी...." कहते हुए वह हैरान था, उसने मेरी ओर दस रूपए का नोट बढ़ाया, लड़की ने उसका हाथ पकड़कर नीचे झुका दिया

"वो नहीं लेंगे....।"

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सबसे अच्छी लड़की

"क्यों....?" कहते हुए लड़का हैरान था

"क्योंकि.... मैं इनकी वेटी हूँ।" सुनकर वह और भी हैरान था, और मैं... मुझे तो दुनियाँ की सबसे वड़ी खुशी... अचानक ही दे दी थी उसने....

"और वावा... ये...." कहते हुए उसने लड़के की ओर इशारा किया फिर शर्माकर चेहरा झुका लिया... वोली.... "होने वाला जवांई मेरा !" लड़का हैरानी से कभी मुझे देखता, कभी उसे.

और मैं... मैं तो डवडवाई आँखों से अपनी जिन्दगी की सवसे वड़ी दौलत को देख रहा था... क्योंकि मैं अव निपूता नहीं था.... दुनियाँ की सवसे अच्छी लड़की अव मेरी वेटी थी

और जव उसकी शादी हुई.... तो दावत में आइसक्रीम का इन्तजाम मेरी ओर से था

उसके वाद कभी उससे मुलाकात नहीं हो पाई.. और मैं न ही कभी उस गली में जा पाया. मेरा आइसक्रीम वेचने का काम जाता रहा..

और आज पूरे पाँच साल वाद... मैं फिर आया था। मैंने आसपास के घरों में पता किया.....

"यहाँ एक रजनी रहती थी, सुनहरे वालों वाली....?"

पता चला.... हाँ रहती थी... माँ-वाप के गुजरने के बाद अपने आदमी के साथ यहीं रहने लगी थी... किसी कम्पनी में काम करता था उसका आदमी.... वीमार पड़ा.... इलाज में ये घर विक गया.... पर आदमी बचा नहीं.... अब पता नहीं कहाँ गई... ससुराल वालों ने सहारा नहीं दिया...

मैं चला आया था... बाद में कभी नहीं गया उस कूबड़ गली में, न मेरा कोई एक ठिया बन सका।

एक दिन.... नहर किनारे बनी झुग्गियों की ओर निकल आया था उस दिन दोपहर बाद चार बजे थे। गर्म तेज लू अभी तक चल रही थी.. पर हम आइसक्रीम बेचने वालों का क्या ?. .. झुग्गी-झोंपड़ियों के बीच छोटी सी गली में ले गया मैं अपनी रेहड़ी.... फिर एक शहतूत के पेड़ की हलकी सी छाया में रेहड़ी खड़ी कर आवाज लगाई... गर्मी के मारे पसीने से बुरा हाल था.... बच्चे मेरी रेहड़ी के पास आने लगे थे... मैं एक-एक कर उन्हें निपटा भी रहा था। रेहड़ी के पास लेकिन

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सबसे अच्छी लड़की

कुछ दूर खड़ी थी एक छोटी सी बच्ची... मैली कुचली... फटी फ्रॉक, वैसे ही सुनहरी बाल... कंजी आँखें... मैं चौंका, हैरान सा देखने लगा उसे... मैंने चारों ओर देखा. कोई नहीं था... मैं उसके पास गया... उसके दोनों हाथों को पकड़कर झुका....

''आइसक्रीम खायेगी बिटिया ?''

उसने ना में सिर हिलाया, मुझे हैरानी हुई

''क्यों....?''

''पैते नईं ऐं मेरे पाछ''

''कोई बात नहीं.... तू आइसक्रीम खा'' कहते हुए मैं उसके हाथ छोड़कर रेहड़ी तक आया... एक दूधवाली बरफ निकालकर लाया, उसे देने लगा

''नईं ये वाली नईं.... अच्छी वाली दो....''

''अच्छी वाली....!''

सुनकर उसने हाँ में सिर हिलाया....

''तो तू भी दुनियाँ की सबसे अच्छी बरफ खायेगी....'' कहते हुए मैंने रेहड़ी के बक्से में से औरेंज निकाली और उसे दे दी.

''इसका मतलब है... तू दुनिया की सबसे अच्छी लड़की है''

''मगर बाबा... दुनिया की सबसे अच्छी लड़की तो मैं हूँ'' मैंने घूमकर देखा... वह खड़ी थी... वही...., उसने आगे बढ़कर छोटी सी लड़की को गोद में उठा लिया

मैंने डबडबाई आँखों से देखा, फिर ना में सिर हिलाया

''नहीं दुनियाँ की सबसे अच्छी लड़की तो अब ये है'' कहते हुए मैंने उसकी बेटी की ओर इशारा किया

''और मैं....?'' उसने पूछा

''तू.... तू अब दुनियाँ की सबसे अच्छी माँ है'' कहा मैंने

और दुनियाँ के सबसे सुन्दर दृश्य को देखते हुए मैं बारेलाल, दुनियाँ का सबसे धनी, एक बार फिर अपनी रेहड़ी लुटाने लगा था।

+++

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

डायन

एक बार फिर.... तमक सी गई लाजो, पेट के निचले हिस्से में...., भीतर... एक हल्के से स्पन्दन की अजीब सी अनुभूति हुई उसे, जानती थी वह कि बन रहा उसके भीतर पल-पल कुछ.... और उतना ही दरक रही है वह; उसने आँखें बंद कर ली... सिर पीछे दीवार पर टिका लिया... निढाल सी... मन और मस्तिष्क अपने ही शरीर के भीतर बेचैन से घूम रहे थे। उसके पास मंगलिया और भरतो कुछ दूर बैठे थे, मंगलिया कह रहा था

''देख भौजी... आठ नौ साल हो गए मुझे... तेरा खेत आधे-बंटाये पर लेते हुए... अगर एक दाने का भी बेईमाना निकल आये.... तो चौराहे पर बैठाकर सौ जूतियाँ मार मुझे... मगर..

''चुप रही लाजो.... उसी तरह दीवार से सिर टिकाए, पीढ़े पर पास ही बैठी भरतो ने आगे बढ़कर उसके सिर पर हाथ फिराया

''कैसे कह दूँ सखी.... कि धीरज रख....? अब तो ऐसा भी कुछ नहीं बचा... जो सही हो जायेगा... मगर जीजी, जीना तो पड़ेगा न?''

कोई जबाव नहीं दिया लाजो ने... वह तो बस निढ़ाल सी दीवार सहारे बैठी रही गुम-सुम...। उसने अपने धोती के पल्लू से पेट को ढका... तो चौंक गई भरतो.... उसने गौर से, आँखें बंद करे बैठी लाजो को देखा, फिर पति की ओर मुड़ी... बोली

''तुम अभी जाओ जी, बाद में बात करना... और मैं थोड़ी देर बैठती हूँ इसके पास....''

मंगलिया धीरे से उठा... और चल दिया दरवाजे की ओर... हालांकि वह चाहता था कि आधे बंटाए पर खेत लेने की बात अभी पक्की हो जाती तो... चिन्ता मिटती, अगर लाजो ने किसी दूसरे से हाँ भर दी तो... वह कहीं का नहीं रहेगा...।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

चलते-चलते वह रुका.... बोला

"मैं जानता हूँ भौजी... तेरा जी ठीक नहीं है... पर खेतों के बारे में फैसला बता देती तो ठीक रहता.... वैसे अगर तू चाहे तो सारा सिल्ला भी तेरा... बीनकर भी मैं दूँगा.... भुस का तू करेगी क्या ?..... उसके ठीक-ठाक पैसे लगा दूँगा"

भरतो आगे बढ़ी, उसने पति की बाँह पकड़कर उसे बाहर ढकेला।

"तुम अभी जाओ जी... बाद में सब बात हो जायेगी"

मंगलिया हैरान, मगर खिन्न मन बाहर निकल आया....

भरतो ने बाहर का दरवाजा बन्द कर सांकल चढ़ाई.... फिर आकर लाजो के पास बैठ गई.... उसने लाजो का सिर हाथों में ले लिया

"सब ठीक हो जायेगा लाजो.... और देख भारी काम नहीं करना और बहुत ध्यान से चलना.... उँचा-नीचा पैर न पड़े कहीं.... घर में किसी काम की जरूरत पड़े तो मेरी लड़की को या मुझे आवाज दे देना.." सुनकर लाजो ने आँखें खोली... हैरानी से अपनी सहेली भरतो को देखा

"तू क्या समझती है.... नहीं बतायेगी तो पता नहीं लगेगा क्या ?" कहते हुए मुस्कराई भरतो...., मैंने भी एक बेटा और दो बेटे जने हैं.. सबकुछ छिपा ले औरत... पर यही ना छिपता। भुलाना आसान तो नहीं जीजी... पर फिर भी जो हो गया भूल उसे.... अब इसकी सोच... खुश रह.... यही काम ढंग से निपटा दे... इसी काम के लिए तो बनाया है भगवान ने औरत जात को" कहते-कहते लाजो के सिर और कन्धों को सहलाती रही भरतो और लाजो ने एक बार फिर अपना सिर पीछे दीवार पर टिका लिया था...

"जा तू जीजी" आँखें बंद किए हुए ही उसने कहा था, "कब तक बैठी रहेगी, और मेरा क्या..?"

"देख ऐसे करेगी तो कैसे चलेगा... पढ़ी-लिखी है तू... बच्चे पर बुरा असर पड़ता है... उठकर काम-धन्धा कर, रोटी बना... खा.... तू खायेगी कुछ... तभी तो बच्चे को मिलेगा... उसे भूखा क्यों मारती है, औरत को माँ बनने से बहुत पहले

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ही माँ बनना पड़ता है''

कुछ नहीं कहा लाजो ने

''कोई बात, कोई जरूरत हो या कोई परेशानी हो तो, मैं हूँ न तेरी सखी !''

''मैं ठीक हूँ जीजी.... कोई बात होगी तो बता दूँगी'' लाजो ने कहा. और कुछ देर बाद चली गई भरतो... पीछे रह गई लाजो...। उसने दीवार से सिर उठाया... सामने की दीवार पर उसकी सास सुखिया की तस्वीर टंगी थी.... उदास मन से वह बुदबुदाई...

''ले सासू माँ... बहुत चाव था न तुझे पोते-पोती को देखने का. .. हो गया तेरा काम.... तेरी बंस-बेल....!'' बुदबुदाते हुए उसने अपने पेट पर हाथ फिराया.... और रो पड़ी हिचकियाँ लेकर

कुछ देर बाद जब हिचकियाँ रूकीं... तो सामने फिर वही सासू माँ की तस्वीर थी।

इसी भरतो की गोद भराई करवाने में ही तो गई थी सुखिया... मेरे गाँव लखीमपुर में और वहीं देखा था सुखिया ने लाजो को। लाजो को तो पता भी नहीं था कि भरतो की होने वाली ससुराल से गोद भराई करवाने आई छह औरतों में से एक उसे बहुत गौर से देख रही है। लाजो तो सहेली की गोद भराई की रस्म में भागम-भाग में लगी थी, कीरतपुर से आई उन छह औरतों की आवभगत बड़े मन से कर रही थी। कभी उन्हें पानी पिलाना.... कभी शरबत के गिलास ले जाने.. कभी चाय-नमकीन... और फिर खाना...

गाँव के माहौल में जहाँ हर कोई तू, तुम और तुम्हारे जैसे शब्दों का प्रयोग कर रहा था वहीं लाजो सभी से आप कहकर बात कर रही थी। वह थी भी सबसे अलग... सजी-संवरी औरतों, सहेलियों के बीच एकदम सादी.... साधारण... सस्ते से सूट में।

एक गरीब मास्टर की बेटी...., लाजो के जन्म के कुछ समय बाद ही माँ बीमार पड़ी... मास्टर का घर और थोड़ी सी खेती लायक जमीन... सबकुछ बिक गया... माँ भी नहीं बची.... थोड़ी सी पैंशन से जैसे-तैसे गुजारा हो रहा था... पर भविष्य नहीं था... शादी की उम्र निकल रही थी...। जाति-बिरादरी में बहुत

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

घूमे-फिरे मास्टर जी... परन्तु कहीं बात बनी नहीं....। दान-दहेज की बात तो दूर... दस आदमियों के खाने-खातिर का इंतजाम भी नहीं कर सकते थे मास्टर जी... अब तो शायद यही सोचते थे कि कोई अधेड़... दूजबर ही मिल जाय तो बेटी की जिम्मेदारी से मुक्ति पा लें... लाजो की आँखों ने तो सपने देखना सीखा ही नहीं था... रती, जमना... सुनन्दा... अनारो.... उसकी सभी सहेलियाँ एक-एक कर ससुराल जा चुकी थी और अब भरतो भी....।

सिर गुंथनी की रस्म होने के लिए बाहर दलान में दरियों की जरूरत थी। लाजो तो दरी लेने आई थी... सुखिया ध्यान से देखने लगी उसे..

''लाजो...! जरा यहाँ बैठ मेरे पास ?'' और वह आ बैठी अपनी सहेली भरतो की ससुराल की औरतों के बीच...।

''जी... बोलिए... कुछ चाहिए आपको ?''

''कुछ ही नहीं... बहुत कुछ चाहिए !'' बोली थी सुखिया

''जी बोलिए ?'' उसने कहा था

''तेरी सगाई हो गई ?''

सुनकर लाजो चौंकी.... उसका चेहरा झुक गया था

''जी नहीं....!'' बहुत मुश्किल से कहा उसने

''कहीं से और कोई बात ?'' पूछा सुखिया ने.... लाजो चुप रही थी

''ठीक है तो सुन.... ज्यादा नहीं चालीस बीघे धरती है मेरे, दो छोरे हैं.... बड़े वाले जोरावर के लिए.... तू बहू बनेगी मेरी ?'' एक बार फिर चकित हुई लाजो

''जी !'' उसने झटके से चेहरा उठाकर सुखिया को देखा और सुखिया मुग्ध, हलकी सी मुस्कान लिए देख रही थी लाजो की ओर, उसने चेहरा झुका लिया... चुन्नी के सिरे को उँगली पर लपेटते हुए।

''बोल न.... बहू बनेगी मेरी ?'' दोबारा पूछा सुखिया ने... हड़बड़ा गई लाजो....

''ज... जी... जी वो...''

''क्या ?'' पूछा सुखिया ने

''अ... आ.. आप.... बाबा से बात कीजिये न'' लाजो ने

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हकलाते हुए कहा था

"उनसे भी बात कर लूँगी... भगाकर नहीं ले जाऊँगी तुझे" कहते हुए हंसी सुखिया..., "पहले तू बता... तू राजी है कि नहीं ?"

"जी म..मैं क.. क्या बोलूं ?" हकलाते हुए कहा लाजो ने

"ठीक है फिर... मत बोल कुछ" कहते हुए सुखिया ने अपने हाथों से सोने की दो चूड़ियाँ उतारी और लाजो का हाथ पकड़कर उसे पहना दीं.... हैरान, परेशान, सकपकाई सी लाजो देखती रह गई सुखिया को... समूचे शरीर में सिरहन... मन में रोमांचित कर देने वाली हिलोर उठी थी। वह न तो कुछ बोल पाई न ही समझ पाई थी।

"और ये भी ले..." कहते हुए सुखिया ने अपने गले से जंजीर उतारी और लाजो के गले में डाल दी बोली,

"याद रखना अब... मेरी हो गई तू... किसी और के यहाँ मत जाना... नहीं तो... वहीं से चुटिया पकड़कर खींचकर लाउँगी।"

दो वाक्यों में इतना अपनापन... लाजो की आँखें भर आई. .. उसने चुन्नी को सिर से माथे के आगे तक सरका लिया और सुखिया के पाँव छुए

"पाँव छूने से काम नहीं चलेगा"

"जी...!" लाजो ने एक बार फिर हैरानी से सुखिया को देखा

"बस जल्दी से चलकर घर सम्भाल ले अपना"

सुनकर झेंप गई लाजो

"जा... बोल दे अपने बाबा से...मर्दाने में ठाकुर जुलकरन सिंह जी बैठे हैं.... बाकी बात कर लेंगे दोनों "

सुनकर उठी लाजो और सभी औरतों को नमस्ते कर चल पड़ी, सभी की सभी उसे हैरानी से देख रही थीं... बाहर दरवाजे पर लाजो अपनी जूतियाँ पहन ही रही थी कि अन्दर से किसी औरत की आवाज आई

"ऐ सुख़िया... तू तो घणी चतुर जीजी, किसी से पूछा-ताछा भी नहीं...पता नहीं, ऐसा क्या देखा तूने उसमें,? तुझे इतनी भा गई कि एकदम से पक्का पुख्ता जाबता कर लिया... रिश्तों की बात तो मरद लोग करते हैं पहले" सुनकर मुस्कराई लाजो..., चलने को हुई... तभी दूसरी औरत की आवाज आई

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

डायन

"बहुत जल्दी कर रही है सुखिया तू.... ठीक नहीं है ये लड़की" सुनकर लाजो का कलेजा धक से रह गया, वह ठहर गई

"क्या ठीक नहीं है ?" सुखिया की आवाज आई थी

"जैसा मैंने सुना है... इसके पैदा होने से तीन महीने पहले इसका भाई गुजर गया था.. फिर पैदा होते ही माँ को खा गई"

आगे सुन नहीं पाई लाजो... मुँह में चुन्नी ठूसते हुए भागी थी. ... घर तक पहुंचते-पहुचंते हिचकियाँ बंध चुकी थी... आँसुओं से भरा चेहरा रोती... हिलकती... मास्टर जी की छाती से जा लगी

"मैं मनहूस हूँ बाबा.... मैं मनहूस हूँ !"

"किसने कहा....?" मास्टर जी हैरान परेशान थे.... बेटी के सिर को प्यार से सहलाते हुए...

"सब जानते हैं बाबा...." वह रोते हुए बोली, "और सभी कहते हैं"

"मगर हुआ क्या ?"

"होगा क्या बाबा... बस मनहूस हूँ मैं, पैदा होने से पहले भाई को और पैदा होने के बाद माँ को खा गई... घर-खेत सबकुछ बिकवा दिया मैंने" कहते हुए वह बिलख रही थी

"पागल है तू.... कुछ नहीं है ऐसा... चुप हो जा बस" सात्वना देते हुए मास्टर जी बोले थे...

कुछ देर बाद उसका सुबकना रुका... तो उसने सारी बात मास्टर जी को बताई.... मास्टर जी महसूस कर रहे थे बेटी के मन का दर्द... सुनकर कुछ बोल नहीं पाये... वे सोचते हुए उदास-गुमसुम बैठ गये थे टूटी सी कुर्सी पर. लाजो भी चुप थी... बैठी थी दीवार के सहारे सिर झुकाए.... घुटनों पर हाथ और हाथों पर चेहरा टिकाए.... एक सपना जो सही ढंग से देखा भी नहीं था.... इस तरह टूटेगा कि मन भी टूट जायेगा उसके साथ, सोचा तक नहीं था..... भगवान सपने मत दिखाना. ... मुझे नहीं चाहिए सपने भी.....।

अचानक मास्टर जी उठे... धीरे से चलते हुए लाजो के पास आये, उन्होंने लाजो के सिर पर हाथ रखा

"लाजो....?" कहते हुए उनकी आवाज भारी थी

"जी बाबा" लाजो ने अपना चेहरा उपर उठाया

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

डायन

"ठकुराइन को ये जेवर वापिस कर दे बेटी !" कहते हुए मास्टर जी का दिल टुकड़े-टुकड़े हो रहा था, "अगर किसी तरह ये बात बन भी गई... तो हम उनकी हैसीयत के नहीं हैं. .. उतार दे बेटी इन जेवरों को. मैं खुद वापिस करके आता हूँ"

"जी बाबा" कहते हुए लाजो ने चूड़ियों को उतारने के लिए हाथ बढ़ाया.... तभी दरवाजा खटखटाने की आवाज आई... लाजो के हाथ रूक गए... मास्टर जी ने ढलके हुए किवाड़ों को खोला

"मैं ठाकुर जुलकरण और ये मेरी ठकुराईन.... आप मास्टर जी हैं न..?"

"जी.... अन्दर आईये न" कहते हुए मास्टर जी एक ओर हट गये, चौंककर लाजो उठी.... उसकी पलकें और चेहरा झुक गया था। ठाकुर जुलकरन उसे गौर से देखते हुए अन्दर आये... फिर मास्टर जी द्वारा आगे सरकार गई कुर्सी पर बैठ गये। सुखिया आगे बढ़ी... उसने लाजो का चेहरा हाथों में ले लिया... बोली

"जाके पाँव छू अपने ससुर के"

सुनकर चकित थी लाजो... उसने चुन्नी का हलका सा घूंघट किया और ठाकुर जुलकरन के पाँव छुए, लाजो ने अपने सिर पर उनका हाथ महसूस किया....। फिर उठकर जमीन पर दरी बिछाई जिस पर सुखिया बैठ गई.सुखिया ने अपने पति की ओर देखा, बोली

"कहिए जी.... पसन्द आई आपको अपनी बहू ?"

सुनकर एक बार फिर धड़का था लाजो का दिल, कुछ देर तक तो ठाकुर साहब कुछ नहीं बोले, वे देर तक देखते रहे लाजो को..उसके बाद सुखिया की ओर देखते हुए हँसे थे

"मैं एक बात सोच रहा हूँ ठकुराईन... तूने इसे अपनी बहू तो बना ही लिया" सुनकर लाजो एक हाथ की चूड़ी को दूसरे हाथ से घुमा रही थी, "पूछने पर हो सकता है मास्टर जी मना कर दें... बस जल्दी से जल्दी सीधे ही बारात लेकर आ जाउँगा" सुनकर कुछ रोमांचित सी हो गई लाजो, मास्टर जी ने ठाकुर जुलकरन की ओर देखा

"ये आप क्या कह रहे हैं ठाकुर साहब ? मेरी इतनी हिम्मत कहाँ जो मना कर सकूँ" सुनकर ठाकुर साहब हंसे, उन्होंने

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सुखिया की ओर देखा....

"ठीक है...! मास्टर जी मना नहीं करेंगे, ऐसा कर ठकुराईन अभी ले चल अपनी बहू को !"

सुनकर चौंकी लाजो.... हैरान से थे मास्टर जी

"ये आप क्या कह रहे है ठाकुर साहब... ? मगर... मगर कहाँ आप, कहाँ मै.... अपनी बेटी को कुछ देने की बात तो दूर... मुझ गरीब के पास तो दस आदमियों की सेवा खातिर करने लायक भी नहीं है।"

सुनते हुए ठाकुर साहब उठे थे, उन्होंने मास्टर जी के हाथ पकड़े ...

"मेरे पास भगवान का दिया सब कुछ है मास्टर जी, अपने बेटे के लिए बहू मुझे पाँच कपड़ों में चाहिए और वे पाँच कपड़े भी हम लायेंगे.... गिनती के पाँच-छह आदमी ही होंगे.... खाना अपने घर से लाएंगे.... आप पानी पिला देना बस...?"

सुनकर मास्टर जी की आँखें भर आई थी.... वे भावावेश में लिपट गये थे ठाकुर जुलकरन से.....

"मुझ गरीब की बेटी को अपनाकर मुझ पर मेहरबानी कर रहे हैं आप" सुनकर जुलकरन ने सात्वना और प्यार भाव से थपथपाया था मास्टर जी को

सुखिया ने लाजो के सिर पर हाथ रखते हुए मास्टर जी से कहा

"अब ये तुम्हारी बेटी नहीं मास्टर जी, हमारी अमानत है तुम्हारे पास" सुनकर कृतज्ञता से हाथ जुड़े थे मास्टर जी के।

सोचते-सोचते लाजो ने डबडबाई आँखों से दूसरी दीवार पर टंगी ठाकुर जुलकरन की तस्वीर की ओर देखा परन्तु लाजो को लिवाने, लखीमपुर बारात लेकर कभी नहीं आ सके ठाकुर जुलकरन।

वे नहीं रहे...।

लाजो ने सुना तो स्तब्ध रह गई... एक बार फिर आँखों में आँसू भरे लग गई मास्टर जी के सीने से

"मैं मनहूस हूँ न बाबा.... डायन हूँ मैं !"

बेटी के सिर पर सांत्वना का हाथ फिराते.... कुछ नहीं बोल पाये मास्टर जी। उन्हें जाना तो पड़ा ही कीरतपुर.... वे गये भी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

डरते-डरते... और जब तक वे नहीं लौटे.... शंका-आशंका में डूबी गुम-सुम सी सोचती रही थी लाजो, वह तो यह भी तय नहीं कर पा रही थी कि उसे क्या सोचना चाहिए और क्या नहीं. ... बस कभी गले में पड़ी सोने की चैन को सहलाती.... कभी हाथों में पहनी उन चूड़ियों को देखती।

मास्टर जी लौटे तो उसने उनसे पूछा नहीं कुछ। क्या हुआ होगा ? शायद वह जानती थी....। मास्टर जी ने लाजो के चेहरे को दोनों हथेलियों के बीच थाम लिया.... बोले "जो तू सोचती है या मैं सोचता हूँ या और बाकी सारी दुनियाँ सोचती है... ठकुराईन वैसा कुछ नहीं सोचती बेटी" सुनकर लाजो हैरान थी "एक बात कान खोलकर सुन लेना बेटी... तेरे उस घर में जाने के बाद.... अगर तूने ठकुराईन को कोई दुख दिया... उँची आवाज में ही नहीं.... अगर उसके सामने बोली भी तू... या फिर उसके सामने तूने आँख भी उठाई... तो तेरा यही बाप.... खुद तुझे जिंदा जमीन में गाढ़ देगा" कहते हुए मास्टर जी का गला रूंध गया था...., "देवी है ठकुराईन.... मेरे सामने सभी ने उससे कहा कि सुखिया ये रिश्ता तोड़ दे.... क्यों बरबादी को न्यौता दे रही है.... तो जानती है उसने क्या कहा...?"

पूछ नहीं पाई लाजो.... उसने देखा प्रश्नभरी दृष्टि से मास्टर जी की ओर

"उसने कहा "ठीक है... तोड़ दूँगी मैं रिश्ता...., मेरे एक सवाल का जवाब दे दो बस... अगर लाजो तुम में से किसी की बेटी होती.... या फिर मेरी अपनी बेटी होती तो....?"

सुनकर स्तब्ध रह गई लाजो... उसने मन ही मन पाँव छुए थे सुखिया के... "तेरी एक खुशी के लिए सासू माँ.... हजारों जन्म कुर्बान कर देगी तेरी ये लाजो...."

और जैसा ठाकुर जुलकरन ने कहा था, हुआ वैसा ही...

पाँच आदमी आये थे लखीमपुर, एक छोटा सा सादा समारोह, पड़ोस की औरतों के दो एक मंगल गीत.. और जोरावर के साथ, अग्नि के चारों ओर उसके फेरे... और फिर पहुँच गई थी लाजो ससुराल, सास के लाड़ तो देखते ही बनते थे.... अपने इस अनमोल धन को वह कहाँ उठाए और कहाँ बैठाए। अपने छोटे

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बेटे को तो उन्होंने लाजो की सेवा में लगा दिया... कि "ध्यान रखना जसवन्त, तेरी भाभी को कोई परेशानी न हो"

सभी रस्म-नेग किए सास ने, और उस दिन भी तो... दूसरा ही तो दिन था लाजो को कीरतपुर आये... और यहीं तो बैठी थी पड़ोस की औरतों से घिरी... सुखिया बोली

"बहू खड़ी हो जरा ?" सकुचाई सी लाजो उठी और सुखिया ने पूरे घर की चाबियों का गुच्छा लाजो की कमर में खोंस दिया... लाजो ने चकित हो सास को देखा

"ले सम्भाल अपना घर... मुझे छुट्टी दे... बहुत कर लिया मैंने !" लाजो तो कुछ बोल नहीं पाई... बोली थी भरतो की सास "तू तो बावली हुई सुखिया.... अभी उमर ही क्या इसकी ? .. घर, खेत-क्यार, अभी से सम्भाल लेगी क्या ये ?"

"सम्भालेगी क्यों नहीं ?" कहा था सुखिया ने, "मैंने नहीं सम्भाले थे क्या...? मैं तो इससे छोटी थी तब.... और फिर मेरी तो सास भी बीमारी में खाट से लगी थी उस वखत..."

"तब भी सुखिया... जीजी आते ही जिम्मेदारी मत लाद इस पर और फिर नई-नई है.... कुछ दिन देख तो... आते ही यों सारा कुछ सौंप दिया ?"

सुखिया हंसी.... लाजो के चेहरे को हाथों में लेते हुए बोली. ... "अरी बसन्ती.... जीजी यही तो फायदा है पढ़ी-लिखी बहू लाने का.... जो आते ही ठीक-ठीक सबकुछ सम्भाल सके... और फिर मैं कहाँ जा रही हूँ, देखती रहूँगी.... आराम से खाट पर लेटी.... अब इसका घर है, मैं काम क्यों करूँगी....? अब तो ठाठ से खाउँगी-पिउँगी... और पोते-पोती खिलाउँगी..." सुनकर लजा गई लाजो.... उसके बोलने लायक कुछ था ही नहीं

"पड़े-पड़े मुटा जायेगी सुखिया तू" बसन्ती ने कहा, "कुछ तो काम करना पड़ेगा तुझे"

"हाँ करूँगी क्यों नहीं...? हुकुम चलाउँगी बस..!"

"परन्तु हुकुम चला कहाँ पाई सासू-माँ आप मुझ पर" बुदबुदाते हुए लाजो ने सुखिया की तस्वीर की ओर देखा "तेरा हुकुम मानने के और तेरी सेवा करने का भाग्य मेरा था ही नहीं. ... दुर्भाग्य CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri र में" कहते

हुए लाजो ने घुटनों में मुँह छिपा लिया और बिलखकर रो पड़ी.

माँ तो माँ....बेटा भी कम नहीं था, छोटे वाला नहीं... बड़े वाला। दोपहर को जरा सा मौका मिला... आ डटा लाजो के सामने

"देख बड़ी मुश्किल से मौका मिला है, सबकी नजर बचाकर आया हूँ, वैसे क्या अन्याय है...? तू लुगाई तो मेरी है और तुझे घेर कर बाकी सारे बैठे रहते हैं...., शरम-लिहाज तो दुनिया के है ही नहीं !" जोरावर की बात सुनकर मन ही मन मुस्करा रही थी लाजो

"ऐसा कर... अब जल्दी से घूंघट हटाकर जरा एक बार चेहरा दिखा दे" कहते हुए जोरावर ने उसके कन्धों पर हाथ रख दिये... और लाजो तो सिमटने लगी.... उसने दोनों हाथों से अपना घूंघट पकड़कर और भी नीचे खींच लिया और वह कह रहा था "जरा जल्दी कर... कोई आ गया भीतर... तो फिर पता नहीं, मौका मिले ना मिले.... जरा मुझे भी तो देखना है कि मेरी माँ के उपर कैसे जादू कर गई तू ?

परन्तु शर्मायी, सकुचाई लाजो कन्धों को मोड़कर जोरावर के हाथों को हटाने की कोशिश कर रही थी

"ये तो गलत बात है... तूने तो मुझे बहुत अच्छी तरह देख लिया... और अब मेरी बारी आई तो...., अच्छा समझ गया, तूने अखबार में पढ़ लिया होगा आज का" कहते-कहते हंसा वह. .. चौंकी लाजो, उसने घूंघट से ही जोरावर को देखा..

"सरकार ने नया कानून पास किया है कि किसी आदमी को अगर अपनी दुल्हन का चेहरा देखना है... तो पहले उसे ऐप्लीकेशन लिखकर दुल्हन को देनी होगी..." सुनकर मुस्करा गई लाजो

"वैसे हमारी माँ ने भी हमारे साथ ठीक नहीं किया... आते ही घर, खेत, खलिहान, कुठार, सन्दूक सबकी चाबियाँ सौंप दी तुझे.... उसने ये भी नहीं सोचा कि सारे-कुछ की मालकिन बनने के बाद वह लड़के को मुँह भी नहीं देखने देगी, तो क्या होगा ?"

क्या कहे लाजो ...? जोरावर का मीठा सा ताना, मीठी सी चुहल, मन-तन सभी कुछ रोमांचित था लाजो का

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

डायन

''अच्छा देख वो सन्दूक है न लकड़ी की'' जोरावर ने कोने में रखे सन्दूकों के नीचे वाले लकड़ी के बक्से की ओर इशारा किया.. ''इसमें पैसे हैं... चाबी तेरे पास है, जरा दो-तीन हजार रूपये निकाल कर दे चुपके से... और माँ को मत बताना !''

सुनकर चकित हुई लाजो.... बड़ा अजीब धर्म संकट था

''अब जल्दी कर न... कोई आ गया तो ?''

हैरान परेशान लाजो कुछ सोच नहीं पा रही थी... तभी माँ की आवाज आई....

''जोरावर.... देख, मंगलिया आया है...''

''आया माँ...'' कहते हुए जोरावर कमरे से बाहर निकल गया

''और देखो... शाम को जल्दी लौटना दोनों !'' सास की आवाज आई थी

''लौटेंगे तो तब न माँ.... जब जायेंगे।''

''क्यों ?''

''क्यों क्या ? तेरी बहू ने पैसे तो दिये ही नहीं, कहती है फालतू का खर्च है.... कोई जेवर लाने की जरूरत नहीं... मुँह दिखाई के लिए दो रूपये के गुड़ के सेब ले आओ बस!''

सुना लाजो ने... हैरान.. स्तब्ध और हंसी भी आई पति की बात पर. थोड़ी देर पहले कह रहा था... ''जल्दी से पैसे दे दे और माँ को मत बताना !''

सास भीतर आई... लाजो से चाबी लेकर, उपर के सन्दूकों को हटाकर लकड़ी के बक्से को खोलती हुई बोली

''देख रही है बहू... इसी जोकर के साथ जिन्दगी निभानी है तुझे''

सबकुछ सुन-समझकर मन ही मन मुस्कराती रही लाजो। और चला गया वह शहर, मुँह दिखाई के लिए कोई जेवर लाने... परन्तु लौटा नहीं... शहर से गाँव की ओर चलने वाली आखिरी बस में भीड़ ज्यादा थी... बस के उपर बैठा था.. और गाँव की पतली छोटी. .. गड्ढों भरी सड़क किनार, गहरे गड्ढे में गिरी थी बस... चोटें तो बहुतों को आई थी लेकिन मरा केवल जोरावर ही था।

रो भी नहीं पाई लाजो.... पगलाई-पथराई सी... बैठती चली

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

गई जमीन पर... यहाँ तो कोई ऐसा कंधा भी नहीं था जिससे लगकर रो सके, सात्वना का कोई हाथ नहीं था, सास तो पेट पकड़कर पछाड़ें खा रही थी... लाजो घुटनों में मुँह दिये बैठी थी... घर में आने वाला हर आदमी, हर औरत लाजो को शंका, डर, गुस्से और घृणा की नजर से देख रहा था। स्वयं लाजो को भी लग रहा था कि गुनहगार वही है... वह मना रही थी भगवान से कि धरती फट जाये और वह उसमें समा जाये, परन्तु भगवान ही इतना निष्ठुर न होता तो ये सब उसके साथ होता ही क्यों ?

और जब लाजो का श्रृंगार उतारने की बारी आई... तो सुखिया लिपटकर रो पड़ी थी लाजो से,

''मुझे माफ कर देना बहू, मैं तेरा विधवा का रूप देखने के लिए नहीं लाई थी तुझे''

सुनकर लाजो को पहली बार सात्वना मिली थी... तब भी वह क्या कहती और कैसे कहती...

मास्टर जी आ पाये थे दूसरे दिन, वे भी क्या कहते, चुप रहे। कुछ देर ठहरकर चले गये...

दूसरी बार आये थे क्रिया के दिन... बेहद थके-टूटे निराश. ... वर्षों के बीमार लग रहे थे.. लाजो ने देखा तो विस्वास नहीं हुआ, सबकुछ निपट जाने के कुछ दिन बाद मास्टर जी फिर आये थे बेटी को लिवाने, और लाजो हाथ जोड़े, आँखों में आँसू भरे जा खड़ी हुई सुखिया के सामने

''जाने की आज्ञा दे सासू माँ... इस मनहूस को...?''

''जाना चाहती है.... चली जा।'' कहा सुखिया ने ''मगर यह मत सोचना कि तुझे छोड़ दूँगी मैं....! कुछ दिन के लिए चली जा, जी बहल जायेगा तेरा... परन्तु तेरा घर तो अब यही है, ये घर तुझे ही तो सम्भालना है और औरत मनहूस नहीं होती वह तो सृष्टि करती है सृजन करती है''

''नहीं सासू माँ.... नहीं हो सकेगा मुझसे'' कहते हुए रोने लगी थी वह

''क्या तू औरत नहीं है ?'' सुखिया ने पूछा था, लाजो ने चौंककर चेहरा उठाया, आखिर अजीब सा तो प्रश्न था सुखिया का.

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

''औरत में तो बहुत हिम्मत होती है... दया, ममता, करूणा, मातृत्व, क्षमा, संहार, सृजन, प्रेम, बलिदान की प्रतीक नौ दुर्गाओं के रूप हैं उसके भीतर, कहता है जमाना कि अबला होती है औरत... जिन्दगी भर मर्द का सहारा चाहिए उसे, मगर असल में शक्ति है मर्द की वह, अगर औरत ही टूटेगी-बिखरेगी तो दुनियाँ नहीं चलने की... उसका तो हर पल, हर कदम... इम्तिहानों से भरा होता है.... बड़े से बड़े दुख, दर्द, घाव, अपमान, आक्षेप... प्रताड़ना सहन कर सके... पर टूटे नहीं उसे औरत कहते हैं.... ये सब मर्दों के बस का कहाँ....?''

और लाजो.... हैरानी से देखती रह गई सुखिया को, उसका तो सिर झुकता चला गया था सुखिया के सामने

''कब तक भागेगी... मरने का मन भी करता है कभी-कभी औरत का, पर वो आसान है... मुशकिल तो जीना होता है.... और औरत का जीना तो....? आसान और खुशियों-सुखों का जीवन तो कोई भी जी लेगा।'' कहते हुए रुकी सुखिया, देख रही थी वह, सिर झुकाए हाथ जोड़े खड़ी लाजो को।

''फिर भी . अगर जीने के लिए तुझे आदमी का सहारा ही चाहिए तो!'' कहते हुए उसने जसवंत की बाँह पकड़ी और उसे लाजे के सामने खड़ा कर दिया.... ''ये ले.... आज से ये तेरा आदमी हुआ !''

लाजो ने चकित होकर सुखिया की ओर देखा... फिर जसवंत की ओर, जो कुछ भी समझ नहीं पा रहा था, वह कुछ भी बोली नहीं... बोले थे मास्टर जी

''मगर ठकुराईन...!''

''जानती हूँ मास्टर जी.... अभी छोटा है ये.... तो ये पालेगी इसे। मैं लाजो को इस घर में ब्याह कर लाई... इस घर पर मुसीबत आई तो छोड़कर भाग जायेगी क्या ? जोरावर से ही रिश्ता था क्या...? इस घर से कोई रिश्ता नहीं था इसका..?'' सुखिया ने कहा था

और लाजो आगे बढ़कर लिपट गई सुखिया के पाँवों से ''है सासू माँ है.. सभी से रिश्ता है मेरा.. तू जैसा कहेगी वैसा ही होगा !''

''मैं नहीं कहूँगी बहू कुछ भी... आगे सभी फैसले तुझे अपने

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आप लेने होंगे... और तेरे फैसले सही हों... इसकी जिम्मेदारी भी तेरी ही होगी'' कहकर सुखिया कमरे में चली गई... अगले पल वह लौटी, उसने साथ लाई सिन्दूर की डिब्बी खोलकर जसवंत के सामने बढ़ा दी

''जसवंत..! बेटा इसमें थोड़ा सा लेकर बहू की माँग में लगा दे''

''मगर सासू माँ ?'' कहा लाजो ने

''कहने को यह सिन्दूर है परन्तु ये बचायेगा तुझे... कितनी भी मुसीबतें होंगी... दुख-दर्द होगा... उलाहने.... ताने होंगे... ये भटकने नहीं देगा तुझे तेरे कर्तव्य... तेरी जिम्मेदारियों से... यूँ ही नहीं कहते औरत को त्रिया.... बेटी, पत्नी और माँ.... ये तीन आयाम होते हैं उसके और एक औरत ही जानती है कि यह सबकुछ आसान नहीं होता, सबकुछ अकेले औरत को ही सहना पड़ता है, ये सिन्दूर तो केवल इस ऐहसास के लिए है कि वह अकेली नहीं है वरना इस दुनियाँ में उससे अकेला तो कोई और है ही नहीं'' कहकर चुप हो गई सुखिया

और लाजो आकर बैठ गई थी दस साल के छोटे से जसवंत के सामने, डबडबाई... आँसू भरी आँखें और फिर चेहरे पर शरारत, प्यार, शर्म की मिलीजुली सी मुस्कान, उसने अपने हाथ की मुट्ठी बनाकर हलके से जसवंत के गाल पर मारी....

''ले मेरे छोटे से देवर... बना दे मुझे औरत...!''

और जसवंत ने उसकी माँग में सिन्दूर लगा दिया था।

उसके बाद वह उठकर मास्टर जी के पास आई, उसने हाथ जोड़कर कहा था

''मैं यहीं रहूँगी बाबा, मेरा घर, मेरे कर्तव्य, मेरा सबकुछ अब यहीं है.... मुझे आशीर्वाद दो बाबा।''

कुछ नहीं बोल पाये मास्टर जी... उन्होंने बेटी को सीने से लगाकर प्यार, आशीर्वाद से थपथपाया था

फिर चले गए थे मास्टर जी और लाजो... प्राणों में नया संचार लिए, जिम्मेदारी... कर्तव्य... अधिकार के अहसास से भरी एक पूरी औरत बन गई थी। सुबह-सवेरे उठना, पशुओं को चारा डालना, रोटी-सब्जी बनाना, जसवंत को नहला-धुलाकर स्कूल के लिए तैयार करना, फिर बरतन, कपड़े.... चौका....

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सुखिया को तो वह कुछ भी करने नहीं देती थी... भैंसों का दूध निकालने और खेती के लिए दो मजदूर रख लिए थे, कुछ दिन बाद पता चला मास्टर जी हरिद्वार चले गए

तीन साल बाद सुखिया बीमार पड़ी... काफी दवा-दारू, इलाज किया पर हालत बिगड़ती गई... और एक रात चली गई वह लाजो को रोती-बिलखती छोड़कर...

लाजो ने खेती आधे बंटाये पर दे दी

जसवंत बड़ा होता गया

गाँव के स्कूल की पढ़ाई करने के बाद शहर के कॉलेज में जाने लगा था। काम से निपटकर लाजो आ बैठती उस दीवार के सहारे जिसके सामने वाली दीवार पर सुखिया की तस्वीर लगी थी...

"तू देख रही है न सासू माँ अपने बेटे को.. खूब बड़ा हो गया है... पूरे पाँच हाथ का... तगड़ा ताकतवर.. लम्बी बांहें... चौड़ा सीना... एकदम बैल की सी चाल... पर तेरा बेटा मुझसे बात नहीं करता सासू माँ... नहीं तू जो समझ रही है वो बात नहीं है... पर उसका घर में आते ही चुपचुप रहना... शर्मीला सा रहना... नजर उठाकर भी नहीं देखना. अच्छा नहीं लगता मुझे"

बतियाती रहती वह सुखिया से

"अब आज सुबह की बात ले ले......... सोया पड़ा था....... पैर खाट से बाहर निकल रहे थे, इतना लम्बा जो हो गया है..... मेने आंखों के कोर से काजल लेकर लगा दिया उसके माथे के एक ओर......आंख खुल गई उसकी....... कहता था.... "कुछ कियां है तूने....?"

"क्या किया है मैने ?" बहुत कहा, कुछ नहीं किया पर माना नहीं.......तुरन्त उठा, शीशा देखने लगा.......फिर बहुत नाराज हुआ.....अब तू ही बता सासू माँ, मैने गलत किया क्या......? इतना लम्बा निकल गया है.....अगर मेरी ही नजर लग जाती तो? मगर टीका पौंछ दिया उसने..... कहने लगा अब मैं बच्चा नहीं हूं........ जी मैं तो आया कान खींचू उसके ....मगर फिर तेरा ख्याल आ गया........."

"और सासू माँ पता है रात को दस-दस, ग्यारह-ग्यारह बजे

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तक लच्छू की चक्की पर यार- दोस्तों के साथ बैठा गप्प मारता रहता है.... और मैं खाने की थाली रखे इन्तजार करती रहती हूँ....... मैने बहुत बरदाश्त किया, एक दिन कह दिया मैने. ...... तो भड़क गया.....पता है क्या बोला........कहता था तो थाली लेकर लच्छू की चक्की पर ही आ जाती! तू खा के सो जाया कर.........मेरी फिकर मत कर'' अब तू बता सासू माँ दूसरा कोई है जिस की फिकर करुँगी.........और फिर उसकी फिकर मैं नहीं करुँगी तो कौन करेगा....दूसरे उसे खिलाने से पहले, कभी मैने खाया है जो अब खांउँगी........? अब तो सोच लिया..सोच लिया है सासू माँ.... इस बार बी.ए. का रिजल्ट निकलते ही जिम्मेदारी से मुक्त हो जाऊँ...... अब तुझे बताया तो था मैने . ... वो नहीं हो सकता....... जो तू सोचे बैठी है.... कैसे होगा. .....मान लिया कि तूने इसके हाथ से मेरी मांग भरवा दी थी.. .. पर आत्मा नहीं मानती....... देख सासू माँ..........मैने पाला है उसे .....उसकी भी आत्मा मानती है इस रिश्ते को...... तभी तो नजर झुका कर रहता है...... कोई बात करती हूँ... तो हाँ हूं में जवाब देता है...तूने चाहे जो सोचकर इसके हाथ से मेरी मांग भरवाई थी परन्तु मैने केवल यह सोचा था कि माँ बनकर पालूँगी इसे... और फिर तूने ही तो कहा था कि ये सिन्दूर केवल उस ऐहसास के लिए है कि औरत अकेली नहीं है........ ये भटकने नहीं देगा तुझे तेरे कर्तव्य.... तेरी जिम्मेदारियों से, कितनी भी मुसीबतें होंगी..........दुख दर्द होगा........ ताने उलाहने होंगे, ये सिन्दूर बचायेगा तुझे........ तूने ही कहा था न....... अब सिन्दूर का सहारा लेकर दुनिया के सबसे अनमोल रिश्ते से भटक जाउँ.....? ये सिंदूर देता होगा हर औरत को एक पत्नी होने का ऐहसास..........मगर मुझे तो इसने एक माँ होने का ऐहसास दिया है.......... देख जिद मत कर सासू माँ..... मान जा. .... मैने सदा तेरी बात मानी है.... बस यही एक बात तू मेरी मान ले...... मुझ से मेरा माँ होने का अधिकार मत छीन....... वरना हर रोज..... हर रात....हर पल........ मेरे मन, मेरी आत्मा के हजारों-हजार टुकड़े होंगे....और एक बार फिर डबडबाई आंखों और कातरता से लाजो सुखियाँ की तस्वीर की ओर देख रही थी.

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

...

"अब तेरी नजर में कोई अच्छी सी लड़की हो तो बता सासू माँ, तेरे जैसी नजर मेरे पास कहाँ.......? ढूँढ दे कोई अच्छी सी लड़की, सपने में आकर बता देना मुझे.... पर सासू माँ तू मेरे सपनों में क्यों नहीं आती..........? कभी -कभी आती है........क्या तू अब मुझसे प्यार नहीं करती...?"

"वैसे एक बार मैने भरतो से कहा भी......... मेरे गाँव की है न, मेरी सहेली...... उससे मैं कोई भी बात नहीं छिपाती...... कह रही थी"

"पागल हुई है लाजों........ब्याह करेगी जसवन्त का ? और फिर तेरा क्या.....?" मैने कह दिया,"मेरा ? अरे जमीन-जायदाद मेरी....... आने वाली बहू भी मेरी"......... वैसे तूने तो मुझे कभी नहीं डाँटा साँसू माँ.... पर मै तो डाँटूगी......! अब गलती करेगी तो डाँटूगी नहीं क्या......? लाड़ की बात होगी तो लाड़ लड़ाउँगी. .... और ये बेटा कुछ कहेगा....... तो इसके कान उखाड़ूँगी.. .... फिर मत कहना मुझसे कि तूने पहले नहीं बताया था...... . बताये देती हूँ हाँ !"

परन्तु क्या मालूम कैसी किस्मत लाजो की....?

जब लगने लगता कि अब सब कुछ सही हो गया है, तभी कुछ ऐसा घट जाता जिसका कोई समाधन होता ही नहीं था

उस दिन बहुत रात हो गई थी..... रोज तो लौट आता था जसवन्त लगभग दस-ग्यारह बजे तक............. उस दिन बारह. .... फिर एक बज गया....... हैरान.......परेशान........ इन्तजार करती लाजो......... चिन्ता बढ़ती गई थी.......... इतनी रात को कहाँ ढूँढ़े वह उसे........ नहीं रहा गया तो वह उठकर गली में बाहर आई........... मंगलिया के घर जाये........ और उसे कहे जसवन्त को ढूँढ़ कर लाने के लिए.........तभी लाजो ने देखा गली के मोड़ पर उसे आते हुऐ.... उसकी चाल में लड़खड़ाहट थी.....लाजो हैरान थी

"तू सोई नहीं अभी तक..............?"

"तू ऐसे.... इतनी रात बाहर रहेगा.... तो मुझे नींद आयेगी?"

"ओके.... सॉरी-सॉरी" कहते हुए उसने अपने कान पकड़े,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

शराव का एक तेज भभका लाजो की नाक में घुस गया... उसने अपना हाथ अपनी नाक और मुँह पर रख लिया।

''तूने शराब पी है...?''

''थोड़ी सी....!'' उसने हाथ आगे कर उंगली और अंगूठे के इशारे से उसे समझाया

''थोड़ी सी तो नहीं पी... एकदम धुत तो है तू ?''

''नहीं.... बस थोड़ी सी... कसम से'' कहते हुए उसने अपना हाथ लाजो के सिर पर रखा... लाजो पीछे हटी

''नहीं मानती... अच्छा कसम से'' उसने अपने कण्ठ को पकड़ा, लाजो का जी चीत्कार कर उठा

''ठीक है मान गई... पर तू अपनी कसम मत खा...., चल भीतर चल''

''नहीं.... यहीं फैसला होगा'' वह अड़ गया

''इतनी रात गये... गली में क्या फैसला करेगा तू ?'' लाजो ने परेशान होकर पूछा

''देख पहले....'' कहते हुए उसने अपनी कमीज उपर की, अंटी में से बोतल निकाली और लाजो को दिखाते हुए उस पर उंगली रखी, ''देख ले इतनी सी पी है, अभी पूरे दो पैग बाकी हैं इसमें...''

लाजो हंसी.... उसकी बाँह पकड़कर उसे भीतर धकेलने लगी. ... ''चल तू भीतर चल'' कहा उसने, वह लाजो का सहारा लेकर लड़खड़ाते हुए अन्दर आया....''दो पैग बचे हैं... सारी बोतल खाली कर दी और इतनी सी पी है तूने....'' लाजो बड़बड़ाई

''ऐ... देख तू नाराज मत हुआ कर मुझसे.... मैं आदमी हूँ न तेरा'' सुनकर चौंकी लाजो, ''पर... पर पता नहीं मुझे तुझसे क्यों डर लगता है... थोड़ी हिम्मत बढ़ाने के लिएं पी ली है बस''

''हिम्मत बढ़ाने के लिए ?'' लाजो ने हैरानी से जसवंत की ओर देखा

''हाँ.... तू लुगाई है न मेरी... पर तुझे छूने की हिम्मत ही नहीं होती'' सुनकर लाजो का दिल अन्जानी आशंका से बुरी तरह धड़कने लगा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

"तू बैठ जा यहाँ" हकलाते हुए कहा लाजो ने और उसे सहारा देकर खाट पर बैठा दिया,

"मैं रोटी लाती हूँ तेरे लिये" कहकर वह चली, जसवंत ने उचककर हाथ पकड़ लिया उसका

"नहीं रोटी नहीं खानी, मेरे पास बैठ तू" कहते हुए खींच लिया जसवंत ने उसे "तू मेरे पास आती क्यों नहीं ?"

घबरा गई थी लाजो

"जसवंत छोड़ मुझे.... ये क्या कर रहा है" लाजो ने विरोध किया

"तू बहुत अच्छी है" लाजो को गिराते हुए वह झुका उसके उपर

"तो ?" सहमते हुए लाजो ने कहा,

जसवंत ने उसका चेहरा अपनी हथेलियों के बीच में ले लिया था, "अब तू मेरी औरत भी तो है न...!"

बेबस, परेशान.... फटी-फटी आँखों से उसे देखती लाजो... वह तो चिल्ला भी नहीं सकती थी

"देख... देख तू... तू होश में नहीं है" वह धीमी आवाज में चीखी थी

"तू सुन्दर है..." कहते हुए कस रहा था वह लाजो को

"नहीं जसवंत... छोड़ दे मुझे... देख ये गलत है" लाजो ने कसमसा कर अपने आपको छुड़ाने की कोशिश की

"तू मेरी औरत है... तो फिर इसमें गलत क्या है ?

उस पर कोई असर नहीं हुआ था...

"मैंने पाला है तुझे ?" वह चीखी थी

उसने कुछ भी सुना नहीं....

"मैं तुझे अपना बेटा समझती हूँ"

वह कुछ भी सोचने-समझने की स्थिति में नहीं था

हजारों वर्षों से आदमी ने औरत को, उसके मन को, उसके विचारों-सपनों को समझने की कोशिश की भी तो नहीं है... और हजारों वर्षों से चलते आ रहे उसके जुनून, एक विजेता होने के दर्प के सामने एक औरत कण-कण, तिनके-तिनके होकर बिखर गई थी, हजारों सालों की अपनी नियति के अनुरूप वह भी चुप थी, आँखों में आँसू भरे... मन-मस्तिष्क में बार-बार उमड़ते-घुमड़ते सैंकड़ों हजारों बवन्डरों को लिए चुपचाप वह बैठी थी उस दीवार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

के सामने जिस दीवार पर गेरू से देवी-देवता कढ़े थे और कभी वहाँ बैठाते हुए सासू माँ ने कहा था

"बहू.... पूजा कर इनकी और आज के बाद तू इस घर में पूजे जाने वाले देवी-देवताओं को ही पूजा करेगी"

"और इस घर में कोई दूसरा धर्म फैलाने की जरूरत नहीं है" जोरावर ने कहा था

"तू चुप रह....!" सासू माँ बोली

"मैं तो चुप हूँ" कहा जोरावर ने फिर लाजो की कमर में हलके से कोहनी गढ़ाई, बोला था

"पूज दे... पूज दे... माँ चवन्नी देगी...!"

"तू चुप नहीं रहेगा..." माँ बोली, "पूजने दे इसे... पूज बेटी देवताओं को"

और वह उन गेरू कढ़े देवताओं को पूजने लगी थी

और इतने बरसों बाद, उस दीवार के साथ लगी खाट पर बेसुध शांत पड़ा सो रहा था एक आदमी... एक औरत को लूट-तोड़कर

औरत जो हजारों सालों से देवता की पुजारिन है और देवता... जो हजारों सालों से पुजारिन को लूटता-तोड़ता रहा है। औरत के शरीर, आत्मा को तोड़कर बेसुध किन्तु तृप्त खाट पर सोया पड़ा देवता... और फिर दीवार पर सुखिया की तस्वीर को आँखों में आँसू लिए देखते हुए, लाजो घुटनों में मुँह दिये हिचकियाँ लेकर रो पड़ी थी...

दूसरे दिन नौ बजे उठा था वह.. दोनों हाथों से सिर पकड़कर खाट पर ही बैठा रहा कुछ देर... फिर मुँह घुमाकर सामने दीवार सहारे बैठी लाजो को देखा

"तूने मुझे जगाया क्यों नहीं ? इतना दिन चढ़ आया" वह खाट से नीचे पाँव लटका कर झुकते हुए अपने चप्पल ढूँढ रहा था और लाजो सोच रही थी कि कितना तो जगाया था इसे, मगर ये तो...!

"उफ सिर में कितना दर्द हो रहा है... जैसे फटा जा रहा है" सुनकर लाजो ने देखा वह दोनों हाथों से अपना सिर थामे था, लाजो ने फिर से अपना चेहरा घुटनों में दे लिया।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

''इतनी पियेगा तो... फूल थोड़े ही झड़ेंगे'' वह सोच रही थी

''और तू वहाँ बैठी काहे का शोक मना रही है ?'' उसने कहा तो लाजो ने चेहरा उठाकर उसे देखा. ''घर में कोई काम-धन्धा नहीं है क्या ?''

सुनकर हैरान थी लाजो

''इधर आ... जरा मेरा सिर दबा दे'' कहा उसने तो दोबारा हैरान हुई लाजो, वह चुपचाप देखती रह गई जसवंत की ओर

''सुना नहीं तूने....'' इस बार थोड़ा जोर से कहा उसने. ''आकर सिर दबा...!''

लाजो की हैरानियों के सभी सिवाने टूट गए थे

''उठती है या नहीं...!'' वह चिल्लाया

लाजो उठी थी.. और चल पड़ी थी टूटी-बिखरी-थकी सी विजेता की ओर....

और उसका सिर दबाते हुए बरसों पहले की बात याद आ रही थी उसे. तब.... जब वह आकर बैठ गई थी दस साल के जसवंत के सामने, डबडबाई आँसू भरी आँखें और फिर चेहरे पर शरारत, प्यार, शर्म की मिली-जुली सी मुस्कान... उसने अपने हाथ की मुट्ठी बनाकर हलके से जसवंत के गाल पर मारी थी... और उसके सामने अपना सिर झुकाते हुए कहा था

''ले मेरे छोटे से देवर.... बना दे मुझे औरत''

और तूने अपने छोटे से हाथ की चुटकी से सिन्दूर लगा दिया था मेरी माँग में, उस समय तू तो कुछ समझता ही नहीं था... और मैं समझी थी... कि मैं बन गई थी औरत.... कितनी नासमझ थी मैं..... औरत तो आज मुझे तेरे एक वाक्य ने बनाया है.... ''उठती है या नहीं !''

और उसके बाद

उसके बाद हर पल, हर रात... लाजो के मन-मस्तिष्क में विजेता का केवल एक ही वाक्य गूंजता

''उठती है या नहीं....!''

''उठती है या नहीं....!''

और फिर मन माने या ना माने

हर पल.. हर रात.... सामान्य सी होती गई थी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

लौटता वह अब भी देर से था...

इन्तजार वह अब भी करती थी...

उसके खाने से पहले खाना... वह अब भी नहीं खाती थी

लेकिन एक दिन वह खाना खा ही नहीं पाई, क्योंकि वह देर से भी नहीं लौटा था

लच्छू की चक्की पर शरावी दोस्तों में कोई झगड़ा हुआ था... मारपीट और फिर... खून से लथपथ जसवंत

बदहवास भागी गई थी लाजो

अपनी समूची जिन्दगी के दर्द-तड़प से कहीं बड़ी लगी उसे जसवंत की तड़प, सभी सिवाने तोड़ती अपनी चीखों से तेज लग रही थी उसे जसवंत की कराहट

और वह जसवंत जिसने हर रात उसके दिल-दिमाग में हजारों अंगारे भर दिये थे.. हर रात नौंचा-लूटा था उसे... अब उसी के शांत होते ही लुट गई थी लाजो

पछाड़ें खा-खाकर गिर रही थी उसके उपर

लेकिन सबकुछ खतम हो चुका था....

उसके घर... उसके जीवन में अब एक ठहराव आ गया था. एक स्तब्धता, एक सन्नाटा.... एक चुप्पी छा चुकी थी... उसने अपने गालों पर ढलक आये आँसुओं को पौंछा था...

"ले भगवान... तेरा भी काम खतम हो गया... अब तू भी चैन से सो पायेगा... अब ऐसा कुछ नहीं है मेरे पास जो तू" बुदबुदाते हुए वह अचानक तमक सी गई

उसके पेट के निचले हिस्से में एक अजीब सा स्पंदन....?

एक अजीब सी अनुभूति...?

उसका दिमाग-मन अपने शरीर के भीतर उसी हिस्से में घूमने लगा था

वह हैरान थी... विस्मित थी... वाकशून्य थी

वह उठी थी... चुपचाप चलकर लच्छू के घर की दीवार से सटकर बैठ गई थी, फटी आँखें जसवंत की लाश को घूर रही थी और मस्तिष्क अपनी ही कोख के भीतर...! औरतें उसे उठाकर घर तक ले आई थीं... बाकी की सारी रात वह चुपचाप बैठी रही... सुबह-सवेरे अर्थी सजाई गई.... उसका श्रृंगार

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उतारा गया... बेजान मूरत सी बनी, कोई रोना नहीं, कोई चीखना चिल्लाना नहीं ।

भरतो ने झकझोरा था उसे

"लाजो.... रो ले सखी..... रो ले"

लाजो ने पथराई सूनी आँखों से भरतो की ओर देखा

"देख लाजो... रो ले कुछ देर... नहीं तो !"

पर रोई नहीं लाजो, उसे रुलाने की सभी कोशिशें बेकार गई, अर्थी को लेकर गए सभी आदमी शमशान से वापिस लौट आये थे

शाम तक सभी औरतें उसे छोड़कर वापिस जा चुकी थीं

अंत में भरतो भी चली गई अपने घर

वह बैठी रह गई दीवार से सिर टिकाए.... सामने की दीवार पर सुखिया की तस्वीर को देखते हुए वह बिलख-बिलखकर रो पड़ी... हिचकियाँ लेते हुए बोल रही थी...

"मैंने उसे पाला था माँ.... और... और तूने देखा... उसने क्या किया था...? और अब ये...." रोते हुए लाजो ने अपने पेट की ओर इशारा किया

"कैसे जनम दूँगी इसे... हर पल... हर पल हजारों टुकड़े होंगे इस मन के... पल-पल मरूँगी मैं.... क्योंकि मैंने पाला था उसे" रोती-बिलखती लाजो के स्वर में शिकायत थी....

"केवल तू ही जानती है... कि मैं डायन नहीं हूँ... पर माँ अब मैं डायन बनना चाहती हूँ... मुझे आज्ञा दे सासू माँ... मुझे आज्ञा दे"

हाथ जोड़े रोती रही लाजो....

तीसरे दिन मंगलिया जसवंत के फूल लेकर गंगा जी में बहा आया था।

भरतो और मंगलिया आते, कुछ देर बैठते और चले जाते गुमसुम चुपचाप बैठी लाजो... घूरती रहती.. सुखिया की तस्वीर को। मगर आज... और आज ही न जाने कैसे पता चल गया भरतो को कि लाजो पेट से है

"सब ठीक हो जाएगा" कहा उसने, परंतु क्या ठीक हो जायेगा? वह भी तो जानती है कि मैंने पाला था उसे... और सासू माँ तू कोई जवाब क्यों नहीं देती... मैं... मैं.... इसे जनम नहीं दे सकती... मुझे डायन बनने दे.... मुझे आज्ञा दे सासू माँ....!" रोते

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

चीखते हुए लाजो का चेहरा सख्त हो गया... हाथ भिंचकर मुट्ठियों में बदल गये, फिर मुट्ठियाँ उपर उठीं और तेजी से पेट के निचले हिस्से की ओर आने लगी थीं
''तू औरत नहीं है क्या ?'' आवाज पर उसके हाथ अचानक रूके, उसने चौंककर इधर-उधर देखा।
''औरत मनहूस नहीं होती... न ही वह डायन होती... वह तो सृष्टि करती है... सृजन करती है.... प्रेम, ममता, मातृत्व, क्षमा, दया, संहार, सृजन, बलिदान, करूणा की प्रतीक नौ दुर्गाओं का रूप है उसके भीतर, कहता है जमाना कि अबला होती है औरत, मगर असल मे शक्ति है वह। अगर औरत ही टूटेगी-बिखरेगी तो दुनियाँ नहीं चलने की, उसका तो हर पल-हर कदम इम्तहानों से भरा होता है... बड़े से बड़े दुख-दर्द, घाव, अपमान, आक्षेप, प्रताड़ना, लांछन सहन कर सके परन्तु टूटे नहीं उसे औरत कहते हैं... ये सब मर्दों के बस का कहाँ...? औरत में तो बहुत हिम्मत होती है, यूँ ही नहीं कहते औरत को त्रिया, तीन आयाम होते हैं उसके-माँ, पत्नी, बेटी और एक औरत ही जानती है कि यह सबकुछ इतना आसान नहीं होता। सबकुछ अकेले औरत को ही सहना पड़ता है।''
सुनते-सुनते लाजो का सिर झुकता चला गया था
''कब तक भागेगी....? कभी-कभी मरने का मन भी करता है औरत का, पर वो आसान है.... मुश्किल तो जीना होता है.... और औरत का जीना तो...?
लाजो हिचकियाँ लेकर रो पड़ी
''मैं नहीं कहूँगी बहू कुछ भी... आगे सभी फैसले तुझे अपने आप लेने होंगे.... और तेरे फैसले सही हों... इसकी जिम्मेदारी भी तेरी ही होगी''
लाजो ने दृढ़ता से अपना सिर उठाया... आँसुओं को पौंछा
''ठीक है सासू माँ... बनूँगी मैं औरत.... एक बार फिर औरत बनूँगी. और इस बार एक पूरी औरत'' कहते हुए उसके हाथ सुखिया की तसवीर के सामने जुड़े थे...
उसने कोने में रखे लोहे के सन्दूकों को हटाया... लकड़ी के बक्से को खोला.... उसके भीतर से नोटों की दो गड्डियाँ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

निकाली और उन्हें अपने आँचल में लपेट लिया। बक्सा बन्द कर सन्दूकों को वैसे ही एक के उपर एक रख दिया...
घर से बाहर निकल कर दरवाजे का ताला लगाया... और भरतो के घर की ओर चल पड़ी।
भरतो चकित हुई थी उसे देखकर
''लाजो....! अरी जीजी तू....? मुझे बुला लिया होता... बीच में एक दीवार ही तो है... घर से ही आवाज दे देती ?''
लाजो ने कौने में रखा पीढ़ा उठाया... और सिलबट्टे से मसाला रगड़ती भरतो के पास बिछाकर उस पर बैठ गई। ओसारे में खाट पर बैठा हुक्का गुड़गुड़ाता मंगलिया लाजो को देख रहा था, लाजो ने भी मंगलिया को देखा फिर अपने आंचल से नोटों की गड्डियाँ निकालकर भरतो की ओर बढ़ाई। मंगलिया उठकर उनके पास आया
''ये क्यों...?'' पूछा था भरतो ने
''उसके कारज के लिए इन्तजाम करना है न ! कनात, दरी, बारदाना, टैन्ट, हलवाई.... सामान....! देवर जी, सारी व्यवस्था सही ढंग से हो जाये... ये तुम्हारी जिम्मेदारी है!''
''हो जायेगा भौजी... सब इंतजाम हो जायेगा'' कहते हुए मंगलिया ने गड्डियाँ संभाल लीं थीं और वापिस अपनी खाट पर जा बैठा था।

''और हाँ भरतो.. जीजी मुझे भी सम्भालना कुछ दिन'' कहते हुए लाजो ने अपने पेट को आँचल से ढका था

''और जब तक ये बड़ा न हो जाय.... खेत-खलिहान सब तुम्हें ही देखना है.... हिसाब जो तुम्हें ठीक लगे.... दे दिया करना''

भरतो ने आगे बढ़कर लाजो के सिर पर हाथ रखते हुए उसे सहलाया था।

+++

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

"हाँ बई.... के नाम है तेरा...?" थानेदार ने उकडू बैठे इन्दर से पूछा था

"इन्दर है हजूर....!"

"हाँ तो बई इन्दर सिंह के फैसला करया तन्नै....?"

"मैं क्या फैसला करूँगा हजूर ?"

"फेर कुछ तो बता ?"

"हजूर माई-बाप है ?" न्याय मिल जाये बस.... बेटी की इज्जत.......?"

"तो फिर सुण ले..." थानेदार बीच में बोला, "इज्जत-विज्जत की तो बात छोड़ दे.... इज्जत तो आणी-जाणी चीज हुआ करे, आज का जम्माने में... कोए गाली देज्या तो समझ चली गी इज्जत, अर किसै नै आकै नमस्ते कर दी... तो इज्जत वाप्पस आगी ! रहया न्याय तो भाई इसमें टैम लाग ज्यागा. .... मुकद्दमा चाल्लेगा.... वकील की जिरह हूँगी.... रोज-रोज के कोर्ट-कचहरी के चक्कर..... साल दो साल की बात नहीं. अगली पार्टियाँ मजबूत हैं... तारीक डलवाती रहेंगी.... सबकुछ विकाउ है आज की दुनियाँ में, वकील... जज... डाक्टर सब कोई..., उपर ही उपर रिपोर्ट बदल जाती हैं.... पाँच साल भी केस चल सकता है... तुझे न्याय मिल भी गया.... तो इतने साल बाद किस काम का, फेर न्याय तै के पेट भरया करै ? कम्पनशेसन ले ले... तेरे भले की कह रयाउँ, गरीब आदमी है तू, कोर्ट-कचहरी के चक्कर में बरबाद हो लेगा, इज्जत उछलेगी, वा न्यारी, जो तू माँगे... दिवा दूँगा... कल आ जाना दूसरा पार्टी ने भी बुला ल्यूंगा.... सोच ले... जा अब, कर आराम" कहकर थानेदार उठकर बाहर चला गया।

और बैठा रह गया इन्दर.... थानेदार की बात को सोचता. .. क्या करे वह...? थानेदार ले-देकर फैसला करने की बात कर रहा था लेकिन बेटी की इज्जत.... फिर सोचा माँग लूँगा. .. दो-चार लाख... सारी समस्याएं हल हो जाएंगी... बड़ी बेटी

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

फैसला

रीता सात महीनों से घर बैठी है.... ससुराल वाले मोटरसाईकिल माँग रहे हैं... जवाईं नया काम करना चाहता है पचास हजार चाहिए उसे... भूषण बेरोजगार है..एक लाख में कोई छोटा-मोटा काम कर लेगा...। बिन्द्रा की शादी की उमर बीती जा रही है। उसकी शादी भी हो जायेगी... सोचते-सोचते इन्दर को लगा अपनी जरूरतों के बारे में सोचकर वह ठीक नहीं कर रहा... उसका ह्रदय आत्मग्लानि से भर उठा....

किरन... सबसे छोटी, प्यारी बेटी... कार में बैठे चार अमीरजादों ने उसको सड़क से उठा लिया था... पूरी रात उसे किसी फार्म हाउस में रखा... उसके साथ पूरी रात... उसके बाद उसे पार्क में फेंक गए... बेटी लौटी थी लुटी-पिटी... सूजा हुआ चेहरा. .... फटे हुए कपड़े.... पागल-विक्षिप्त बड़बड़ाती... कभी शांत गुमसुम...., इन्दर क्या करे...? क्या नहीं करें....? दूसरे दिन वह कुछ बताने के काबिल हुई.... एक को वह थोड़ा बहुत जानती थी... शहर के जाने-माने एक पार्षद का लड़का था। पूरी रात इन्दर सोचता रहा, न्याय मिलेगा, इसी उम्मीद से वह थाने गया रिपोर्ट लिखवाने... थाने में अनेकों सवालों की पूछताछ. ... एक कागज पर उससे रिपोर्ट लिखवाई गई....

उसके बाद वह रोजाना थाने जाता.. थानेदार की बस एक ही बात.... बड़े आदमियों के लड़के हैं, जवानी के जोश में ऐसी हरकतें हो ही जाती हैं.... रिपोर्ट वापिस ले ले, मामला रफा-दफा कर ले

''अरे तू अभी यहाँ बैठा है ?'' थानेदार ने ऑफिस में वापिस आते हुए कहा तो इन्दर की विचार श्रंखला टूट गई।

''जा कल सुबह अईये. अच्छी कम्पनशेसन दुवा दयूँगा... जा अब.... अर ज्यादा मत सोच्चै''

और चल पड़ा इन्दर

गेट से निकला ही था.... थोड़ी दूर पर एक मोटर साईकिल सवार खड़ा था... उसने हाथ का इशारा किया.... इन्दर थके कदमों से सोचता उसकी ओर चल पड़ा...

जब उसके पास आया तो वह बोला था

''आपको ध्यान नहीं, जिस समय थानेदार आपसे बात कर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

रहा था... मैं वहीं खड़ा था.... आप दोनों से थोड़ी दूर, बात सुनकर इतना तो मैं समझ गया कि मामला गंभीर है। मैं अखबार का रिपोर्टर हूँ... आप बताईये मुझे सारी बात... मैं रिपोर्ट को छापूँगा... न्याय आपको मिलेगा. उपर तक खबर पहुँचेगी तो प्रशासन हिल जायेगा... आप बताईये सबकुछ निड़र होकर... समझौता और कम्पनशेसन किस बात का...? आम आदमी को न्याय चाहिए कि......?''

इन्दर ने अजीब सी दुखी.... गहरी नजरों से उसे तोला, उसकी आँखों में बेबसी के आँसू छलक आए थे... और वह सबकुछ... विस्तार से बताता चला गया था....

रिपोर्टर अपनी डायरी में बीच-बीच में कुछ लिखता भी जा रहा था, उसने कुछ सवाल भी किए... अंत में बोला...

''आप जाईये अब... कल सुबह सारा शहर नहीं सारा देश जान जायेगा आपके साथ हो रहे अन्याय... के बारे में... और न्याय आपको मिलेगा और कल शाम तक उन चारों रईसजादों को लॉकअप में देख लेना आप.... न्याय मिलता है लेकिन उसके दरवाजों पर पहले अपना सिर फोड़ना पड़ता है.... लेकिन हाँ समझौता मत करना... आपको डराया जाएगा.... धमकाया जाएगा.... लेकिन याद रखना अब प्रैस है आपके साथ....''

सात्वना के शब्दों ने राहत दी थी इन्दर को

''कम्पनशेसन वह नहीं लेगा'' सोच लिया था उसने.... ''उन चारों को वह जेल की सलाखों के पीछे देखेगा''

घर पहुँचा... तो किरन दीवार सहारे बैठी थी... गुमसुम विक्षिप्त, उसने बेटी के पास पहुँचकर उसके सिर को सहलाया... किरन ने एक नजर उठाकर बाप की ओर देखा फिर घुटनों में चेहरा देकर फफक पड़ी थी। इन्दर हट गया था उसके पास से, मन के हजारों टुकड़ों को लिए जा बैठा था धम्म से कुर्सी पर अपने सिर को थामते हुए... दिमाग में सोच-विचारों का बवन्डर चल रहा था...

अचानक भूषण की बहू चाय ले आई थी

''सुनो भूषण के बापू आप दादा बनने वाले हैं''

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

फैसला

कितना खुश हुआ था सुनकर इन्दर.... रीता सात महीने से पीहर में बैठी थी, भूषण बेरोजगार था... बिंद्रा की शादी की उमर निकली जा रही थी.... किरन भी शादी के लायक हो चुकी थी.... डेढ़ हजार रूपये महीने की पेंशन और छोटी सी चाय की दुकान... सुरसा के मुँह की तरह बढ़ता घर का खर्च... कितने ही दुख थे... पर वह खुश हुआ सुनकर... कि वह दादा बनने वाला है... लेकिन पाँच दिन पहले किरन के साथ गैंगरेप...!

उसने बहू के हाथ से चाय ले ली और सिर झुकाये चाय पीने लगा था, अचानक घर के आगे एक कार आकर रूकी, उसमें से दो व्यक्ति उतरे थे... धड़धड़ाते हुए अन्दर आये, इन्दर उठा था.

''मेरा नाम सुखदेव है... और ये मेरा बेटा लोकेश !'' कहते हुए लड़के की ओर इशारा किया था उसने ''आपका दोषी है यह...'' कहा सुखदेव ने तो इन्दर का जैसे खून खोल उठा था

''चल बे... पाँव पकड़ इनके....'' सुखदेव अपने लड़के से बोला था, लड़का इन्दर के पैरों की ओर बढ़ा था... पीछे हटा इन्दर

''इसकी जरूरत नहीं है और आप लोग चले जाईये यहाँ से?''

''देखिये मैं आपका दुख समझता हूँ मगर... अब गलती तो हो ही गई है।''

''अगर मेरा दुख समझते हैं तो इसे यहाँ नहीं लाना चाहिए आपको. थाने ले जाकर कानून के हवाले करना चाहिए ?''

''देखिये... अगर आप इसे माफ कर दें तो....''

''नहीं... नहीं माफी किस बात की... मैं तो एहसानमंद हूँ इसका और इसके दोस्तों का कि इन्होंने मेरी बेटी को जिन्दा छोड़ दिया... वरना इस दुनियाँ में इतना बड़ा ऐहसान कौन करता है ?'' इन्दर ने नफरत से कहा था

''देखिये जो आप कहें, मैं देने को तैयार हूँ.... जितना भी पैसा आप कहें... बस मेरे इस बेटे को आप इस केस से निकाल दीजीए... देखिये सबकुछ सही हो जायेगा... आपकी बड़ी बेटी को ससुराल, बाकी दोनों बेटियों की शादियाँ, लड़के को नौकरी.... बस आप अपनी बेटी को समझा दीजिये कि वह इसे एक तरफ कर दे....'' सुखदेव ने अपने बेटे की ओर इशारा करते हुए कहा था

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

फैसला

सुनते-सुनते इन्दर सोच रहा था कि यह आदमी सबकुछ पता करने के बाद यहाँ आया है....

''आप बोलिये एक बार... सुखदेव राज ने पहले ही हाँ की है, मुकरेगा नहीं... बस आप....?''

''मैं समझ गया सुखदेव जी...'' कहा इन्दर ने,''बहुत बड़े आदमी हैं आप... इस शहर में ही नहीं, शायद देशभर में नाम होगा आपका... मुझे मंजूर है आपने जो कहा, लेकिन आपसे एक बात पूछकर अपना फैसला करूँगा मैं....!''

सुनकर आश्वस्त हुए थे सुखदेव राज... वे देखने लगे इन्दर को

''मुझे बताईये आपकी बेटी होती... और उसके साथ ऐसा होता तो कितना कम्पनशेसन लेते आप...?''

''ऐ....'' जोर की आवाज गूँजी थी सुखदेव राज के लड़के लोकेश की और उसने आगे बढ़ते हुए झपटकर इन्दर की गरदन पकड़ ली थी। सुखदेव तुरंत आगे बढ़े, उन्होंने बेटे को पकड़ा

''लुक्की.... लुक्की छोड़ इसे....!''

''मैं इसको मार डालूँगा डैड.... ये समझता क्या है अपने आपको ? साला दो टके का'' गुस्से में बिफर रहा था लोकेश

''मैं कहता हूँ छोड़ दे इसे...'' सुखदेव ने बड़ी मुश्किल से छुड़ाया था इन्दरपाल को... फिर बोला था सुखदेव

''अबे नालायक... ये तो दो टके का है...., पर तू...? तेरे भेजे में तो इतनी भी अकल नहीं कि कब... कहाँ.... क्या करना चाहिए...? जिसे मार देना चाहिए था गधे.... उसे तो जिन्दा छोड़ दिया... अब इसे मारेगा.... चल गाड़ी में बैठ जाकर मैं बात करता हूँ.... चल तू जा गाड़ी में'' सुखदेव राज ने बेटे को दरवाजे की ओर धकेला

''इसकी औकात तो देखो.....?'' लड़के ने अपने आपको छुड़ाकर आगे आते हुए कहा

''मेरी औकात कुछ नहीं है... मेरी औकात के हिसाब से देते हुए तुम्हें शायद शर्म आती.... इसलिए तुम्हारी औकात के हिसाब से माँगना चाहता था इसलिए पूछ रहा था'' इन्दर बोला

''देखिये इन्दरपाल सिंह जी.... लड़के की बात का बुरा मत मानना... गर्म खून है जल्दी जोश में आ जाता है'' कहा सुखदेव

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

राज ने... फिर अपनी जेब से एक कार्ड निकाला, इन्दर को देते हुए बोला... ''ये मेरा कार्ड है.... सोच-समझकर कल सुबह तक फोन कर दीजिएगा मुझे''

''कार्ड जेब में वापिस रख लीजिएगा सुखदेव राज जी.... मेरी औकात किसी बड़े आदमी की नहीं है... रहा आपका ये लुक्की... तो इसके अन्दर खून गर्म नहीं है.... बल्कि संस्कार गलत हैं... . मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ.... कि आप चले जाईये... और कोई दूसरा रास्ता ढूँढिये... ये मेरे संस्कार हैं... वरना खून मेरे अन्दर भी है... लेकिन आप मेरे दरवाजे पर आये हैं....?''

और चले गए थे दोनों

इन्दर ने बेटी को आवाज दी थी

''विंद्रा... बेटी ये चाय ले जा, ठण्डी हो गई है, अपनी भाभी को बोल जरा गरम कर देगी...''

''पापा मुझे दीजिये... मैं चाय गरम कर देती हूँ'' विंद्रा ने आकर चाय की प्याली पकड़ते हुए कहा ''भाभी को तो भैय्या डाक्टर के यहाँ लेकर गये हैं''

''क्यों ?'' चौंकते हुए पूछा इन्दर ने ''क्या हुआ उसे ?''

''कुछ नहीं पापा.... अल्ट्रासाउण्ड के लिए गई हैं भाभी !''

''ओह !'' इसके अतिरिक्त कुछ कह नहीं सका इन्दर

+

सुबह-सवेरे इन्दर अखबार लिए बैठा था... वह ढूँढ रहा था अखबार में उस रिपोर्टर को दी हुई अपनी खबर को... उसकी खबर तो नहीं थी.. अखबार एक तरफ रखकर वह सोचने की मुद्रा में बैठ गया... कुछ देर बाद उसने एक बार फिर अखबार उठाया... इस बार वह पढ़ रहा था अपनी खबर... जैसी ही खबरें....

''शादी के लिए मना करने पर लड़की के चेहरे पर तेजाब फेंका...''

''दहेज के लिए नवविवाहिता को घर से निकाला....''

''शराबी पति से तंग आकर दो बच्चों सहित महिला ने खुदकशी की''

''बहन को छेड़ने का विरोध करने पर भाई को पीट-पीटकर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मार डाला....''

''बाइक सवारों ने स्कूल जाती लड़की का दुपट्टा खींचा''

''पड़ौसी ने नाबालिग से बलात्कार किया....''

''घर में घुसकर अधेड़ महिला से बलात्कार...''

''दहेज न मिलने पर बिना विवाह किए बारात वापिस लौटी''

''अलिया चौक पर असामाजिक तत्वों का जमावड़ा..''

ऐसी खबरें तो इन्दर पहले भी लगभग रोजाना ही अखबार में पढ़ता आया था... पर आज... वह इन खबरों को पढ़कर सोच में डूब गया....तभी भूषण ने बहू के साथ घर में प्रवेश किया, बहू सीधे कमरे में चली गई, भूषण... इन्दर के पास रुक गया.

''पापा अल्ट्रासाउण्ड में लड़की आई है....!'' भूषण ने सिर झुकाते हुए कहा था..

''तो ?'' इन्दर ने आँखों में सवाल लिए भूषण की ओर देखा

''तो क्या... हमें नहीं चाहिए लड़की... तीनों बहनों के साथ जो कुछ हो रहा है.. और जो कुछ हुआ है... उसे सोचकर एक और लड़की को जन्म देने की न तो हममें हिम्मत है और न ही कोई इरादा...''

भूषण ने कहा... तो इन्दर सोच में पड़ गया... उसने सिर झुका लिया था

''कुछ बोलिए पापा...?'' कुछ देर बाद भूषण ने पूछा था

''क्या बोलूं... जब तू फैसला कर चुका है तो?'' इन्दर की आवाज में एक कशिश थी...

''फिर भी पापा.... आप जो कहेंगे....''

''तो सुन भूषण.... बेटा अपने साथ हो रहे समाज के अन्याय का बदला क्या हम उस बच्ची से लें...? आज ऐसा है, लेकिन आने वाला कल अच्छा होगा... इसी उम्मीद पर हर आदमी जिन्दा है....''

सुनते हुए भूषण सिर झुकाये सोच में डूब गया था।

+++

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उम्मीद

राधे ने उमाशंकर के मकान का दरवाजा खटखटा दिया और देर तक दरवाजा खुलने का इन्तजार करता रहा। दरवाजा खुला, उमाशंकर की नई बंगालन पत्नी बंगाली साड़ी में लिपटी, लम्बा सा घूंघट काढ़े दरवाजे में खड़ी थी,

"उमा, भैया हैं क्या ?" राधे ने पूछा, प्रत्युत्तर में उमा की पत्नी का सिर ना मैं हिला....

"दरअसल भाभी मैं तुमसे ही मिलने आया था और मिलने क्या, तुमसे कुछ बात करने आया था, भैया होते तो ठीक रहता, नहीं है तब भी कोई बात नहीं" कहते हुए वह अन्दर आने की मुद्रा में आ गया, उमा की पत्नी पीछे हटी, उसने बैठक में आकर राधे को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया, राधे कुर्सी पर बैठ गया, उमा की पत्नी भीतर गई जब वापिस लौटी तो उसके हाथ में पानी का गिलास था। राधे ने पानी पिया और बोला

"बैठो भाभी तुम... तुमसे कुछ बात करनी है"

वह राधे के हाथों से खाली गिलास लेकर वापिस भीतर गई फिर आकर पर्दे के पीछे पटरे पर बैठ गई। राधे ने उसे झीने से पर्दे के पीछे बैठते देखा तो अपनी बात शुरू की...

"बात ये है भाभी.... तुम तो जानती ही हो, उमा और मैं अच्छे दोस्त हैं, लंगोटिया यार हैं... साथ खेले, बढ़े-पढ़े, सकल-सूरत तो दोनों की ही भगवान ने माशा-अल्ला बेहतरीन दी.... तवे का सा काला रंग..... इसी कारण शायद हमारी शादी भी नहीं हुई थी। अब तो उमर भी शादी लायक नहीं रही। उमा भैया तो चालीस की उम्र में तुमको ले आये, उनका घर तो तुम बसा ही दोगी, भाभी रह गया मैं" कहते हुए राधे ने नजरें उठाकर परदे के पार देखा.... उमा की पत्नी दीवार से सिर सटाये थी, राधे ने आगे कहा.....

"अब भाभी उमा भैया के भाईयों ने उसके साथ लगकर, कोशिश करके, रुपया पैसा खर्च कर उसका घर बसा दिया. .. अपना तो कोई ऐसा है नहीं, कहने को भाई-भाभी हैं पर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उम्मीद

सबके सब मतलबी ! शुरू-शुरू में मेरी छोटी भाभी ने मुझसे कहा कि मैं अपनी बहन से तुम्हारी शादी की बात चलाऊंगी. ... मेरा मन भी कमल की तरह खिल गया था, कई महीनों क्या? दो साल तक मैं उसकी बहन के लिए, भाभी के आगे-पीछे उसकी लल्लो-चप्पो करता रहा, पर भाभी की बहन की शादी कहीं और हो गई, मैं या मेरा रंग रूप उसके घरवालों को पसंद नहीं आया, दिल टूट गया था मेरा.... महीनों तक पागल सा रहा मैं, जब सम्भला तो बड़ी भाभी ने बताया कि मेरे दूर के रिश्ते में एक मौसेरी बहन है, गरीब है, मुझे उम्मीद बँध गई, कई महीनों तक मैं भाभी के आगे-पीछे घूमता रहा, पता नहीं उसने बात चलाई या नहीं चलाई, पर उस मौसेरी बहन की शादी भी कहीं और हो गई। इन सबने मिलकर मेरे बाप की इतनी सेवा करी, इतनी सेवा करी कि बाप ने अपनी जमीन-जायदाद दोनों भाईयों में बाँट दी..... अब भाभी रह गया मैं। सोचा जब शादी ही नहीं हुई तो जमीन जायदाद का क्या करूँगा....? भाभियाँ रोटी तो देती हैं पर ऐसे जैसे भिखारी को दे रही हों.... कभी गुड़ से, कभी प्याज या चटनी से..., कभी-कभार सब्जी से भी,..पर अपनी लुगाई के हाथ की रोटियों का स्वाद कुछ और ही होता है। भाभी एक बार मुझे बुखार हुआ.... साले किसी ने भी पानी का गिलास तक नहीं दिया कि राधे तेरी दवाई कहाँ रखी है, ले पानी और दवाई ले ले.... भाभी सारी दुनिया मतलबी है। भतीजे-भतीजी आते हैं तो बस एक ही रट कि चाचा एक रुपया दो.... या कापी लानी है दस रुपये चाहिए। अगर भाभियों से एक बनियान धोने की कहता हूँ तो बम की तरह फटती हैं कि तेरी शादी नहीं हुई इस बात की सजा हम क्यों भुगतें।'' कहकर थोड़ा सा रुका राधे, उसने सिर झुकाते हुए अपने हाथों को मसला।

''अब भाभी क्या कहूँ तुमसे..... अगर तुम्हारी कोई बहन हो? नहीं, मेरा मतलब कोई जानती-पहचानती रिश्तेदारी में हो.... गरीब हो... चाहे हो कैसी भी.... अगर तेरी थोड़ी सी कृपा हो जाए तो...? भाभी पैसे से भी हो तो कोई बात नहीं, बस विश्वास की हो... अब कहीं देर-सबेर, रात-बेरात,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

पैसे-जेवर लेकर भाग जाये तो.... इसलिए कहा.... वैसे तुम्हारी जानती या तुम्हारी कोई बहन वगैरह होगी तो ऐसा नहीं होगा... अब भाभी... विश्वास करना... पलकों पर रखूँगा. .. कोई तकलीफ नहीं पायेगी, जेवर-टूम से लाद दूँगा.... रानी बनाकर रखुँगा। रही जमीन-जायदाद की बात तो भाईयों के विरुद्ध कोर्ट नहीं जाऊँगा... शरीर तो तू देख ही रही है मेरा... रोज बीस किलो की साँग उठाता हूँ, किसी साले में एक लप्पड़ मार दूँ तो दस कला खा कर पीछे गिरेगा... अपना हिस्सा तो मैं लाठी के जोर से.... हलक में से निकाल लूँगा.... पर पहले लुगाई तो आ जाये, देख तो मैं एक-एक को लूँगा... भाभी तेरी महर हो जाये तो...? अब रही तेरी बात.... मेरा भी कुछ करा दे भाभी तो एक क्या दो टूम तुझे भी गढ़ा दूँगा'' कहते-कहते उठा राधे, बोला ''अच्छा चलता हूँ भाभी,.... जरा ध्यान रखना... और हाँ... दरवाजा बन्द कर लेना'', और चला गया राधे

कुछ समय बाद उमाशंकर अपने घर लौटा, वह हैरान हुआ दरवाजा खुला देखकर, अन्दर घुसते हुए उसने आवाज लगाई...''प्रोतिमा... ए प्रोतिमा.... दरवाजा तो बन्द कर लेती. .... कहीं कुत्ता-बिल्ली घुस आये तो'' कहते हुए वह परदे के पीछे पहुँचा... प्रोतिमा हड़बड़ाकर उठ बैठी, उसने आँखें मलते हुए उमाशंकर को देखा फिर बैठक में झांका.... राधे जा चुका था, वह धीरे से बोली-

''आपनार बौन्धू राधे आस्छेलो, औनेक सोमय बोसेछिलो, की जानै की की बोलछिलो, आमि किछु बुझते पारलम ना.''

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सवेरा

लखिया ने मनोहर को ध्यान से देखा, फिर ओढ़नी का पल्लू उँगली पर लपटते हुए सकुचाई, सिमटी। मनोहर के फटे कुर्ते में से उसके पुष्ट शरीर को देखते हुए उसे सिरहन सी महसूस हुई। वह उसके लम्बे गठीले शरीर को ऊपर से नीचे तक आँक रही थी। मनोहर मैली सी अल्यूमीनियम की लुटिया से चुल्लू में पानी लेकर कुल्ला कर रहा था। उसने मुँह में पानी भरकर ऊपर की ओर मुँह करके गरारा किया.. .. फिर पानी बाहर उगल दिया।

''मनोहर ?'' लखिया ने पुकारा, मनोहर ने चकित होकर उसकी ओर देखा

''फिर आ गई तू ?''

''और कहाँ जाऊँगी मैं..... ?''

''धन्धे पर नहीं जायेगी आज ?''

''नहीं''

''क्यों ?''

''तू नहीं जायेगा... तो मैं भी नहीं जाऊँगी''

''तू मेरे पीछे क्यों पड़ी है ?'' मनोहर झल्ला उठा

''आये हये..! तू भी न.... करी लुगाई .के से नखरे करता है. ... तू तो मेरे पीछे पड़ता ही नहीं.... मैंने सोचा तेरा काम भी मुझे ही करना पड़ेगा ?

''तुझे शरम नहीं आती.... ऐसी बात करते ?''

''आती है न... पर इस मुऐ जी का क्या करूँ..... वैसे ये पानी की भरी बाल्टी.... खुशबुदार साबुन...? लगता है तू नहायेगा आज ?''

''हाँ....!''

''पर क्यों रे....? मुझे तो तू वैसे ही बौत खपसूरत लगता है, वैसे भी अगर तू नहायेगा धोऐगा तो कोई धेला भी नहीं देगा... शाम को खाली हाथ लौटेगा डेरे पे''

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सवेरा

"मैं आज के बाद भीख नहीं माँगूंगा.... समझी तू ?" जोर देकर कहा मनोहर ने... और मेरा पीछा छोड़, वो मंगतू है... धरमा है... दरिया है, किसी का भी हाथ पकड़ ले.... मुझे भूल जा समझी...."

"समझ गई !" लखिया ने रुआँसी होकर कहा "पर एक बात और समझा मुझे.... क्यों भूल जाऊँ मैं तुझे....? तुम मरद लोग भी न कितनी आसानी कह देते हो कि भूल जा.... क्या इत्ता आसान होता है सब... और जिस दिन औरत जात मरद को भूल जाएगी.... तो ये दुनिया ना चलने की....। तू समझता क्या अपने आपको....? इसलिए तो नखरा करता है तू कि मैं तेरे कू पसन्द करती हूँ, पर धिक रे.....तू सोचता है मैं तेरी कद-काठी देखकर चाहती हूँ तुझे.... भूल जा मैं तो तुझे इसलिए पसन्द करती हूँ कि.... कि...." कहते हुए लखिया ने सुबककर ओढ़नी का पल्लू मुँह में ठूस लिया.... मनोहर उसकी ओर हैरानी से देखता रहा.... बहुत देर तक वह नहीं बोली

"क्यों पसन्द करती है मुझे तू ?"

"इसलिए..... इसलिए कि तू बार-बार... कहता रहता है कि भीख माँगना अच्छा काम नहीं, तेरी ये बात मुझे अच्छी लगती है... मैं भी सोचती थी जिस दिन तू भीख माँगना छोड़ देगा न... उस दिन बिना ब्याह के तेरे साथ रहने लगूँगी... क्योंकि... क्योंकि.... क्यों...." कहते हुए वह चुप हो गई और देखता रह गया मनोहर लखिया को

"अच्छा तो मुझे भी नहीं लगता मनोहर... ये भीख माँगना.... आदमियों का तो ठीक है पर.... औरत ? सच में कितनी बुरी नजरों से देखते हैं लोग.... एक दिन एक बोला.... एक रुपया क्या चीज है पाँच मिनट के पचास ले न...! और मनोहर पता है तुझे ? एक दिन अम्मा ने कहा झींगा को गोद में उठाकर ले जा धन्धे पर... अच्छी भीख मिलेगी..... मैं ले गई उसे गोदी में.... वो लोहामंडी के मजदूर.... साले दो टके के, कहने लगे.... इसके बाप ने कितने रुपए दिए थे.... दस कि बीस....? मनोहर कितना रोई मैं उस दिन.... और हमारा तुम्हारा भी क्या

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

पता.... कौन बाप है... बस उस दिन से धन्धे पर जाती हूँ तो इसलिए कि जाना पड़ता है.... हम और क्या कर सकते हैं.... पर तू नया सोचता है... तुझे देखकर जिन्दगी का सबसे बड़ा सपना देख डाला रे'' कहते-कहते सुबक पड़ी थी लखिया

बहुत देर तक कोई कुछ नहीं बोला

''लखिया!'' पुकारा मनोहर ने

''हूँ...?''

''एक दिन मैं रणवीर चौक पर भीख मांगते हुए एक घर के सामने रुका.... एक आदमी बोला... हट्टा-कट्टा है.... भीख मांगते हुए शरम नहीं आती.... सुनकर मेरा सिर झुक गया.... मैं सिर झुकाये ही बोला था, बहुत शरम आती है साहब.... पर हमें काम कोई नहीं देता.... वो बोला तो खुद कुछ काम कर.... इतने दिनों से भीख माँग रहा है.... कुछ पैसे बचाकर तराजू-बाट खरीद ले, मूंगफली बेच.... सब्जी बेच.... उस आदमी ने मेरी सोच बदल दी.... उसके बाद मैंने पैसे जोड़ने शुरू किये... आज नहा-धोकर जाऊँगा, काम शुरू करुँगा....

''मनोहर.... मैं.... मैं.... मैं भी.... देख देख तू'' कहते हुए लखिया के हाथ मनोहर के सामने जुड़ गये ''मनोहर तू... तू मारेगा... पिट लूँगी.... कांटों पर गुजारा कर लूँगी तेरे साथ... एक टैम आधा पेट खाकर रह लूँगी, मैं भी काम करूँगी... मुझे रख ले अपने साथ.... देख अगर तू मुझे छोड़ गया तो अम्मा बाबा मुझे जबरदस्ती मंगतू, धरमा या दरिया के साथ बाँध देंगे... फिर जिन्दगी भर मुझे भीख ही माँगनी पड़ेगी.... मुझे ले चल अपने साथ.... तेरी इस मेहरबानी से मेरी जिन्दगी में भी सवेरा हो जायेगा..''

+++

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उस का नसीब

बीड़ी फूंकते हुए यादू देख रहा था गौर से साँवरी को, वह रोटी बनाने के लिए आटा गूँथ रही थी, पास ही ईंटों के बने चूल्हे पर भगोने में सब्जी बन रही थी, यादू की नजर साँवरी पर से हट नहीं रही थी। साँवरी ने यादू की ओर देखा...

"ऐसे क्या देख रहे हो जी.....!"

"तुझे देख रहा हूँ" सुनकर साँवरी झेंप गई

"ऐसे !" उसने सब्जी का भगोना चूल्हे से नीचे उतारकर रख दिया।

"कैसे भी देखूँ.... मेरी जनानी है तू" कहते हुए हँसा यादू

"पर कई दिनों से देख रहा हूँ.... तू बदल गई है"

"मुझे पता है... पर बदला तो तूने है" उसने चूल्हे पर तवा रखा।

"अच्छा ! मैंने कहा कि तू बदल जा ?"

वह कुछ नहीं बोली... अल्यूमीनियम की कटोरी में सब्जी डालकर... साँवरी ने यादू के सामने रख दी...

"बीड़ी फेंको.... अब रोटी खाने की तैयारी करो"

यादू ने साँवरी का हाथ पकड़ लिया... "पहले बता ?"

"क्या करते हो जी.....? सब देख रहे हैं" साँवरी ने सकुचाकर, घबराते हुए इधर-उधर देखा....

सड़क बनाने वाले दिहाड़ी मजदूरों के तम्बुओं के पास... सब्जी-रोटी बनाने-खाने का कार्यक्रम चल रहा था... सभी मर्द बैठे हुए थे... या बोरी-टाट के टुकड़ों पर लेटे आराम कर रहे थे.... औरतें काम में लगी थी.... बच्चे धूल-मिट्टी में खेल रहे थे।

"कोई नहीं देख रहा.... हमें देखने की फुरसत किसी को नहीं है" यादू ने साँवरी का हाथ पकड़े हुए खींचा, वह यादू के पास अनचाहे ही बैठती चली गई।

"ओ जी.... छोड़िये..... पहले रोटी बनाने दीजीए"

"नहीं पहले बता ?"

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उस का नसीब

''भूख नहीं लग रही है क्या तुम्हें ?'' वह यादू की ओर देखते हुए हँसी थी

''भूख तो लगी है, लेकिन बता पहले ?'' यादू ने साँवरी का हाथ कसकर पकड़ लिया.... ''बिन्दी नहीं लगाती....? कभी महावर भी नहीं लगाती....? हाथ तक नहीं रखने देती ?''

''अब ये सब नहीं... अब तुम बाप बनने वाले हो'' साँवरी ने शर्मा कर यादू से सटते हुए उसके कंधे पर सिर टिका दिया

''सच...? कहा उसने, किन्तु वह गहरी सोचों में डूब गया''

''हाँ जी''

''तब तो कल से तेरा काम पर जाना बन्द'' सुनकर साँवरी चौंकी

''अभी से नहीं जी....''

''इसमें अभी और तभी कुछ नहीं... कहीं पिछली बार की तरह ना हो ?''

''कोई हर बार थोड़े ही होगा जी... और फिर मुंदरी की शादी के लिए पैसे भी जोड़ने हैं.... आटा-सब्जी मसाले का रेट कितना चढ़ गया है इस बार, एक तुम्हारे अकेले की कमाई से कैसे चलेगा, चौमासे के पाँच महीने ही रह गये हैं तब काम नहीं मिलेगा''

''वो तो ठीक है मगर''

''अगर-मगर कुछ नहीं जी, अभी तीन-चार महिने तो काम कर सकती हूँ मैं''

''हाँ मगर कुछ हो गया तो ?''

''कुछ हो गया तो कौनसी हमारी उमर मारी गई है ?''

''इतने दिनों में तो फिर से भगवान ने हमारी सुनी है''

''देखो जी, इक्कीस की हो गई मुंदरी, मैं तो मनाती हूँ भगवान से, पहले उसके हाथ पीले करा दे, अपने घर-बार की हो, सारा टांडा थू-थू करता है कि साँवरी को ननद को ठेकेदार के यहाँ भेज-भेजकर ही उसकी जिन्दगी पार करा देगी.... ब्याह नहीं करेगी उसका''

''मगर... मैं करूँ क्या ?''

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उस का नसीब

''देखो जी, मुझे काम पर जाने दो, तभी तो दो पैसे जुड़ पायेंगे... सही सलामत रहा तो इसका नसीब, गिर गया तो अगली बार की बाट जोहेंगे.... पर कम से कम इस साल मुंदरी की तो शादी कर ही देंगे.''

''जैसे तेरी मर्जी, पर थोड़ा सम्भलकर काम करना'' कहते हुए यादू ने प्यार से थपथपाया साँवरी को और वह रोटी बनाने के लिए उठ गई थी।

+++

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मैं और चन्दा, उम्र आठ साल, कक्षा-दूसरी, पड़ोसी थे, साथ-साथ खेलते बड़े हुए, साथ-साथ स्कूल जाते, दोनों कोमल गन्धार स्वर जैसे। उसने पूछा एक दिन

''ललित बता...., लड़का-लड़का क्यों होता है और लड़की लड़की क्यों होती है ?''

उसके प्रश्न पर थोड़ा बौखलाया, उस समय जो जवाब बन पड़ा, दिया... इससे अधिक तब अक्ल थी भी नहीं।

''बड़े होकर शादी करने के लिए !''

लकड़ी की तख्ती को हवा में झुलाते हुए हम दोनों स्कूल की ओर बढ़े चले जा रहे थे।

''अच्छा वे शादी क्यों करते हैं ?'' उसने पूछा

''साथ रहने के लिए !'' मैंने कहा, प्रश्न और उत्तर दोनों में कहीं कोई खोट-कपट नहीं था, प्यार भी नहीं था, कुछ और क्या ? था या नहीं था, पता नहीं।

''और ?'' उसने पूछा

''और... पता नहीं!''

''मुझे पता है !''

''क्या पता है तुझे ?''

''यही कि लड़का बड़ा होकर पिता बनता है और लड़की बड़ी होकर माँ बनती है।''

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया, साथ चलते रहे दोनों। अचानक वह बोली

''ललित मैं बड़ी होकर तुझसे शादी करूँगी!''

मैंने हैरानी से अपनी उस होने वाली रैंटों सी दुल्हन को देखा... आधे चेहरे पर तो नाक ने ही कब्जा जमा रखा था, पर वह अच्छी लगी मुझे।

''तू आस्तीन से नाक पोंछता है, पर अच्छा है तू !'' उसने कहा...

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उस दिन के बाद मैं हर पल उसका ध्यान रखता था, शायद यह मेरे भीतर के पुरुष की मानसिकता ही थी। उस दिन के बाद मैंने उसका बनाया मिट्टी का घर कभी नहीं तोड़ा, जब कभी वह गीली बालू में पाँव फंसाकर उस पर बालू पाथते हुए अपना घर बनाती, मैं बैठा उसे देखते रहता...., वह कहती....

''बड़े होकर हम ऐसा ही सुन्दर घर बनायेंगे, तब बड़ा बनायेंगे, हम साथ रहेंगे उसमें बहुत दिनों तक.... हमारे बच्चे होंगे.... तू बाहर काम करेगा, मैं घर पर रहूँगी, कपड़े धोऊँगी, रोटी-सब्जी बनाऊँगी, बरतन माजूँगी'' वह बोलती जाती...

''ठीक है....'' मैं उसकी सभी बातों से सहमत था। एक बार उठी, मुझे उँगली दिखाते हुए हिलाकर बोली....

''अगर तू दारू पीकर आया तो...?''

''तो क्या ?'' मैं चौंका

''तुझसे बोलूँगी नहीं, बात नहीं करुँगी, तुझे रोटी भी नहीं दूँगी.... तुझे घर में भी नहीं घुसने दूँगी'' मैंने देखा वह तनकर अपने घर और मेरे बीच खड़ी थी....

''उसका घर !'' मैं सोचता पर बोलता कुछ नहीं, मेरे बोलने के लिए जगह थी भी कहाँ

''मैं तेरे पाँव दबाया करुँगी'' सुनकर अजीब, परन्तु अच्छा लगता.... ''तू मुझसे कभी नाराज तो नहीं होगा न ?''

मैंने ना में सिर हिलाया

''तब ठीक है.... मैं भी कभी, तुझसे नाराज नहीं होऊँगी!'' वह खेलती.... बड़बड़ाती.... मैं चुपचाप देखता रहता उसे और उसके घर को... एक दिन झगड़ पड़ी वह

''तू कुछ काम नहीं करता... बिल्कुल... आदमियों की तरह है तू... आदमी भी घर का कोई काम नहीं करते''

''मुझे घर का काम ही नहीं आता!'' मैंने बचने की कोशिश की... शायद मैं कामयाब रहा... वह अपने घरोंदे के काम में लग गई। वह वही सब करती, बड़बड़ाती, खेलती... जो कुछ उन दस सर्वेन्ट क्वाटर्स के घर परिवारों में होता था।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कोमल गन्धार

एक दिन स्कूल के लिए जाते समय, साथ चलती वह गुमसुम थी... लगभग उदास

"क्या बात है चन्दा ?"

"कल शाम को बिरजन चाचा ने शान्ती चाची को फिर मारा!"

"क्यों ?"

"पता नहीं... पर बहुत मारा !" कहते हुए वह सोच में डूबी थी, "शान्ती चाची का चेहरा सूजा हुआ था, कमर हाथ-पाँवों पर सब जगह नील पड़े थे"

"होगी कोई बात ! तू जल्दी-जल्दी चल स्कूल को, देर हो रही है"

वह ठिठक कर रुकी.... मेरी ओर देखते हुए बोली

"कोई बात होगी... तो मारेगा क्या ?" सुनकर मैं हड़बड़ा गया, बोला

"चाची ने कोई गलती की होगी !" सुनकर वह चुप रही... साथ चलते हुए बोली

"आदमी कभी गलती नहीं करता क्या ?"

"करता है... गलती तो किसी से भी हो जाएगी"

"फिर कोई औरत तो कभी किसी आदमी को नहीं मारती, आदमी क्यों मारता है औरत को ?" मेरे सामने औरत जात का ध्रुव प्रश्न था

"औरत घर का सारा काम करती है, बरतन-झाड़ू, बच्चे खिलाना, रोटी-सब्जी बनाना... सुबह से शाम तक काम... फिर भी वह उसे मारता क्यों है ?"

मेरे पास कोई जवाब नहीं था, मैं स्वयं भी नहीं समझ पाया था कि ऐसा क्यों होता है... मैं सोच रहा था किन्तु उत्तर शायद अभी वर्षों दूर था। शेष रास्ते वह लगभग चुप रही... बाद के कई दिन भी चन्दा अपनी उसी मानसिक उधेड़बुन में ही रही।

उसके पिता बसंता मेरे पास आये, उन्होंने मुझसे जानने की

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कोशिश की कि स्कूल में चन्दा से किसी ने कुछ कहा क्या ?

या फिर तेरी उससे कोई लड़ाई हुई है ? वह दो दिनों से चुप-चुप रहती है.... पता नहीं क्या सोचती रहती है। मैंने अनभिज्ञता जताई... हालांकि मैं जानता था लेकिन क्या बताता और कैसे बताता ?

और फिर एक दिन, वैसे ही साथ-साथ स्कूल जाते समय

''मैं तुझसे शादी नहीं करूँगी ललित...!'' उसकी आवाज जैसे किसी अन्धे कुएं सी आ रही थी

''क्यों...?'' मैंने चकित होकर पूछा, उसने कोई जवाब नहीं दिया बस चुपचाप सिर झुकाए चलती रही, ''बता न... क्यों ?''

''तू मुझे मारा करेगा।'' सुनकर और भी चकित था मैं

''नहीं मैं तुझे नहीं मारा करूँगा '' मैंने कहा

''नहीं... अगर शादी के बाद तूने मुझे मारा तो क्या करूँगी मैं...?''

''मैं तुझे क्यों मारूँगा ?''

''वो सब मुझे नहीं पता ! पर आदमी औरत को मारता जरूर है'' उसने एक बार फिर ध्रुवसत्य कहा था

''मगर....?'' मैंने कुछ कहना चाहा

''मैं तुझसे ही नहीं, किसी से भी शादी नहीं करूँगी''

मैं क्या कहता....

''और तेरा घर ?''

''अब नहीं बनाऊँगी घर.... जब बनाऊँ तो तू तोड़ देना''

मैंने कोई जवाब नहीं दिया.... अपना घर वह खुद ही तोड़ रही थी... अब मैं उसके साथ, सबकुछ खोकर लुटा-पिटा सा चल जरूर रहा था।

+ + +

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मैंने उसके हाथ से पर्ची लेकर उस पर लिखा नम्बर मिलाया, कुछ देर बाद दूसरी तरफ से हैलो की आवाज आई

"हाँ हैलो, जनाब आपके यहाँ वैल्डिंग शॉप में एक हैल्पर रतनलाल हैं......, जी..... जरा उन्हें बुला दीजिये, उनकी वाइफ उनसे अर्जेन्ट बात करना चाहती है"

"जी अच्छा, जरा होल्ड करें, अभी बुलाता हूँ" सुनकर मैंने रिसीवर काजल को पकड़ा दिया, पड़ोसी थे, कभी-कभार फोन करने या कोई कपड़ा वगैरह खरीदने दुकान पर आते थे।

"हाँ हलो... जी... मैं बोल रही हूँ.... काजल ! हाँ अर्जेन्ट बात है... सुनिये..... आज आपको तनख्वाह मिले तो धोती मत लाईयेगा हमारे लिये.... हम एक महीना और चला लेंगे कैसे भी करके..... बाबूजी की आँखों की दवाई.... वो सिंदूरिया लेते आऐं... नहीं..... नहीं धोती इतनी जरूरी नहीं है, घिस-फट गई है तो क्या ? हम चला लेंगे अभी, मगर दवा जरूरी है, देखिए पिछले महीने भी नहीं लाये आप.... इस बार कैसे भी करके... हाँ याद करके.... जरूर.... भूलियेगा नहीं.... ठीक है. ... रखती हूँ"

बात करके उसने रिसीवर रख दिया, पल्लू से खोल कर दो रुपये का मैला कुचैला नोट मुझे दिया और चली गई।

एक घन्टे बाद ही, गिरधर बाबू आ गए, काजल के ससुर, वृद्ध, कृशकाय.. उन्हें कम दिखाई देता था।

"कहिऐ गिरधर बाबू.... कैसे आये ?"

"कैसे क्या बेटा..? एक बढ़िया, मजबूत सी, चलने वाली धोती दीजिये.... बहू की धोती एकदम घिसकर फट चुकी है, इस रतन से पिछले महीने भी कहा था मैंने.... उसे दिखाई तो नहीं देती बहू की फटी-घिसी धोती.... पर सुनता भी नहीं ? आज मुझे पेंशन मिली है तो बहू के लिए धोती...?"

"आप बैठिये बाबूजी, देता हूँ...." कहते हुए मैंने दराज से धोतियों की गाँठ उठा ली।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

यूँ तो अपने आदमी का उतरा हुआ चेहरा देखकर ही समझ गई थी रमिया कि काम नहीं बना है...., वह बोली कुछ नहीं, चुपचाप रोटी बनाती रही, पास ही बोरी बिछी थी... मंगतू उसी पर बैठ गया, घुटनों पर कोहनी टिकाए चूल्हे पर आग तापने लगा, फिर कुर्ते की जेब से बीड़ी का बंडल निकालकर उसमें से बीड़ी निकाली, रमिया ने उसे रोका...

''बीड़ी मत सुलगाओ जी... पहले रोटी खाओ.. डालकर देती हूँ मैं'' कहते हुए उसने अल्यूमिनियम की थाली में कटोरी रखी.... फिर भगोने का ढक्कन हटाकर चम्मच से सब्जी-कटोरी में डाली.....कटोरी की सब्जी से उठती भाप को सूंघते हुए मंगतू बोला

''सब्जी काहे की बनाई है, बड़ी खसबोई आ रही है ?''

''वही बनाया है बस आलू और तुम खाते क्या हो...? ले देकर आलू.... आलू की चटनी.... आलू की सब्जी.... आलू का झोल.... कभी भुना हुआ आलू, कभी छाछ आलू का रायता.. .. और तो कुछ तुम्हें अच्छा लगता नहीं.... लगता है तुम्हारी माँ आलू की नादीदी थी ?''

सुनकर मंगतू ने खीसें निपोरी.... ''नहीं ! मेरा मतलब धनिये की सी खसबोई आ रही है इसमें ?''

''अब इसमें डाली हैं दो पत्ती हरे धनिये की तो खसबोई तो आयेगी ही''

''कहाँ से लाई''

''मैं नहीं चरने लाया था, कह रहा था, बापू को आलू के बाद इस दुनिया में कुछ अच्छा लगता है तो वह हरा धनिया है. .. हरे धनिये की तो चाहे सानी कर दो बापू के लिए।'' कहते हुए रमिया ने थाली में दो रोटी रखकर मंगतू को पकड़ा दी।

''नहीं...! मुझे तो दुनिया में सबसे अच्छी तू लगती है'' कहते हुए मंगतू की नजर रमिया की नंगी कमर से उसके भारी नितम्बों तक फिसल रही थी।

रमिया ने आँखें तरेरकर उसे देखा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कड़वा घूँट

''ओ मेरे खसम.... तेरी इन्हीं मीठी-मीठी बातों में आकर तीन छोरे और दो छोरियाँ जन दी हैं तेरे लिये.... अब बस कर मुझ पर डोरे फेंकना, दस दिन रह गये हैं तेरे पूत की शादी को.... कुछ सरम से रह अब''

''सरम से भी रह लूँगा.... पर अभी दस दिन तो हैं न'' कहते हुए हंसा मंगतू, उसने रोटी का कौर मोड़कर कटोरी में डुबोते हुए उसमें सब्जी भरी।

''क्या मतबल ?''

''अब मतबल मुझे क्या पता.... मैं पढ़ा-लिखा थोड़े ही हूँ ? कहकर मुस्कराते हुए मंगतू ने कौर मुँह में ठूँस लिया।

''पर ओ मेरे खसम जी.... मैं तो पढ़ रईहूँ तेरे इन सरारती दीदों में''

''पढ़ रई है, तो फिर पूछ क्यों रई है'' हंसते हुए कहा मंगतू ने

''अपनी ये आसकी छोड़, पहले ये बता ठेकेदार से हुई बात ? सुनकर संजीदा हो गया मंगतू.

''साला रोना रोवै था अपना, कहवै था काम इस्पीड से नहीं चल रहा.... साल में बिल्डिंग कम्पलीट देनी है..... सप्लायर माल प्रॉपर नहीं दे रहा है.... आर्कीटेक्टर कहता है डिजाइन के हिसाब से नहीं बन रहा है... इंसपैक्टर कानून का पक्का है, कहता है, लोहा सरिया एक ग्राम भी कम नहीं चलेगा.. मसाला चार-एक का चाहिए... जब से छब्बीस जनवरी वाला भूकम्प आया है सरकार मल्टीस्टोरी बिल्डिंग रूल्स के मामले में सख्त हो गई है... लेबर ठीक से काम नहीं करती.... मिक्सर मशीन वाला सही-सही मसाला रोलिंग नहीं करता.. माल ढोने वाले तसले में सौ ग्राम माल लेकर चलते हैं.... चिनाई वाले चिनाई कम करते हैं ईंटें ज्यादा तोड़ते हैं''

''ये सब तो जी ठेकेदार का रोज-रोज का रोना है.... पर तुम उसकी सुनने गए थे या अपनी कहने...?''

''हम गरीबों की सुनता कौन है ? सब सुनाते हैं साले हमें. ... कहता है तुम लोगों को शादी करना और बच्चे पैदा करना बस यही काम है.... अब दो महीने पहले सगाई तो हो गई तेरे छोरे की.... शादी साल भर ठहरकर कर लेना.... पहले बिल्डिंग

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

का काम पूरा करो... शादी के झंझट में तीन दिन खराब होंगे. ... फिर हफ्ते भर तेरा बेटा हनीमून बनायेगा... दो-तीन महीने बाद तेरी बहू का पेट फूलने लगेगा.... फिर नौवें महीने बेटी-बेटे के जन्म का जश्न.... कोई भी खुशी की बात हो, सारी की सारी लेबर.... मस्ती में पीकर धुत! तीन-तीन दिन तुम सालों की आँखें नहीं खुलती.... नशा तो तुम लोग टूटने देते ही नहीं, सरूर थोड़ा सा हलका हुआ.. चल देते हो पूंछ उठाकर ठेके की ओर.... तुम्हारा क्या है ? तुम तो नंग हो नंग ही रहोगे.... काम तो मेरा खुटता है, समय पर काम पूरा नहीं हुआ तों पैसा तो मेरा ही कटेगा''

''बहुत कमीन है इस बिल्डिंग का ठेकेदार तो.... हाड़तोड़ काम करते हैं पर इसे तो बेशर्मी मे बात करनी ही है'' रमिया ने चूल्हे में लकड़ी सरकाते हुए आग तेज की

''बहुत ज्यादा कमीन ठेकेदार है ये तो, कहता है काम तुम लोग धेले का करते नहीं... उल्टे सारी लकड़ी-बल्ली चाली जला डाली... प्लास्टिक की परातें तोड़-काटकर मिर्च, लहसुन, नमक खरीद लेते हो रेहड़ी वाले से, लगता है मेरी तो खाल तक बिक जायेगी इस ठेके में''

''छोड़ो जी कम्बख्त की बात... तुम रोटी खाओ''

''और सुन... मैंने कहा हजूर छोरे की शादी कर रहा हूँ उसके लिए अलग झोंपड़ी डालनी है... बहू आयेगी तो कुछ दिन तो छोरे-बहू को एकान्त चाहिए...'' तो भड़क गया, पता है क्या बोला ?''

''क्या जी...?'' रमिया के हाथ आटे की लोई बनाते-बनाते रुक गए

''बोला... मंगतू छोरे का ब्याह कर रहा है तो इसे दो सौ-ढाई गज का एक प्लाट खरीद दे... दुमंजली, तिमंजली कोठी ठोक दे अपने बेटे-बहू के लिए... मेरे यहाँ जगह नहीं है एक और झोंपड़ी के लिए... इतनी सी जगह है आठ झौंपड़े पहले ही बने हैं.... रेता, सीमेंट, बजरी, सरिया क्या मेरे सिर पर डलेगा.... फिर मिक्सर मशीनें, क्रेन, लिफ्टर क्या मेरी छाती पर चलेंगे....? कहता है साला... झोंपडी थोड़े ही बनाते हो तुम

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

लोग... पूरी एक ईंट की चिनाई कर... पक्का-पुख्ता काम करते हो... जालीदार दीवारें नहीं बना सकते.... ताकि ईंटें कम लगें, सारी ईंटें अपना मकान बनाने में ठोक ली, आज सप्लायर ने कुल दो ट्रक ईंट और भेजी हैं उन्हें तुम अपने बेटे-बहू के लिए गैस्ट हाउस में लगा दो.... बिल्डिंग में मेरा हड्डी माँस लगा देना क्योंकि सप्लायर के लिए मेरे पास अब पैसा बचा ही नहीं है''

''ऐसे बोला कम्बख्त बेईमान....'' रमिया ने कहा, ''तुम रोटी खाओ जी चैन मे...., कोई फिकर मत करो... बेटे का ब्याह तो करके दिखाऊँगी मैं'', कहते हुए रमिया ने अपनी छाती पर हाथ मारा... ''और बेटे-बहू के लिए अलग-औसारा भी बनाऊँगी. .. हम इस कम्बख्त के बंधुआ मजदूर हैं क्या? यहाँ नहीं तो कहीं और सही, मजदूरों की बौत डिमाण्ड है आजकल... नवेडा में ओमैक्स की बिल्डिंगें बन रही हैं जहाँ मेरे भैया-भाभी, माँ-बाप हैं.... वे कह भी रहे थे लेबर की जरूरत है यहाँ..... ठेकेदार भी बौत अच्छा है... दिहाड़ी भी यहाँ से पाँच रुपया ज्यादा है.. वहीं चलो जी कल... ये ठेकेदार सम्भाले अपनी धर्मशाला; लिच्चड़ कम्बख्त कहीं का. सरम भी नहीं आती। कहते हुए कि दो-तीन महीने बाद बहू का पेट फूल जाएगा, इसकी अम्मा ने इसको बिना पेट फुलाये पैदा करा होगा... तुम रोटी खाओ जी.... सब ठीक हो जायेगा, जर खरीद गुलाम ना हैं हम इसके''

''वो तो ठीक है रमिया मगर....?''

''अब अगर-मगर क्या जी ?''

''पाँच आदमियों की आठ-आठ दिन की मजूरी तो रोक रखी है इसने... हम जायेंगे तो उसे तो ना देगा ये''

''हाँ..... ये बात तो है....'' कहते हुए रमिया पस्त सी हो गई. ... तब क्या करें जी ?''

''मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता''

''बेटे का ब्याह करना है तो....'' रमिया की आवाज थोड़ी मरी-मरी सी लगी... ''अपना ये चार हजार रुपया.... ठेकेदार के कफन के लिए छोड़ना ही पडेगा''

+ + +

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

और फिर धरमू ने अपना हाथ क्यारी में लगे गुलाब के फूल की ओर बढ़ाया......

"क्या कर रहा है तू !" हैरान सी गुलाबो ने उसका हाथ पकड़ कर वापिस खींच लिया

"फूल तोड़ रहा हूँ और क्या ?"

"और किसी ने देख लिया तो ?"

"तो क्या.... देखने दें" कहते हुए धरमू ने फिर से हाथ बढ़ाया.... गुलाबो ने घबराकर इधर-उधर देखा.... पार्क में सभी अपनी-अपनी मस्ती, बातों और घूमने-फिरने में मस्त थे... और आखिर धरमू ने फूल तोड़ ही लिया

"यहाँ बोरड पे लिखा भी होता है कि फूल नहीं तोड़ना !" गुलाबो ने धरमू के हाथ में फूल देखकर, चौकन्नी सी निगाहों से इधर-उधर देखा।

"तू क्या पढ़ी-लिखी है ?"

"नहीं....! पर पता है मुझे !"

"ज्यादा ज्ञान मत बघार.... इधर आ" कहा धरमू ने और फिर हलका सा पीछे सरककर उस गुलाब के फूल को गुलाबो के बालों में लगाने लगा....

"अब ये क्या कर रहा है तू ?"

"तुझे और भी सुन्दर बना रहा हूँ" धरमू ने हंसते हुए कहा. सुनकर गुलाबो हलके से शर्माई. उसने धरमू का हाथ पकड़ लिया

"रहने दे धरमू ? देख तू बेकार ही कोशिश कर रहा है"

"तेरे बालों में फूल लगा देने से तो तू मेरी लुगाई बनने से रही.... उसके लिए तो तुझे मेरे साथ फेरे लेने होंगे..."

"लगा दें फिर...लें" कहा गुलाबो ने और अपना सिर पीछे की ओर कर दिया... "पर देख... तू बेकार जिद कर रहा है, तेरी-मेरी निभेगी नहीं...."

"तू निभाने की कोशिश करेगी... ना क्यों नहीं निभेगी?", धरमू ने तर्क दिया

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तेरी–मेरी नई निमणी

''औरत तो हरदम निभाने की कोशिश करती है पर फिर भी आदमी औरत के काम में मीन-मेख निकालता है, चिक-चिक करता है''

''पर ये तो हर आदमी की बात है न... मेरे अकेले की इसमें क्या गलती ? अब पूरी मरद जात की गलती की सजा तू मुझ अकेले को क्यों दे रही है ?

''अच्छा तू कोई और बात कर !''

''क्या बात करूँ....? अभी पहली बात तो पूरी कर....!''

''पहली बात पूरी तो हो गई.... तेरी-मेरी निभेगी नहीं'' कहते हुए वह पार्क की घास से खेल रही थी

''पर निभाना तो तेरा काम है न ?'' धरमू ने उसका हाथ पकड़ा, उसने नजर उठाकर धरमू की ओर देखा, फिर अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश करने लगी...

''तेरी अम्मा बता रही थी.. तू मिर्च बहुत कम खाता है'' कहते हुए गुलाबो ने अपना हाथ छुड़ा लिया था, ''चटनी में थोड़ी सी भी ज्यादा मिर्च हो जाये तो तुझे पसीना आने लगता है'' गुलाबो ने हंसकर कहा।

''हाँ.... मुझसे नहीं खाई जाती ज्यादा मिर्च वाली चटनी!''

''तब तो अगर किसी दिन चटनी में मुझसे ज्यादा मिर्च डल गई तो तू मुझे मारेगा ?'' कहते हुए गुलाबो ने उसकी आँखों में देखा,

धरमू खीसें निपोरते हुए हँसा

''एक दो बार तो माफ कर दूँगा.... मगर....?''

''मैं कोई हर बार गल्ती थोड़े ही करूँगी...'' गुलाबो ने कहा, फिर सिर झुका लिया... पार्क की घास को बेरहमी से उखाड़ने लगी, ''वैसे भी गलती करूँगी तो रोज-रोज पिट भी लूँगी... मगर...!''

''मगर क्या....? धरमू ने आँखों में सवाल लिए गुलाबो की ओर देखा''

''मगर... कुछ नहीं... बस तेरी-मेरी निभेगी ही नहीं''

''तू रोज-रोज पिटने को भी तैयार है... फिर भी क्यों नहीं निभेगी... देख तू ज्यादा सोच मत... मैं... मैं तो प्यार भी बहुत

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

करूँगा तुझसे..''

सुनकर गुलाबो का शरीर रोमांचित सा हुआ था, धरमू ने एक बार फिर गुलाबो का हाथ अपने हाथों में ले लिया था

''तेरे होठों को और भी लाल करने के लिए वो वाली लाली लाकर दूँगा जो कोठियों वाली मेमसाहब लोग लगाती हैं...''

''हिस्ट....!'' कहते हुए गुलाबो लाज से दोहरी हो गई।

''हिस्ट क्या ?.... सच... और भी, जिस रंग की तू कहे''

''ना बाबा ना... वो तो बहुत महंगी आयेगी ?''

''कितनी भी महंगी हो...? परवाह नहीं''

''अजी हाँ.... उस दिन तुझसे जलेबी के लिए कहा... तो तू बोला ''देख आज नहीं गुलाबो... आज जेब में दो ही रूपये हैं. . फिर कभी पेट भर कर जलेबी खिलाउँगा....'' गुलाबो मुँह विचकाकर बोली ''तेरे तो न्योते हुए ब्राह्मण भी भूखे मर जाय. .. आज तक लाता है तू जलेबी... आडर देकर आया होगा, पीछे ट्रक में आ रही होंगी और उस दिन वो रसगुल्ले लाया. .. खारी, मीठे-खट्टे, कड़वे की बात तो पता नहीं.. पर हींग और लहसुन की खसबोई आ रही थी उनमें....'' गुलाबो ने ताना मारते हुए हंसकर धरमू की ओर देखा, ''अब जीरे के स्वाद वाली लिपस्टिक लायेगा तू ?''

सुनकर धरमू ने एक बार फिर खीसें निपोरी

''तू तीन महीने पहले की बात अभी तक पकड़कर बैठी है. .. तुझे बताया तो था मैंने कि...''

''अच्छा छोड़ सारी बात... देख सामने पापड़ वाला है... खाये तो लाउँ ?'' धरमू ने दूर खड़े पापड़ वाले की ओर इशारा करके कहा

''तू मुझे एक रूपये का पापड़ खिला या दो रूपये वाली कुल्फी... पर...?''

''फिर वही...? तू लड़की है कि क्या...?'' झल्ला गया धरमू

''ऐ धरमू....! मै लड़की हूँ तो क्या...,तेरे पटाये में आ जाउँ ?''

''नहीं.... मेरा मतलब... तू समझती क्यों नहीं ?''

''समझता तो तू नहीं है... जा रही हूँ मैं !'' कहते हुए वह

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

झटके से उठी... "बगीचे में से गुलाब का फूल तोड़कर बालों में लगा दिया... दस रूपये वाली लिपस्टिक लायेगा... जिसे कभी लगा भी नहीं पाउँगी... तेरी अम्मा देखेगी तो कलेस उठा देगी घर में... कहेगी .. देख ! कैसी उड़ रही है वहू... ये मेरे बेटे का घर बसाने आई है या घर उजाड़ने...."

"ऐ गुलावो...., तू... तू गरम क्यों होती है....? बैठ तो", धरमू ने खड़े होकर उसके दोनों कन्धे पकड़ लिये. गुलाबो ने घबराकर आसपास देखा..

"बैठती हूँ.. पहले कन्धे छोड़... निर्लज्ज कहीं का... कोई देखेगा तो..?"

घबराकर इधर-उधर देखते हुए धरमू ने उसके कन्धों को छोड़ दिया... वह बैठ गई दोबारा घास पर. धरमू भी उसके सामने बैठ गया.

"रात में लगाना न..." लगभग फुसफुसाते हुए बोला धरमू

"क्या ?..... रात में...? रात में कौन देखेगा...?

"मैं देखूँगा और कौन देखेगा ?" सुनकर गुलाबो रोमांचित सिहर सी गई

"देख धरमू.... ऐसी बात मत कर न.... साफ बात है मुझे घूंघट में रहने की आदत नहीं है और तेरी अम्मा तो पूरे दिन मुझे घूंघट में रखेगी..?"

"मैं.... मैं.. बात करूँगा अम्मा से..."

"मानेगी नहीं वो... बहुत ठसकदार औरत है, इतनी बूढ़ी हो गई... फिर भी अभी तक... खुद भी इतना लम्बा घूंघट काढ़ती है"

"तू समझा कर गुलाबो.... ससुर-जेठ-देवरों वाला कुनबा है"

"पर मैं तो नहीं !"

"मेरी छोड़.... तू कहीं भी जायेगी न... घूंघट तो तुझे करना ही पड़ेगा"

"जबरदस्ती है क्या... आदमी चन्दरमा पर चला गया है और औरत घूंघट में...?"

"अब कहाँ की बात कहाँ जोड़ रही है तू... और फिर वो तो अमरीका वाले कहते हैं न... पता नहीं क्या सच ? क्या झूठ ? तूने भी नहीं देखा और मैंने भी नहीं देखा... और फिर ये सब

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बड़े आदमियों की बातें हैं. हमें तो धरती पर ही रहना है... अब धरती पर रहने के कायदे तो यही है कि आदमी कस्सी चलाये और औरत टोकरी में माल ढोये''

''पर धरमू... ये घूंघट......?'' कुछ परेशान सी होकर कहा गुलाबो ने

''अब तू औरत है.. तो इसमें मैं क्या करूँ ? पुराने जमाने में बुजुर्गों ने कुछ न कुछ सोचकर ही औरत के लिए घूंघट जरूरी किया.... हम अज्ञानी क्या जानें क्यों ?''

''हूँ... ये बात तो है... लेकिन धरमू घूंघट तो...?''

''देख गुलाबो... किसी कार-कोठी वाले से ब्याह करेगी. तब तो घूंघट से मुक्ति मिल सकती है तुझे... वरना तो...?''

''सो तो है... धरमू औरत की जिंदगी तो सदा से ही मुशकिल रही है... घूँघट में रहकर घर में ही सड़ते रहो... काम. ... बरतन मांजना... खाना बनाना.... कपड़े धोना... बच्चे पालना. ... आदमी के पाँव दबाओ. मगर धरमू.... बड़े घरों की औरतों को कम से कम घूंघट तो नहीं करना पड़ता...।''

''हाँ पर.... जैसे बड़े आदमियों की बड़ी मुसीबतें वैसे ही औरतों के साथ भी होता होगा....''

''छोड़ इस बात को... धरमू तू कोई और बात कर'' कहते हुए गुलाबो के स्वर में एक टीस थी जिससे उबरने की कोशिश के लिए वह धरमू की ओर देखने लगी

''एक बात पूछूँ ?''

''पूछ न''

''तू शादी के बाद क्या कहा करेगी मुझसे ?''

सुनकर गुलाबो हैरान थी... उसकी आँखें हलके से तन गई थी

''जब मैंने तुझसे कह दिया....?''

''तूने कहा तो मैंने भी सुन लिया...'' झुंझला गया था धरमू. .. ''तू कहती है तेरी-मेरी नहीं निभेगी.. मगर अगर तेरी मेरी शादी हो गई तो क्या तू तब नहीं निभायेगी मुझसे?''

''तब तो निभाना ही पड़ेगा...'' गुलाबो ने सिर झुकाते हुए कहा था

''नहीं.... तब [illegible] मुझे!''

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

धरमू ने ताना सा दिया था

"ऐ धरमू.... ऐसी नहीं हूँ मैं... भारत की नारी हूँ....!" गुलाबो ने दृढ़ता से कहा था

"अरे तो मैं तभी की तो वात पूछ रहा हूँ..."

"क्या पूछ रहा है...?"

"यही कि शादी के वाद... तू मुझसे क्या कहा करेगी...?"

सुनकर वह शर्मा गई... हलके से हंसी

"धत....!"

"धत क्या....? बता ना !"

"खसम कहूँगी.... और क्या" कहते हुए वह लाज से दोहरी थी

"नहीं.... प्यार से क्या कहा करेगी ?"

"ओ.... हो.... अव प्यार से भी तो तू मेरा खसम ही लगेगा न?"

गुलावो ने आँखें झुकाते हुए कहा... कुछ परेशान सा हुआ धरमू

"तू समझने की कोशिश ही नहीं करती मेरी वात को" कहते हुए वह कुछ मायूस सा था. उसकी मायूस सी हालत देखकर गुलाबो को जैसे उस पर दया सी आई... वह मुस्कराई

"मैं कह लूगी जो भी कहना हो... तू क्यों फिकर करता है ... अव कहना तो मुझे होगा न ?"

"फिर भी कुछ तो सोचा होगा तूने" धरमू अपनी हिलोरे लेने वाली प्यार की मानसिक स्थिति में दोबारा से लौट आया था

"सोच रखा है मैंने !"

"क्या ? एक बार कह न !" धरमू प्यार में वह रहा था

"अभी...!"

"अभी कह न एक वार ?"

"पर अभी तू मेरा खसम थोड़े ही है ?"

"होने वाला तो हूँ न !"

सुनकर गुलाबो ने उसके चेहरे की ओर देखा. अपने भीतर की रोमांचकता और धरमू की याचक भरी स्थिति को सोचते हुए गुलाबो की इच्छा उससे और खेलने की हुई

"जव हो जायेगा... तव कहूँगी"

सुनकर पस्त हो गया धरमू

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

''जैसी तेरी मर्जी.... अब तुझ पर मैं.. अपनी मर्जी ज्यादा चला भी तो नहीं सकता... बड़ी मुशकिल से तो तू राजी हुई है''

''क्या....?'' चकित होकर कहा गुलाबो ने ''मैंने ऐसा कब कहा ?''

''तो कह दे न....?''

''नहीं धरमू....., देख.. नहीं निभेगी तेरी-मेरी... पल दो पल की बात नहीं है... जिन्दगी भर की गाँठ होती है मर्द-बईअर की... और फिर अकेले मरद मे ही तो नहीं निभाना पड़ता औरत को... सभी रिश्ते..., नाते, नियम-कायदे, पिरथा-रिवाज, समबंध, धर्म, मर्यादा, पहरे, सेवा-ममता सब कुछ....''

''तू तो ऐसे कह रही है जैसे ये सब निभाने वाली... तू दुनियाँ की पहली औरत होगी....'' कहते हुए उठा धरमू ''तू दुनियाँ की पहली औरत है जो पहले से ही हिम्मत हारती है''

उसके स्वर में निराशा, झल्लाहट स्पष्ट दिखाई दे रहे थे

''पर धरमू... तेरी अम्मा भी तो ?''

''मेरी अम्मा क्या अब ?''

''उसे किसी का किया काम पसंद नहीं आता... सब कुछ अपने हाथ से करना अच्छा लगता है उसे... तेरी भाभी बता रही थी... कि बीबी नाक में दम किये रहती है, कहती है बरतन सही ढंग से नही मांजती, बरतनों में चिकनाई अभी तक लगी है... कभी कहती है कपड़े धोना नहीं सीखा माँ के यहाँ... तुझसे कपड़े साफ नहीं धुलते... दाग तो वैसे के वैसे ही बने रहते हैं. .. और चूल्हे के उपर तो रोज की चिक-चिक, कहती है आग जलने के लिए तो जगह ही नहीं छोड़ी चूल्हे में... इतनी लकड़ियाँ ठोक दी... मुफ्त ईंधन तेरे बाप के यहाँ आता होगा. ! कभी कहेगी, मक्खी सी मारती रहती है... हाथों में जरा भी फुर्ती नहीं है, मरा मूसा भी तुझसे ज्यादा फुर्ती दिखाए... काम जल्दी करो... तो कहेगी . इतना जल्दी-जल्दी करती है तभी तो कोई काम सही नहीं होता... पर जल्दी-जल्दी काम निपटा कर . लोग के पास जा बड़ने की लगी रहती है... सच बीबी... इस सास के मारे तो मेरी साँस रूकी रहती है, हर बखत.... और लोग मेरा ऐसा कि होश आते ही ठेके की ओर चल देता है

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कुछ कहूँ तो मारे-पीटे. कभी-कभी सोचूँ ऐसे लोग. ऐसे परिवार के साथ में मैं रह क्यों रही हूँ... उपर से इतना लम्बा घूंघट.. उसके भीतर वहू खुशी है कि दुखी, दर्द में है कि टीस में, मुस्करा रही है कि रो रही है... किसी को कुछ ना दिक्खे. .. और मैं ही क्या... किसी भी औरत के लिए किसी के हिये में कोई मोह-ममता ना है. सास-ससुर हो, देवर-जेठ हो चाहे अपना आदमी हो..! सीता मैय्या के तो बड़े भाग रहे, पर अपने भाग की धरती कव फटेगी... पता नहीं...'' कहते हुए चुप हो गई गुलावो... और धरमू देख रहा था चुपचाप उसे

वह शांत सा बैठ गया घास पर सिर झुकाए, घास को मसलता हुआ सोच रहा था वह... और गुलावो देखती रही उसे, धरमू ने लम्बी सी... ठण्डी साँस भरी

''गुलावो तू ठीक कहती है... तेरी-मेरी निभेगी नहीं... और मुझे ऐसा लगता है कि हजारों सालों से मरद शादी करके औरत को अपने घर में जरूर डालता आया है और फिर पूरी जिन्दगी एक छत के नीचे, वो मरद के साथ रहती भी रही है, सुख-दुख, धरम-करम, कायदे-कानून सब जिये-भोगे, बच्चे पैदा करे.... पाले ..; मार. डाँट... दुत्कार.... जैसे भी जिया गया. जी ली.. पर उसकी आदमी के साथ कभी निभी नहीं... क्योंकि निभाने की कोशिश आदमी ने तो कभी की ही नहीं। आदमी से निभाना औरत की ही जिम्मेदारी और सुभाव बनता चला गया''

सुनते हुए चकित थी गुलावो और वह कह रहा था

''और बेसक... बेसक से तेरी मेरी शादी हो भी गई... तो भी तेरी मेरी निभेगी नहीं...''

गुलावो देख रही थी धरमू की आँखों में अपने लिए एक आदर-सम्मान वाली जगह... उसका हाथ घास पर टिके धरमू के हाथ की ओर सरकने लगा था... धरमू ने उसके सरकते हाथ की ओर देखा बोला- ''अच्छी तरह सोच ले पहले. तेरी-मेरी निभेगी नही ..!''

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri